नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/864
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 303, नई दिल्ली, शुक्रवार 02 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता के लिए पाँच आवश्यक उद्यमशीलता कौशल : एकाग्रता, भेदभाव, संगठन, नवाचार और संचार।

03 बगलामुखी परिचय एवं साधना नियम
06 कहानी में एक मोड़: क्या वैज्ञानिक डार्क एनर्जी के बारे में गलत हैं?
08 खरसावां गोलीकांड के शहीदों को श्रद्धांजलि देने मुख्यमंत्री हेमंत पहुंचे शहीद पार्क

निजी बसों से डीटीसी कर्मचारियों के भविष्य पर चिंता

8000 चालक काम न होने से अन्य कार्यों में लगे कर्मचारियों की मांग: डीटीसी अपनी बसें चलाए

डीटीसी कर्मचारी निजी कंपनियों की ओर से लाई जा रहीं बसों से अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं। वे मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से डीटीसी द्वारा अपनी बसें चलाने की मांग कर रहे हैं। कर्मचारियों का कहना है कि निजी कंपनियों के माध्यम से बसें चलाने से डीटीसी और कर्मचारियों का भला नहीं होगा। 8000 चालक काम न होने से अन्य कार्यों में लगे हैं, जिससे उनकी नौकरी पर खतरा मंडरा रहा है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। डीटीसी में प्राइवेट कंपनियों की ओर से बसें लाई जाती रहीं तो डीटीसी के कर्मचारियों को रोजगार कैसे मिलेगा? डीटीसी कर्मचारियों को अपने भविष्य को लेकर यह चिंता सता रही है। दिल्ली सरकार ने कुछ दिन पहले डिम्ट्स की बसों को डीटीसी को सौंपने का फैसला लिया है। इसके बाद से कर्मचारियों की मांग तेज हो गई है।

कर्मचारियों ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से मांग की है कि सरकार निजी कंपनियों की जगह अपनी बसें लेकर आए। उनकी मानें तो कंपनियों के माध्यम से बसें चलाने से न ही डीटीसी और न ही कर्मचारियों का भला होने वाला है।

काम न होने से डीटीसी में इस समय 8000 के करीब चालक बसें न चलाकर अन्य काम में लगाए गए हैं। इन कर्मचारियों को डर यह सता रहा है कि अगर डीटीसी अपनी बसें लेकर नहीं आती है तो उनकी नौकरी ज्यादा दिन चल पाएगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

पिछले कुछ सालों की स्थिति का आंकलन करें तो 2025 ऐसा साल रहा है जब दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) में एक साल में ही 5000 से अधिक बस

चालकों के पास बस चलाने का काम काम नहीं रहा। दरअसल उम्र पूरी होने के कारण इस साल डीटीसी की 2500 से अधिक बसें सड़कों से हट गई हैं। ये बसें डीटीसी स्वयं चला रही थी।

इन पर 5000 के करीब चालक लगे हुए थे। डीटीसी ने चालकों को बस चलाने की जगह बसों में टिकट जांच आदि काम में लगा रखा है। उधर इस साल डीटीसी में 1400 के करीब नई इलेक्ट्रिक बसें आई हुई हैं। मगर अधिकतर बसें कंपनियों के माध्यम से आई हैं। जिन पर डीटीसी का केवल कंडक्टर होता है चालक कंपनियों के अपने हैं।

दरअसल पूर्व की आप की सरकार के समय में शुरू की गई इस योजना के तहत सरकार के फैसले के तहत जो व्यवस्था है उसमें प्राइवेट कंपनियां किलोमीटर स्कीम के तहत इलेक्ट्रिक बसें चला रही हैं, उनमें कंडक्टर केवल डीटीसी का है और अन्य सभी व्यवस्थाएं कंपनियां अपने आप देख नहीं हैं। डीटीसी प्रति किलोमीटर के हिसाब से कंपनियों को भुगतान करती है।

डीटीसी में इस समय लगभग 25 हजार अनुबंधित कर्मचारी हैं और लगभग सात 7 हजार पक्के कर्मचारी हैं। इनमें कुल मिलाकर 8000 के करीब चालक हैं। चालकों में 4500 के करीब अनुबंधित और 3500 के करीब स्थायी हैं।

जानकारों की मानें तो डीटीसी में इस समय करीब 700 बसें हैं। इन पर ही डीटीसी के अपने चालक भी हैं। डीटीसी के कर्मचारियों का कहना है कि क्लस्टर सेवा के तहत नई आईं देवी बसों में कुछ डिपो में कंडक्टर भी निजी कंपनियों के हैं। इन हालातों को लेकर स्थाई और अनुबंधित दोनों तरह के कर्मचारी परेशान हैं।

डीटीसी कर्मचारी एकता यूनियन ने डीटीसी में आ रहीं प्राइवेट कंपनी की बसों का कड़ा विरोध किया है। यूनियन का कहना है कि इन बसों में कम वेतन पर कंपनियों ने अपने चालक रखे हुए हैं। यूनियम के अध्यक्ष ललित चौधरी और महामंत्री मनोज शर्मा कहते हैं कि प्राइवेट कंपनियों के कई चालक कम अनुभवी हैं, यह एक मुद्दा है, मगर सबसे बड़ा मुद्दा है कि डीटीसी में प्राइवेट कंपनियों के माध्यम से बसें आएंगी तो डीटीसी के कर्मचारियों का भविष्य कैसे सुरक्षित बचेगा।

इनकी मांग है कि डीटीसी अपनी बसें लाए और अंतरराज्यीय स्तर पर भी चलाए, इससे सरकार और डीटीसी को बहुत मुनाफा भी होगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि सीएम रेखा गुप्ता जरूर उनकी मांग पर संज्ञान लेंगी। वहीं डीटीसी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि डीटीसी ने बसें कम होने के बाद भी किसी कर्मचारी को काम से नहीं हटाया है। चालकों को भी काम दिया हुआ है।

नए साल में फास्ट टैग यूजर्स को बडी राहत...

राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) ने 1 फरवरी 2026 से नए FASTag के लिए अनिवार्य KYV प्रक्रिया समाप्त करने का निर्णय लिया है। यह कदम कार, जीप और वैन चालकों को राहत देगा, जिससे एक्टिवेशन के बाद होने वाली परेशानी कम होगी। मौजूदा FASTag पर भी अब नियमित KYV की आवश्यकता नहीं होगी, सिवाय कुछ विशेष मामलों के। NHAI ने VAHAN पोर्टल के माध्यम से प्री-एक्टिवेशन सत्यापन को मजबूत किया है, जिससे FASTag प्रणाली अधिक सरल और पारदर्शी बनेगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) ने आम वाहन चालकों को बड़ी राहत देते हुए कार, जीप और वैन के लिए जारी किए जाने वाले नए FASTag पर लागू अनिवार्य Know Your Vehicle (KYV) प्रक्रिया को 1 फरवरी 2026 से समाप्त करने का फैसला किया है। इस निर्णय का उद्देश्य FASTag एक्टिवेशन के बाद वाहन चालकों को होने वाली परेशानी और अनावश्यक उत्पीड़न को खत्म करना है। एनएचएआई ने बुधवार को जारी बयान में कहा कि इस सुधार से लाखों लोगों को राहत मिलेगी, जिन्हें वैध वाहन दस्तावेज होने के बावजूद FASTag जारी होने के बाद KYV प्रक्रिया के कारण देरी और असुविधा का सामना करना पड़ रहा था।

प्राधिकरण ने स्पष्ट किया कि पहले से कारों के लिए जारी किए गए FASTag पर भी अब नियमित रूप से KYV कराना अनिवार्य नहीं होगा। हालांकि, कुछ विशेष मामलों में ही KYV की जरूरत पड़ेगी। इनमें FASTag के ढीले होने, गलत तरीके से जारी होने या दुरुपयोग से संबंधित शिकायतें शामिल हैं। एनएचएआई के अनुसार, यदि FASTag से जुड़ी कोई शिकायत प्राप्त नहीं होती है, तो मौजूदा कार FASTag पर KYV प्रक्रिया लागू नहीं की जाएगी। इसके साथ ही, एनएचएआई ने FASTag जारी करने वाली बैंकों के लिए प्री-एक्टिवेशन वैलिडेशन प्रक्रिया को और मजबूत किया है।

अब FASTag को सक्रिय करने से पहले VAHAN पोर्टल के माध्यम से वाहन का अनिवार्य सत्यापन किया जाएगा, ताकि भविष्य में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी को रोका जा सके। एनएचएआई का कहना है कि यह कदम FASTag प्रणाली को अधिक सरल, पारदर्शी और उपयोगकर्ता-अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण सुधार है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : साइबर अपराध रुझानों और नवीनतम तकनीकों से अवगत रहना / कराना चाहिए ताकि वे स्वयं को सुरक्षित रख सकें

पिंकी कुंडू

मंगलवार, 30 दिसम्बर 2025 को श्री मधुप तिवारी, आईपीएस, विशेष पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था ज़ोन II, दिल्ली पुलिस) ने दिल्ली पुलिस के प्रमुख कार्यक्रम "ऑपरेशन विश्वास" के दौरान मीडिया को संबोधित किया। इस कार्यक्रम में खोए और चोरी हुए मोबाइल फ़ोन उनके वास्तविक मालिकों को वापस सौंपे गए।

उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि साइबर अपराध लगातार बदल रहा है और नागरिकों को नए तरीकों से अवगत कराने के लिए नियमित जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है। संदेश स्पष्ट है: नागरिकों को नए साइबर अपराध रुझानों और नवीनतम तकनीकों से अवगत कराना चाहिए ताकि वे स्वयं को सुरक्षित रख सकें।

जैसे CEIR.GOV.IN पोर्टल ने खोए और चोरी हुए मोबाइल फ़ोन खोजने का तरीका बदल दिया है, वैसे ही www.sancharsaathi.gov.in साइबर धोखाधड़ी रिपोर्टिंग में एक मील का पत्थर साबित होगा। Sanchar Saathi के माध्यम से Financial Fraud Risk Indicator (FRI) का उपयोग एक सच्चा गेमचेंजर बन सकता है।

FRI की शक्ति का उपयोग

नए वर्ष की शुरुआत में हमें FRI की परिवर्तनकारी शक्ति को पहचानना होगा – यह साइबर धोखाधड़ी के विरुद्ध एक निर्णायक हथियार है।

- नागरिक www.sancharsaathi.gov.in के माध्यम से FRI से जुड़ सकते हैं।
- 22 मई 2025 को शुरू होने के बाद, केवल छह महीनों में FRI ने ₹660 करोड़ की साइबर धोखाधड़ी हानि को रोका है।
- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी बैंक, सहकारी बैंक, TPAPs और अन्य वित्तीय संस्थानों ने रिपोर्ट किया है कि संदिग्ध लेनदेन को FRI के माध्यम से Digital Intelligence Platform (DIP) पर या तो अस्वीकार कर दिया गया या चेतावनी जारी की गई।

Financial Fraud Risk Indicator (FRI) के बारे में

- FRI एक जोखिम आधारित मीट्रिक है जो संदिग्ध मोबाइल नंबरों को मध्यम, उच्च या अत्यधिक उच्च जोखिम श्रेणी में वर्गीकृत करता है।
- यह कई हितधारकों से प्राप्त इनपुट पर आधारित है:
  - o NCRP (राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल, I4C)
  - o DoT का चक्षु प्लेटफ़ॉर्म
  - o बैंक, वित्तीय संस्थान और दूरसंचार सेवा प्रदाता (TSPs)
- यह बैंकों, NBFCs और UPI सेवा प्रदाताओं को अतिरिक्त सुरक्षा उपाय अपनाने में सक्षम बनाता है जब कोई मोबाइल नंबर संदिग्ध पाया जाता है।

Sanchar Saathi पहल के बारे में

Sanchar Saathi दूरसंचार विभाग (DoT) की नागरिक केंद्रित पहल है, जिसका उद्देश्य मोबाइल ग्राहकों को सशक्त बनाना, सुरक्षा को मजबूत करना और जागरूकता फैलाना है। यह मोबाइल ऐप और वेब पोर्टल दोनों रूपों में उपलब्ध है। इसकी प्रमुख सेवाएँ हैं:

- चक्षु – संदिग्ध कॉल/एसएमएस तुरंत रिपोर्ट करें।
- अपने मोबाइल कनेक्शन जानें – अनधिकृत नंबरों की पहचान और हटाएँ।
- खोए/चोरी हुए उपकरण ब्लॉक करें – मोबाइल को जल्दी ट्रेस और रिकवर करें।
- हैंडसेट की वास्तविकता जाँचें – खरीद से पहले असली/नकली की पुष्टि करें।
- विश्वसनीय संपर्क विवरण – बैंकों और वित्तीय संस्थानों के सत्यापित संपर्क देखें।

Sanchar Saathi ऐप डाउनलोड करें:

- Android
- iOS

Digital Intelligence Platform (DIP) के बारे में

Digital Intelligence Platform (DIP) DoT द्वारा विकसित एक सुरक्षित ऑनलाइन प्रणाली है, जो दूरसंचार संसाधनों के दुरुपयोग से संबंधित जानकारी को विभिन्न हितधारकों के बीच साझा करती है। यह 1050+ संगठनों को जोड़ता है, जिनमें शामिल हैं:

- केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियाँ
- 36 राज्य/केंद्र शासित प्रदेश पुलिस बल
- I4C, GSTN, UIDAI, CBDT, PFMS, MORTH
- बैंक, वित्तीय संस्थान, TSPs
- सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे WhatsApp

संकल्प

नए वर्ष 2026 का स्वागत करते हुए, आइए संकल्प लें:

- Sanchar Saathi के माध्यम से FRI को व्यापक रूप से अपनाएँ।
- बदलते साइबर खतरों के प्रति सतर्क रहें।
- नागरिकों को जागरूक करें और डिजिटल सुरक्षा उपकरणों का सक्रिय उपयोग करें।

मिलकर हम FRI को एक राष्ट्रीय सफलता की कहानी बना सकते हैं और लाखों नागरिकों को वित्तीय धोखाधड़ी से बचा सकते हैं।

जनकल्याण परिवहन सीरीज़: राष्ट्र की सड़कों पर जनस्वास्थ्य की आवाज़

(लेखक: संजय कुमार बाठला)

भाग 1: मिलावट का ट्रैफिक – भोजन से ईंधन तक विष का सफर

मुख्य विचार:

भोजन ही नहीं, बल्कि ईंधन और ऑटोमोबाइल उद्योग में भी मिलावट की प्रवृत्ति खतरनाक रूप से बढ़ रही है। नकली या निम्न-गुणवत्ता वाले पेट्रोल, डीजल और ल्यूब्रिकेंट्स न केवल इंजन को नुकसान पहुँचाते हैं, बल्कि वातावरण में ज़हरीले प्रदूषक छोड़ते हैं।

संदेश:

ईंधन गुणवत्ता नियंत्रण, BIS मानक, और निरीक्षण प्रणाली की सख्ती ही मिलावट की जड़ों पर प्रहार करेगी।

भाग 2: धुआँ और सांस – वाहन प्रदूषण से बढ़ता सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट

मुख्य विचार:

दिल्ली सहित भारत के प्रमुख शहरों में वाहन प्रदूषण फेफड़ों, हृदय और मस्तिष्क संबंधी बीमारियों का सबसे बड़ा कारण बनता जा रहा है।

संदेश:

स्वच्छ ईंधन नीति, इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन, और सार्वजनिक परिवहन की मजबूती जनस्वास्थ्य की बुनियाद है। नागरिक का जिम्मेदार व्यवहार—जैसे नियमित वाहन जांच और साझा सफर—भी बदलाव ला सकता है।

भाग 3: सड़कें या रणभूमि – सुरक्षा में लापरवाही की कीमत

मुख्य विचार:

भारत में हर वर्ष लगभग 1.5 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवाते हैं। दोष सिर्फ सड़कों का नहीं, बल्कि हमारी मानसिकता, अधूरी व्यवस्था और ट्रैफिक अनुशासन की कमी का भी है।

संदेश:

सड़क सुरक्षा केवल नीति नहीं, यह आचरण का प्रश्न है। हेलमेट, सीट बेल्ट, और औपचारिक ड्राइविंग शिक्षा—यही जीवनरक्षक राष्ट्रभक्ति है।

भाग 4: परिवहन और जनस्वास्थ्य – हर सांस की कीमत

मुख्य विचार:

प्रदूषित हवा सिर्फ पर्यावरणीय नहीं, बल्कि चिकित्सा आपदा (Public Health Disaster) बन चुकी है। बच्चे, बुजुर्ग और यात्री सबसे अधिक प्रभावित हैं।

संदेश:

समय आ गया है कि परिवहन व्यवस्था को स्वास्थ्य नीति का हिस्सा माना जाए। "क्लीन ट्रांसपोर्ट, हेल्दी सिटीज़" अब केवल नारा नहीं, राष्ट्रीय जननीति बने।

भाग 5: नैतिकता की गाड़ी – नागरिक ही असली चालक

मुख्य विचार:

कानून और नीतियाँ अपनी जगह हैं, पर नैतिकता और जिम्मेदारी ही बदलाव का इंजन हैं। नागरिक व्यवहार में ईमानदारी, दूसरों की सुरक्षा का सम्मान और जिम्मेदार उपभोग ही मिलावट-मुक्त भारत का रास्ता दिखाएँगे।

संदेश:

सच्ची देशभक्ति वही है, जो अपने कर्तव्य से राष्ट्र और मानवता—दोनों की रक्षा करे।

(श्रृंखला निष्कर्ष): परिवहन केवल गति नहीं, बल्कि जनजीवन की धड़कन है। यदि इस धड़कन में ईंधन, वायु, और नैतिकता की शुद्धता बनी रहे—तो राष्ट्र का शरीर स्वस्थ और आत्मा सशक्त रहेगी। यही सच्चा "परिवहन में जनकल्याण" होगा।

एक राष्ट्रीय जनसंदेश : "जनकल्याण परिवहन सीरीज़" के पाँचों भागों का जनहित - जनकल्याण – जनसूचना दृष्टिकोण से सामूहिक निष्कर्ष

जनकल्याण परिवहन सीरीज़: राष्ट्र की सड़कों पर जनस्वास्थ्य की आवाज़ — निष्कर्ष व अर्थ

(लेखक: संजय कुमार बाठला)

परिवहन विशेष, हिंदी दैनिक (आरएनआई मान्यता प्राप्त)

***प्रस्तावना:** सड़कें राष्ट्र का दर्पण हैं, भारत की सड़कें केवल यातायात की धमनियाँ नहीं, बल्कि राष्ट्र की नीतियों, नागरिकता और चेतना का प्रतिबिंब हैं।

मोटर वाहन, प्रदूषण नियंत्रण, ईंधन की गुणवत्ता या सड़क सुरक्षा — ये सब मुद्दे अलग-अलग नहीं, बल्कि जनजीवन का एक सतत प्रवाह हैं।

"जनकल्याण परिवहन सीरीज़" इसी प्रवाह की पड़ताल करती है — वहाँ जहाँ सुविधा और जीवन, गति और स्वास्थ्य, कानून और नैतिकता एक साथ खड़े होते हैं।

भाग - दर - भाग जनहित

अर्थभाग 1 — मिलावट का ट्रैफिक: भोजन से ईंधन तक विष का सफर यह भाग केवल रासायनिक नहीं, बल्कि नैतिक चेतावनी है। जिस तरह खाने में मिलावट शरीर को बीमार करती है, वैसे ही ईंधन में मिलावट राष्ट्र की गति को प्रदूषित करती है।

जनसूचना संदेश: ईंधन गुणवत्ता की जाँच करना और रिपोर्ट करना नागरिक अधिकार और जनहित कर्तव्य दोनों हैं।

भाग 2 — धुआँ और सांस: वाहन प्रदूषण का सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट यह कड़ी हमें याद दिलाती है कि हर इंजन की चिमनी, हर एग्ज़ॉस्ट पाइप से उठता धुआँ हमारी सांस में प्रवेश करता है। वाहन केवल सवारी नहीं, बल्कि वायु की गुणवत्ता का निर्धारक हैं।

जनकल्याण संदेश: स्वच्छ ईंधन, EV नीति और साझा सफर को अपनाना स्वास्थ्य सुरक्षा का विस्तार है।

भाग 3 — सड़कें या रणभूमि: सुरक्षा में लापरवाही की कीमत तीसरा भाग हमें आँकड़ों और अंतरात्मा दोनों से झकझोरता है — 1.75 लाख सड़क मौतें केवल दुर्घटनाएँ नहीं, यह प्रशासनिक शिथिलता और सामाजिक असंवेदनशीलता की कीमत हैं।

जनहित चेतावनी: एक हेलमेट, एक बेल्ट या एक सिग्नल पर रुकना — हर जीवन बचाने की संभावना है। सड़क सुरक्षा कानूनी आदेश नहीं, नैतिक आदेश है।

भाग 4 — परिवहन और जनस्वास्थ्य: हर सांस की कीमत यह हिस्सा परिवहन और सार्वजनिक स्वास्थ्य की एक मजबूत कड़ी बनाता है। प्रदूषित हवा अब "पर्यावरण" नहीं, बल्कि "चिकित्सकीय आपदा" का स्वरूप ले चुकी है।

जनकल्याण संदेश: परिवहन नीति को स्वास्थ्य नीति से जोड़ना आवश्यक है — क्योंकि "क्लीन ट्रांसपोर्ट" ही "हेल्दी नेशन" की आधारशिला है।

भाग 5 — नैतिकता की गाड़ी: नागरिक ही असली चालक श्रृंखला की अंतिम कड़ी यह स्पष्ट करती है कि कोई भी नीति, चाहे कितनी भी सशक्त क्यों न हो, तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक नागरिक उसे आत्म-संस्कृति में न बदलें।

जनहित दृष्टिकोण: हर नागरिक का आचरण ही पिछले चार भागों का निष्कर्ष है — कानून अनुपालन, ईंधन शुद्धता, सुरक्षा और पर्यावरण — सबका आरंभ और अंत नैतिकता से होता है।

सीरीज़ का केंद्रीय अर्थ: परिवहन एक जीवनधारा है, मशीन नहीं "जनकल्याण परिवहन सीरीज़" बताती है कि परिवहन केवल वाहन व्यवस्था नहीं — यह जीवन व्यवस्था है।

*जब पेट्रोल में मिलावट रुकती है, जब वाहन स्वच्छ ईंधन से चलते हैं, जब सड़कें सुरक्षित होती हैं, तब एक राष्ट्र केवल आगे नहीं बढ़ता — वह विकसित होता है।

*परिवहन वही है जो गति के साथ भावना लाए, नीति के साथ नैतिकता जोड़े, और सुविधा के साथ सुरक्षा सुनिश्चित करे। यही सच्चा "जनकल्याण परिवहन मॉडल" है, जहाँ नागरिक, सरकार और समाज — तीनों एक ही दिशा में चलते हैं।

*निष्कर्ष: जब सड़कें सुरक्षित हों, हवा शुद्ध हो और आचरण ईमानदार — तब ही हम कह पाएंगे कि भारत चलता नहीं, सजगता से बढ़ता है।

जनकल्याण परिवहन सीरीज़: राष्ट्र की सड़कों पर जनस्वास्थ्य की आवाज़ — समापन विशेषांक

भारत चलता है — जिम्मेदारी के पहिए पर श्रृंखला समापन

* सड़कें राष्ट्र का दर्पण, नागरिक उसका चालक।
* मिलावट-मुक्त ईंधन, शुद्ध हवा, सुरक्षित सफर – यही जनकल्याण परिवहन का मंत्र।
* पाँच भागों का सामूहिक जनसंदेश
* "नीति + नैतिकता = स्वस्थ राष्ट्र"

मिलावट, प्रदूषण, दुर्घटनाएँ, स्वास्थ्य संकट और नागरिक जिम्मेदारी – ये पाँचों कड़ियाँ एक सत्य की ओर इशारा करती हैं:

परिवहन केवल मशीनरी नहीं, जीवनधारा है।

भाग - दर - भाग जनहित निष्कर्ष सीरीज़ का केंद्रीय अर्थ परिवहन व्यवस्था तब सफल होती है

* जब वह गति के साथ सुरक्षा,
* सुविधा के साथ शुद्धता, और
* नीति के साथ नैतिकता जोड़ती है।

यह श्रृंखला केवल विश्लेषण नहीं – जनजागरण का आह्वान है।

अंतिम जनसंदेश

* जब हर पेट्रोल पंप शुद्ध बने,
* हर वाहन PUC पास करे,
* हर सड़क सुरक्षित हो, और
* हर नागरिक जिम्मेदार – तब भारत केवल नहीं चलेगा, सजगता से उन्नत होगा।

"परिवहन में जनकल्याण" अब नारा नहीं – राष्ट्रीय संकल्प है।

माइग्रेन में ब्राह्मी का देसी उपाय (पुराना, आज़माया हुआ घरेलू नुस्खा)

पिंकी कुंडू

अगर आपको बार-बार माइग्रेन का दर्द परेशान करता है, सिर के आधे हिस्से में तेज पीड़ा रहती है या तनाव के कारण सिर भारी लगता है, तो आयुर्वेद में बताया गया ब्राह्मी पाउडर का दूध के साथ सेवन लाभकारी माना जाता है।

कैसे लें (सेवन विधि) रात को सोने से पहले

* 1 गिलास गुनगुना दूध लें
* उसमें ½ से 1 चम्मच ब्राह्मी पाउडर मिलाएं
* अच्छी तरह मिलाकर धीरे-धीरे पी लें

फायदे

* माइग्रेन में होने वाला तेज सिर दर्द कम करने में मदद
* दिमाग को ठंडक और शांति देता है
* नींद की गुणवत्ता बेहतर होती है
* तनाव और चिड़चिड़ापन कम करता है
* माइग्रेन के बार-बार होने की संभावना घटाने में सहायक

सावधानियां

* निर्धारित मात्रा से अधिक सेवन न करें
* गर्भवती महिलाएं सेवन से पहले डॉक्टर से सलाह लें
* लंबे समय से तेज माइग्रेन रहने पर चिकित्सकीय परामर्श ज़रूरी

नोटः किसी भी घरेलू नुस्खे को अपनाने से पहले डॉक्टर की सलाह अवश्य लें।

अजवाइन + गुड़ खाने के फायदे (कमर दर्द में आराम)

अगर महिलाओं को बार-बार कमर दर्द, थकान या कमजोरी महसूस होती है, तो अजवाइन और गुड़ का छोटा सा नुस्खा बहुत लाभकारी हो सकता है।

यह नुस्खा आयुर्वेद में काफ़ी पुराना और असरदार माना जाता है।

1. कमर दर्द में राहत देता है
अजवाइन में मौजूद प्राकृतिक दर्द-निवारक तत्व

* → नसों को आराम देते हैं
* → जकड़न और सूजन कम करते हैं

गुड़ शरीर को गर्मी और ताकत देता है, जिससे दर्द धीरे-धीरे कम होता है।

2. कमजोरी और थकान दूर करता है

* गुड़ में आयरन और मिनरल्स होते हैं
* → शरीर में ऊर्जा बढ़ाते हैं
* → कमजोरी और थकान को दूर करते हैं
* अजवाइन पाचन सुधारकर शरीर को हल्का महसूस कराती है।

3. हार्मोन संतुलन में मदद
महिलाओं में होने वाले हार्मोन असंतुलन से

* → कमर दर्द
* → भारीपन
* → थकावट

जैसी समस्याएँ होती हैं, जिन्हें अजवाइन - गुड़ नियमित लेने से राहत मिल सकती है।

4. पाचन और गैस की समस्या ठीक करता है

* अजवाइन
* → गैस
* → अपच
* → पेट दर्द

को कम करती है, जिससे पेट से जुड़ा दबाव कमर पर नहीं पड़ता।

कैसे खाएँ? (Method)

* रात को सोने से पहले
* ½ चम्मच अजवाइन
* गुड़ का छोटा टुकड़ा

अच्छी तरह चबा कर खाएँ और उसके बाद गुनगुना दूध पी लें।

पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS)

PCOS क्या है? पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS) एक जटिल हार्मोनल एवं चयापचय (Metabolic) विकार है, जो मुख्यतः प्रजनन आयु में अंडाशय (ओवरी) वाले व्यक्तियों को प्रभावित करता है। यह इस समूह में पाए जाने वाले सबसे सामान्य एंडोक्राइन विकारों में से एक है और विश्व-भर में लगभग 15% प्रजनन आयु की महिलाओं को प्रभावित करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार— PCOS किसी एक कारण से होने वाली बीमारी नहीं है, बल्कि एक सिंड्रोम है; अर्थात् लक्षणों और जैविक परिवर्तनों का ऐसा समूह, जो प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग रूप और तीव्रता के साथ प्रकट हो सकता है।

अंतर्निहित जैविकी:

*पैथोफिज़ियोलॉजी PCOS प्रजनन एवं चयापचय प्रणालियों के हार्मोनल नियंत्रण में गड़बड़ी के कारण उत्पन्न होता है:

1. हार्मोनल असंतुलन मस्तिष्क के हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्रंथि से निकलने वाले संकेत (GnRH, LH, FSH) अंडाशय के कार्य को नियंत्रित करते हैं।

*PCOS में LH की तरंगों की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ जाती है, जिससे अंडाशयों द्वारा एंड्रोजन (पुरुष-सदृश हार्मोन) का उत्पादन अधिक होने लगता है।

2. एंड्रोजन की अधिकता (हाइपरएंड्रोजेनिज़्म) टेस्टोस्टेरोन जैसे एंड्रोजेनों का बढ़ा हुआ स्तर PCOS की प्रमुख पहचान है।

3 इसके परिणामस्वरूप हिर्सूटिज़्म (चेहरे/शरीर पर अधिक बाल), मुंहासे तथा सिर के बालों का पतला होना (एलोपेसिया) दिखाई देता है।

3. इंसुलिन प्रतिरोध PCOS वाले अनेक लोगों में इंसुलिन रेज़िस्टेंस विकसित हो जाता है, जिसमें रक्त शर्करा नियंत्रित करने के लिए शरीर को अधिक इंसुलिन चाहिए।

*बढ़ा हुआ इंसुलिन स्तर अंडाशयों को और अधिक एंड्रोजन बनाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे हार्मोनल असंतुलन और गहराता है।

4. अंडाशयी फॉलिकल का विकास अल्ट्रासाउंड में दिखने वाली "सिस्ट" वास्तव में अपरिपक्व फॉलिकल्स होती हैं, जो ओव्यूलेशन बाधित होने के कारण जमा हो जाती हैं — ये हानिकारक सिस्ट नहीं होतीं।

5. प्रणालीगत प्रभाव PCOS में हल्की लेकिन दीर्घकालिक सूजन और चयापचय परिवर्तन शामिल होते हैं। यही कारण है कि इसे अब केवल प्रजनन विकार नहीं, बल्कि एक सिस्टमिक सिंड्रोम माना जाता है।

(PubMed के अनुसार)

लक्षण एवं नैदानिक विशेषताएँ लक्षण व्यक्ति-दर-व्यक्ति भिन्न हो सकते हैं, पर सामान्यतः इनमें शामिल हैं:

* अनियमित मासिक धर्म या माहवारी का न होना
* हिर्सूटिज़्म (चेहरे/शरीर पर अधिक बाल)
* मुंहासे और तैलीय त्वचा
* सिर के बालों का पतला होना
* वजन बढ़ना या वजन घटाने में कठिनाई
* बांझपन या गर्भधारण में समस्या
* इंसुलिन रेज़िस्टेंस/प्रीडायबिटीज़/टाइप-2 डायबिटीज़ का जोखिम

हृदय-वाहिका जोखिम कारक (कोलेस्ट्रॉल व चयापचय संबंधी गड़बड़ियाँ)

(WHO के अनुसार)

निदानः प्रमाण-आधारित दिशानिर्देश PCOS का निदान प्रायः रॉटरडैम मानदंड के आधार पर किया जाता है, जिनमें से तीन में से कम से कम दो उपस्थित हों:

* अनियमित या अनुपस्थित ओव्यूलेशन (ओलिगो/अमेनोरिया) हाइपरएंड्रोजेनिज़्म के नैदानिक या जैव-रासायनिक संकेत
* अल्ट्रासाउंड में पॉलीसिस्टिक - दिखने वाली अंडाशय
* इसके अतिरिक्त, वयस्कों में एंटी-म्यूलरियन हार्मोन (AMH) का स्तर एक सहायक निदान सूचक के रूप में तेजी से स्वीकार किया जा रहा है।
* डॉक्टर इंसुलिन रेज़िस्टेंस, लिपिड असामान्यताओं और हृदय-वाहिका जोखिम की भी जांच करते हैं।

नवीनतम शोध एवं प्रगति (2025) नई निदान तकनीकें एवं AI क्लिनिकल दिशानिर्देशों, इमेजिंग और जोखिम-डेटा को जोड़ने वाले AI-आधारित निदान तंत्र विकसित हो रहे हैं, जो निदान की सटीकता बढ़ाने और असमानताओं को कम करने में सहायक हैं।

एक उभरता हुआ ढांचा नॉलेज-ग्राउंडेड मल्टी-एजेंट सिस्टम का उपयोग कर क्लिनिकल डायग्नोस्टिक वर्कफ़्लो का अनुकरण करता है, जिससे विविध रोगी प्रोफ़ाइल में PCOS की पहचान बेहतर होती है।

आनुवंशिक एवं एपिजेनेटिक अंतर्दृष्टि एक क्रांतिकारी अवधारणा एपिजेनेटिक इनहेरिटेंस का सुझाव देती है— जहाँ जीन गतिविधि के पैटर्न पीढ़ियों तक स्थानांतरित होकर PCOS के जोखिम को प्रभावित कर सकते हैं। यह पारिवारिक एकत्रता को समझाने और IVF जैसे संदर्भों में रोकथाम-आधारित रणनीतियों के द्वार खोल सकती है।

(Live Science के अनुसार)

1. वज़न घटाने की दवाएँ (GLP-1 रिसेप्टर एगोनिस्ट्स)

2. सेमाग्लूटाइड और टिर्ज़ेपाटाइड जैसी दवाएँ— जो मूलतः वजन प्रबंधन के लिए विकसित हुई थीं — अब ऑफ-लेबल रूप से PCOS में निम्न लाभों हेतु प्रयुक्त हो रही हैं:

* वजन बढ़ना
* इंसुलिन रेज़िस्टेंस
* हार्मोनल असंतुलन

मासिक धर्म की नियमितता और प्रजनन क्षमता में सुधार (Reuters के अनुसार):- हालाँकि, PCOS के लिए ये दवाएँ अभी आधिकारिक रूप से स्वीकृत नहीं हैं और विशिष्ट क्लिनिकल ट्रायल्स की आवश्यकता बनी हुई है।

आंत स्वास्थ्य एवं चयापचय उभरते अध्ययनों से संकेत मिलता है कि गट माइक्रोबायोम में बदलाव PCOS के चयापचय और सूजन संबंधी पहलुओं में भूमिका निभा सकते हैं, जिससे नए उपचार लक्ष्य सामने आ सकते हैं।

(PubMed के अनुसार)

संरचनात्मक एवं मस्कुलोस्केलेटल शोध हालिया छोटे अध्ययनों में PCOS और पोश्चर परिवर्तन (जैसे एंटीरियर पेल्विक टिल्ट) के बीच संभावित संबंध का संकेत मिला है—संभवतः हार्मोनल और चयापचय प्रभावों के कारण—हालाँकि और शोध आवश्यक है।

(Marie Claire UK के अनुसार)

प्रबंधन एवं उपचार विकल्प हालाँकि PCOS का कोई स्थायी इलाज नहीं है, फिर भी प्रभावी रणनीतियाँ उपलब्ध हैं:

1. जीवनशैली में सुधार

* संतुलित आहार और पोषण
* नियमित शारीरिक गतिविधि एवं वजन प्रबंधन
* तनाव नियंत्रण और पर्याप्त नींद
* ये उपाय लक्षणों और चयापचय परिणामों में सुधार की आधारशिला हैं।

2. दवाएँ

* मेटफॉर्मिन – इंसुलिन रेज़िस्टेंस के लिए
* ओरल कॉन्ट्रासेप्टिव्स – चक्र नियमित करने और एंड्रोजन प्रभाव घटाने हेतु
* एंटी-एंड्रोजेन्स (जैसे स्पाइरोनोलैक्टोन) – गंभीर हिर्सूटिज़्म/एक्ने में
* लेट्रोज़ोल – बांझपन में ओव्यूलेशन प्रेरण हेतु तेजी से अपनाया जा रहा है

(JAMA Network के अनुसार)

3. प्रजनन उपचार

* ओव्यूलेशन इंडक्शन दवाएँ सहायक प्रजनन तकनीकें (जैसे IVF)

PCOS-विशिष्ट उन्नत IVF प्रोटोकॉल परिणामों को बेहतर और जोखिमों को कम करने हेतु विकसित किए जा रहे हैं।

(New York Post के अनुसार)

4. सप्लीमेंट्स एवं सहायक उपाय इनॉसिटोल्स (विशेषकर मायो-इनॉसिटोल) इंसुलिन संवेदनशीलता और ओव्यूलेशन में सुधार के लिए चर्चा में हैं, हालाँकि गर्भावस्था परिणामों पर प्रभाव अभी अध्ययनाधीन है।

(New York Post)

जीवन-गुणवत्ता पर व्यापक प्रभाव PCOS केवल शारीरिक स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। प्रभावित व्यक्तियों में चिंता, अवसाद, शरीर-छवि से जुड़ा तनाव और मानसिक दबाव की दरें अधिक पाई जाती हैं।

(The Week के अनुसार)

सारांशः 2025 में PCOS

संक्षेप में— PCOS एक बहु-कारक हार्मोनल एवं चयापचय सिंड्रोम है, जिसके लक्षण विविध होते हैं।

* निदान में अब नए बायोमार्कर और AI-आधारित उपकरण शामिल हो रहे हैं।
* GLP-1 जैसी नई दवाएँ आशाजनक हैं, पर विशिष्ट परीक्षणों की आवश्यकता है।

नए साल में इन 'आदतों' को शामिल करें, बीमारियां दूर भागेंगी .....

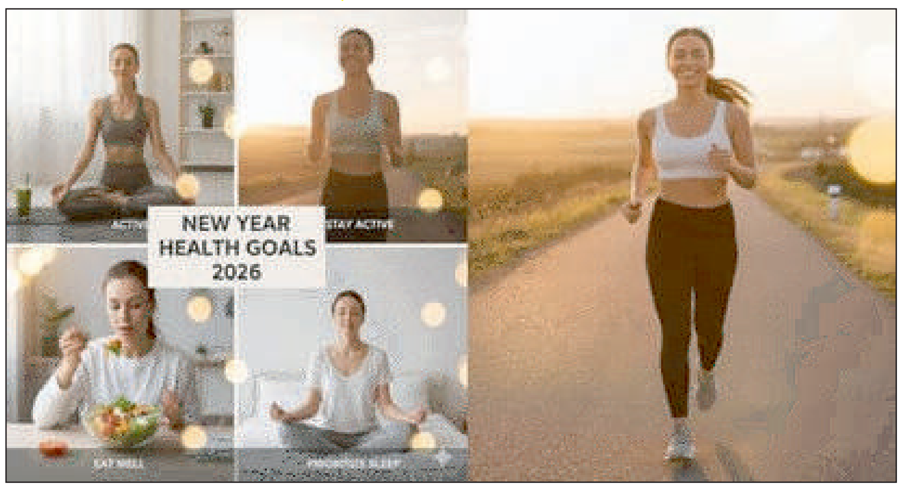

नया साल शुरू हो गया है, नया साल 2026 सभी के लिए उम्मीद की किरण लेकर आता है। नए साल के मौके पर लोग अपनी ज़िंदगी बदलने के लिए कई रेज़ोल्यूशन लेते हैं। ऐसे में, आज आइए कुछ ऐसी आदतों के बारे में जानें, जो आपको नए साल में हेल्दी रहने में मदद करेंगी। अगर आप भी आने वाले साल में हेल्दी रहने के लिए अपनी कुछ आदतें बदलना चाहते हैं, तो इसे ज़रूर पढ़ें।

आइए जानें हेल्दी रहने के लिए आप कौन सी आदतें बदल सकते हैं....

समय पर सोएं...

आजकल लोगों के सोने और खाने का समय पूरी तरह बदल गया है। बहुत से लोग रात में देर से खाते हैं और बहुत देर से सोते हैं। ऐसे में यह बीमारियों का एक बड़ा कारण भी बन सकता है। इसलिए सबसे पहले, सभी काम समय पर करने की आदत डालें। जल्दी खाएं और जल्दी सोएं। कम से कम 8 घंटे की नींद लें।

स्ट्रेस मैनेज करें...

आजकल हर कोई किसी न किसी वजह से परेशान या स्ट्रेस में रहता है। लेकिन कुछ लोगों को बहुत ज़्यादा चिंता करने की आदत होती है। इससे मेंटल हेल्थ प्रॉब्लम हो सकती हैं। इसलिए, अपने स्ट्रेस को मैनेज करने के लिए आपको मेडिटेशन और माइंडफुलनेस जैसी स्ट्रेस मैनेजमेंट टेक्नीक अपनानी चाहिए।

एक्सरसाइज़ करें...

फिजिकली फिट रहने के लिए शरीर को एक्टिव रखना बहुत ज़रूरी है। इसके लिए आपको रोज़ाना एक्सरसाइज करने की आदत डालनी चाहिए। इसके लिए आप मॉर्निंग वॉक, एक्सरसाइज, योगा या डांस क्लास जैसी एक्टिविटी कर सकते हैं। एक्सरसाइज से शरीर और मन दोनों फिट रहते हैं।

खाने की अच्छी आदतें...

आजकल बच्चे हों या जवान, सभी को जंक फूड और पैक्ड फूड खाना बहुत पसंद होता है। लेकिन यह हमारी सेहत के लिए बहुत नुकसानदायक हो सकता है। इसलिए, इस नए साल से घर का बना खाना और हेल्दी खाना खाने की आदत डालें।

पढ़ना...

पढ़ना सबसे अच्छी हॉबी है। दिन में कुछ समय कुछ अच्छा पढ़ने में बिताएं। इससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। इसके साथ ही, अपने विचार और अगले दिन का शेड्यूल डायरी में लिखने की आदत डालें। ये अच्छी आदतें अच्छी हेल्थ बनाए रखने में मदद करती हैं।

#पहचानो जड़ी बूटी #किस बीमारी में कौनसी काम आती है #कैसे करें उपयोग #आयुर्वेद जीवन

1. अश्वगंधा
किस बीमारी मेंः कमजोरी, तनाव, अनिद्रा, पुरुष-शक्ति
कैसेः 1 चम्मच चूर्ण गुनगुने दूध के साथ
कबः रात को सोने से पहले

2. गिलोय
किस बीमारी मेंः बुखार, इम्युनिटी कमजोर, डेंगू
कैसेः 10–15 ml रस या काढ़ा
कबः सुबह खाली पेट

3. तुलसी
किस बीमारी मेंः सर्दी-खाँसी, दमा, संक्रमण
कैसेः 5–7 पत्ते चबाएँ या काढ़ा
कबः सुबह खाली पेट

4. एलोवेरा
किस बीमारी मेंः कब्ज, त्वचा रोग, पेट की जलन
कैसेः 20 ml रस
कबः सुबह खाली पेट

5. नीम
किस बीमारी मेंः त्वचा रोग, खून की गंदगी
कैसेः पत्तों का रस / दातून
कबः सुबह

6. आंवला
किस बीमारी मेंः आँखों की कमजोरी, बाल झड़ना, गैस
कैसेः 1 चम्मच चूर्ण या रस
कबः सुबह

7. ब्राह्मी
किस बीमारी मेंः याददाश्त कमजोर, तनाव
कैसेः चूर्ण दूध के साथ
कबः रात

8. शतावरी
किस बीमारी मेंः महिलाओं की कमजोरी, हार्मोन असंतुलन
कैसेः 1 चम्मच चूर्ण दूध के साथ
कबः सुबह

9. मुलेठी
किस बीमारी मेंः गले की खराश, खाँसी
कैसेः छोटा टुकड़ा चूसें
कबः दिन में 2 बार

10. अर्जुन
किस बीमारी मेंः हृदय रोग, उच्च रक्तचाप
कैसेः छाल का काढ़ा
कबः सुबह-शाम

11. हरड़
किस बीमारी मेंः कब्ज, अपच
कैसेः चूर्ण गुनगुने पानी से
कबः रात

12. बहेड़ा
किस बीमारी मेंः खाँसी, आँख रोग
कैसेः चूर्ण
कबः सुबह

13. पुनर्नवा
किस बीमारी मेंः सूजन, किडनी रोग
कैसेः काढ़ा
कबः सुबह

14. कालमेघ
किस बीमारी मेंः लिवर रोग, पीलिया
कैसेः काढ़ा
कबः सुबह

15. गुड़मार
किस बीमारी मेंः मधुमेह (डायबिटीज)
कैसेः चूर्ण
कबः सुबह-शाम

16. भृंगराज
किस बीमारी मेंः बाल झड़ना, सफेद बाल
कैसेः रस या तेल
कबः रात

17. दारुहल्दी
किस बीमारी मेंः त्वचा रोग, संक्रमण
कैसेः चूर्ण पानी के साथ
कबः सुबह

18. नागरमोथा
किस बीमारी मेंः गैस, अपच
कैसेः चूर्ण
कबः भोजन बाद

19. चिरायता
किस बीमारी मेंः बुखार, मलेरिया
कैसेः काढ़ा
कबः सुबह

20. शंखपुष्पी
किस बीमारी मेंः मानसिक तनाव, नींद न आना
कैसेः सिरप/चूर्ण
कबः रात

⚠ महत्वपूर्ण सावधानी
गर्भवती महिलाएँ बिना वैद्य की सलाह न लें
अधिक मात्रा हानिकारक हो सकती है

बाल, पेट और जोड़, तीनों परेशानियों का एक देसी जवाब - अरंडी का तेल

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारणः अरंडी के तेल में RICINOLEIC ACID होता है, जो ANTI-INFLAMMATORY गुण रखता है।

* बालों में लगाने पर यह SCALP की DRYNESS कम करता है और HAIR FOLLICLES को NOURISHMENT देता है।
* दूध के साथ थोड़ी मात्रा लेने से BOWEL MOVEMENT SMOOTH होता है, जिससे कब्ज में राहत मिल सकती है।
* जोड़ों पर हल्की मालिश करने से BLOOD CIRCULATION बेहतर होती है और STIFFNESS कम महसूस होती है।

आयुर्वेदिक कारणः

* आयुर्वेद में अरंडी का तेल वात दोष को शांत करने वाला माना गया है।
* वात के असंतुलन से ही बाल झड़ना, कब्ज और जोड़ों का दर्द बढ़ता है।

इसलिए अरंडी का तेल तीनों समस्याओं में उपयोगी माना जाता है।

फायदे (BENEFITS):

* बालों की जड़ें मजबूत होती हैं
* कब्ज में नरमी और आराम मिलता है
* जोड़ों के दर्द में राहत
* शरीर में STIFFNESS कम होती है।

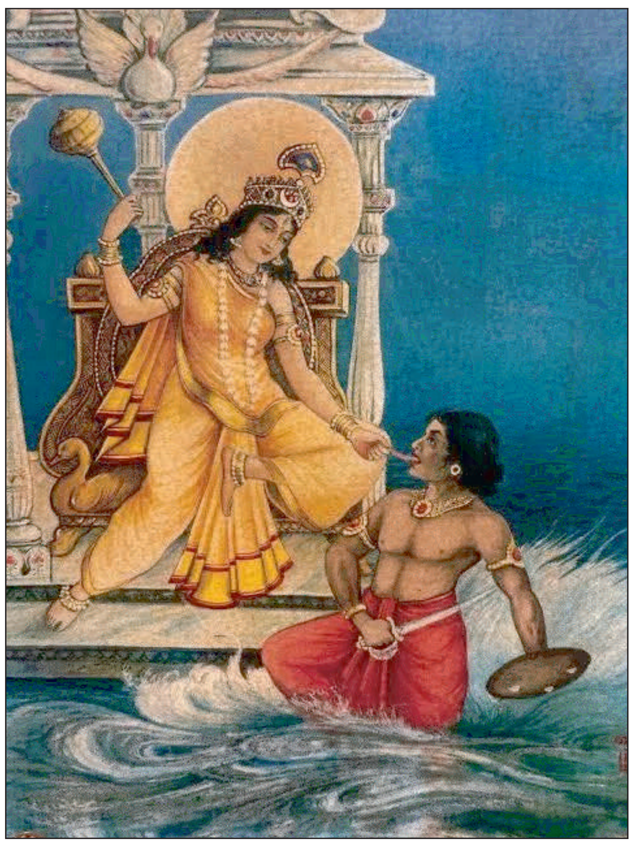

बगलामुखी परिचय एवं साधना नियम !

पिंकी कुंडू

पौराणिक कथाओं के अनुसार एक बार सतयुग में महाविनाश उत्पन्न करने वाला ब्रह्मांडीय तूफान उत्पन्न हुआ, जिससे संपूर्ण विश्व नष्ट होने लगा इससे चारों ओर हाहाकार मच गया। कई लोग संकट में पड़ गए और संसार की रक्षा करना असंभव हो गया। यह तूफान सब कुछ नष्ट भ्रष्ट करता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था, जिसे देख कर भगवान विष्णु जी चिंतित हो गए।

इस समस्या का कोई हल न पा कर वह भगवान शिव को स्मरण करने लगे तब भगवान शिव ने कहा शक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई इस विनाश को रोक नहीं सकता अतः आप उनकी शरण में जाएं।

तब भगवान विष्णु ने हरिद्रा सरोवर के निकट पहुंच कर कठोर तप किया। भगवान विष्णु के तप से देवी शक्ति प्रकट हुईं। उनकी साधना से महात्रिपुरसुंदरी प्रसन्न हुईं। सौराष्ट्र क्षेत्र की हरिद्रा झील में जलक्रीड़ा करती महापीतांबरा स्वरूप देवी के हृदय से दिव्य तेज उत्पन्न हुआ। इस तेज से ब्रह्मांडीय तूफान थम गया।

उस समय रात्रि को देवी बगलामुखी के रूप में प्रकट हुई, त्रैलोक्य स्तम्भिनी महाविद्या भगवती बगलामुखी ने प्रसन्न हो कर विष्णु जी को इच्छित वर दिया और तब सृष्टि का विनाश रूक सका।

देवी बगलामुखी को वीर रति भी कहा जाता है क्योंकि देवी स्वयं ब्रह्मास्त्र रूपिणी हैं।

इनके शिव को महारुद्र कहा जाता है।

इसी लिए देवी सिद्ध विद्या हैं।

तांत्रिक इन्हें स्तंभन की देवी मानते हैं।

गृहस्थों के लिए देवी समस्त प्रकार के संशयों का शमन करने वाली हैं।

माँ बगलामुखी की साधना करने के लिए सबसे पहले एकाक्षरी मंत्र ह्लरीं की दीक्षा अपने गुरुदेव के मुख से प्राप्त करें।

एकाक्षरी मंत्र के एक लाख दस हजार जप करने के पश्चात क्रमशः चतुराक्षरी, अष्टाक्षरी, उन्नीसाक्षरी, छत्तीसाक्षरी (मूल मंत्र) आदि मंत्रो की दीक्षा अपने गुरुदेव से प्राप्त करें एवं गुरु आदेशानुसार मंत्रो का जाप संपूर्ण करें।

यदि एक बार आपने यह साधना पूर्ण कर ली तो इस संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जिसे आप प्राप्त नहीं कर सकते।

यदि आप भोग विलास के पीछे दौड़ेंगे तो आपकी यह दौड़ कभी भी समाप्त नहीं होगी।

लेकिन यदि आपका लक्ष्य प्रभु प्राप्ति होगा तो भोग विलास स्वयं ही आपके दास बनकर आपकी सेवा करेंगे।

मानव जन्म बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है। इसे व्यर्थ ना गँवाये। हम सभी जानते है कि हम इस संसार से कुछ भी साथ लेकर नहीं जायेगे।

यदि आपने यहाँ करोड़ो रुपये भी जोड़ लिए तो भी वो व्यर्थ ही हैं जब तक आप उस परमपिता को प्राप्त नहीं कर लेते। उस परमात्मा कि शरण में जो सुख है वह सुख इस संसार के किसी भी भोग विलास में नहीं है।

"बगलामुखी मां"

*~~ मां बगलामुखी जी आठवी महाविद्या हैं। इनका प्राकाट्य स्थल गुजरात के सौरापट क्षेत्र में माना जाता है। हल्दी रंग के जल से इनका प्रकट होना बताया जाता है। इसलिए, हल्दी का रंग पीला होने से इन्हें पीताम्बरा देवी भी कहते हैं। इनके कई स्वरूप हैं। इस महाविद्या की उपासना रात्रि काल में करने से विशेष सिद्धि की प्राप्ति होती है। इनके भैरव महाकाल हैं।

माँ बगलामुखी स्तंभव शक्ति की अधिष्ठात्री हैं अर्थात यह अपने भक्तों के भय को दूर करके शत्रुओं और उनके बुरी शक्तियों का नाश करती हैं. माँ बगलामुखी का एक नाम पीताम्बरा भी है इन्हें पीला रंग अति प्रिय है इसलिए इनके पूजन में पीले रंग की सामग्री का उपयोग सबसे ज्यादा होता है.

देवी बगलामुखी का रंग स्वर्ण के समान पीला होता है अतः साधक को माता बगलामुखी की आराधना करते समय पीले वस्त्र ही धारण करना चाहिए !

देवी बगलामुखी दसमहाविद्या में आठवीं महाविद्या हैं यह स्तम्भन की देवी हैं. संपूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति का समावेश हैं माता बगलामुखी शत्रुनाश, वाकसिद्धि, वाद विवाद में विजय के लिए इनकी उपासना की जाती है.

इनकी उपासना से शत्रुओं का नाश होता है तथा भक्त का जीवन हर प्रकार की बाधा से मुक्त हो जाता है. बगला शब्द संस्कृत भाषा के वल्गा का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ होता है दुलहन है अतः मां के अलौकिक सौंदर्य और स्तंभन शक्ति के कारण ही इन्हें यह नाम प्राप्त है.बगलामुखी देवी रत्नजडित सिहासन पर विराजती होती हैं

रत्नमय रथ पर आरूढ़ हो शत्रुओं का नाश करती हैं. देवी के भक्त को तीनो लोकों में कोई नहीं हरा पाता, वह जीवन के हर क्षेत्र में सफलता पाता है पीले फूल और नारियल चढाने से देवी प्रसन्न होतीं हैं.

देवी को पीली हल्दी के ढेर पर दीप-दान करें, देवी की मूर्ति पर पीला वस्त्र चढाने से बड़ी से बड़ी बाधा भी नष्ट होती है,

बगलामुखी देवी के मन्त्रों से दुखों का नाश होता है.

पीताम्बरा की उपासना से मुकदमा में विजयी प्राप्त होती है।

शत्रु पराजित होते हैं।

रोगों का नाश होता है।

साधकों को वाकसिद्धि हो जाती है।

इन्हें पीले रंग का फूल, बेसन एवं घी का प्रसाद, केला, रात रानी फूल विशेष प्रिय है।

पीताम्बरा का प्रसिद्ध मंदिर मध्यप्रदेश के दतिया और नलखेडा(जिला-शाजापुर) और आसाम के कामाख्या में है।

श्री बगला शक्ति कोई तामसिक शक्ति नहीं है, बल्कि आभिचारिक कृत्यों से रक्षा ही इसकी प्रधानता है। इस संसार में जितने भी तरह के दुःख और उत्पात हैं, उनसे रक्षा के लिए इसी शक्ति की उपासना करना श्रेष्ठ होता है।

शुक्ल यजुर्वेद माध्यंदिन संहिता के पाँचवें अध्याय की 23, 24 एवं 25वीं कण्डिकाओं में अभिचार कर्म की निवृत्ति में श्रीबगलामुखी को ही सर्वोत्तम बताया है।

शत्रुविनाश के लिए जो कृत्या विशेष को भूमि में गाड़ देते हैं, उन्हें नष्ट करने वाली महा-शक्ति श्रीबगलामुखी ही है।

त्रयीसिद्ध विद्याओं में आपका पहला स्थान है। आवश्यकता में शुचि-अशुचि अवस्था में भी इसके प्रयोग का सहारा लेना पड़े तो शुद्धमन से स्मरण करने पर भगवती सहायता करती है।

लक्ष्मी-प्राप्ति व शत्रुनाश उभय कामना मंत्रों का प्रयोग भी सफलता से किया जा सकता है।

देवी को वीर-रात्रि भी कहा जाता है, क्योंकि देवी स्वम् ब्रह्मास्त्र-रूपिणी हैं, इनके शिव को एकवक्त्र-महारुद्र तथा मृत्युञ्जय-महादेव कहा जाता है, इसीलिए देवी सिद्ध-विद्या कहा जाता है।

विष्णु भगवान्-श्री कूर्म हैं तथा ये मंगल ग्रह से सम्बन्धित मानी गयी हैं।

शत्रु व राजकीय विवाद, मुकदमेबाजी में विद्या शीघ्र-सिद्धि-प्रदा है। शत्रु के द्वारा कृत्या अभिचार किया गया हो, प्रेतादिक उपद्रव हो, तो उक्त विद्या का प्रयोग करना चाहिये।

सामान्य बगलामुखी मंत्र

~~ ऊँ ह्लीं° बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्ववां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ओम्स्वाहा।

माँ बगलामुखी की साधना करने वाला साधक सर्वशक्ति सम्पन्न हो जाता है. यह मंत्र विधा अपना कार्य करने में सक्षम हैं. मंत्र का सही विधि द्वारा जाप किया जाए तो निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है. बगलामुखी मंत्र के जाप से पूर्व बगलामुखी कवच का पाठ अवश्य करना चाहिए. देवी बगलामुखी पूजा अर्चना सर्वशक्ति सम्पन्न बनाने वाली सभी शत्रुओं का शमन करने वाली तथा मुकदमों में विजय दिलाने वाली होती है।

श्री सिद्ध बगलामुखी देवी महामंत्र

~~ ऊँ ह्लीं बगलामुखी देव्यै सर्व दुष्टानाम वाचं मुखं पदम् स्तम्भय जिह्वाम कीलय-कीलय बुद्धिम विनाशाय ह्लीं ऊँ नमः

इस मंत्र से काम्य प्रयोग भी संपन्न किये जाते हैं जैसे

1. मधु. शर्करा युक्त तिलों से होम करने पर मनुष्य वश में होते है।

2. मधु. घृत तथा शर्करा युक्त लवण से होम करने पर आकर्षण होता है।

3. तेल युक्त नीम के पत्तों से होम करने पर विद्वेषण होता है।

4. हरिताल, नमक तथा हल्दी से होम करने पर शत्रुओं का स्तम्भन होता है।

मां बगलामुखी पूजन

~~ माँ बगलामुखी की पूजा हेतु इस दिन प्रातः काल उठकर नित्य कर्मों में निवृत्त होकर, पीले वस्त्र धारण करने चाहिए.

साधना अकेले में, मंदिर में या किसी सिद्ध पुरुष के साथ बैठकर की जानी चाहिए. पूजा करने के लुए पूर्व दिशा की ओर मुख करके पूजा करने के लिए आसन पर बैठें चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर भगवती बगलामुखी का चित्र स्थापित करें.इसके बाद आचमन कर हाथ धोएं। आसन पवित्रीकरण, स्वस्तिवाचन, दीप प्रज्जवलन के बाद हाथ में पीले चावल, हरिद्रा, पीले फूल और दक्षिणा लेकर संकल्प करें. इस पूजा में ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक होता है

मंत्र- सिद्ध करने की साधना में माँ बगलामुखी का पूजन यंत्र चने की दाल से बनाया जाता है और यदि हो सके तो ताम्रपत्र या चाँदी के पत्र पर इसे अंकित करें।

साधना से पहले माँ को प्रसन्न करने के लिए इस प्रकार पूजन करे

साधक को माता बगलामुखी की पूजा में पीले वस्त्र धारण करना चाहिए। इस दिन सुबह जल्दी उठकर नित्य कर्मों में निवृत्त होकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके आसन पर बैठें। चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर भगवती बगलामुखी का चित्र स्थापित करें। इसके बाद आचमन कर हाथ धोएं। आसन पवित्रीकरण, स्वस्तिवाचन, दीप प्रज्जवलन के बाद हाथ में पीले चावल, हरिद्रा, पीले फूल और दक्षिणा लेकर इस प्रकार संकल्प करें-

संकल्प

~~ ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य...... (अपने गोत्र का नाम) गोत्रोत्पन्नोहं ...(नाम) मम सर्व शत्रु स्तम्भनाय (यहाँ कामना अनुसार संकल्प बोलना चाहिए) बगलामुखी जप पूजनमहं करिष्ये। तदगंत्वेन अभीष्टनिर्वध्नतया सिद्धयर्थं आदौः गणेशादयानां पूजनं करिष्ये।

माँ बगलामुखी मंत्र विनियोग

श्री ब्रह्मास्त्र-विद्या बगलामुख्या नारद ऋषये नमः शिरसि।

त्रिष्टुप् छन्दसे नमो मुखे। श्री बगलामुखी दैवतायै नमो ह्रदये।

ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पाद्योः।

ऊँ नमः सर्वांगं श्री बगलामुखी देवता प्रसाद सिद्धयर्थ न्यासे विनियोगः।

इसके पश्चात आवाहन करना चाहिए

ऊँ ऐं ह्लीं श्रीं बगलामुखी सर्वदृष्टानां मुखं स्तम्भिनि सकल मनोहारिणी अम्बिके इहागच्छ सन्निधि कुरू सर्वार्थ साधय साधय स्वाहा।

अब देवी का ध्यान करें इस प्रकार

सौवर्णामनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लसिनीम्

हेमावांगरूचि शशांक मुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्

हस्तैर्मुदग़र पाशवज्ररसना सम्बि भ्रति भूषणै

व्याप्तांगी बगलामुखी त्रिजगतां सस्तम्भिनौ चिन्तयेत्।

इसके बाद भगवान श्रीगणेश का पूजन करें। नीचे लिखे मंत्रों से गौरी आदि षोडशमातृकाओं का पूजन करें

गौरी पद्मा शचीमेधा सावित्री विजया जया।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः।।

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवता।

गणेशेनाधिकाह्योता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।।

इसके बाद गंध, चावल व फूल अर्पित करें तथा कलश तथा नवग्रह का पंचोपचार पूजन करें।

तत्पश्चात इस मंत्र का जप करते हुए देवी बगलामुखी का आवाह्न करें

नमस्ते बगलादेवी जिह्वा स्तम्भनकारिणीम्।

भजेहं शत्रुनाशार्थं मदिरा सक्त मानसम्।।

आवाह्न के बाद उन्हें एक फूल अर्पित कर आसन प्रदान करें और जल के छींटे देकर स्नान करवाएं व इस प्रकार पूजन करें

गंध- ऊँ बगलादेव्यै नमः गंधाक्षत समर्पयामि। का उच्चारण करते हुए बगलामुखी देवी को पीला चंदन लगाएं और पीले फूल चड़ाएं।

पुष्प- ऊँ बगलादेव्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि। मंत्र का उच्चारण करते हुए बगलामुखी देवी को पीले फूल चढ़ाएं।

धूप- ऊँ बगलादेव्यै नमः धूपंआघ्रापयामि। मंत्र का उच्चारण करते हुए बगलामुखी देवी को धूप दिखाएं।

दीप- ऊँ बगलादेव्यै नमः दीपं दर्शयामि। मंत्र का उच्चारण करते हुए बगलामुखी देवी को दीपक दिखाएं।

नैवेद्य- ऊँ बगलादेव्यै नमः नैवेद्य निवेदयामि। मंत्र का उच्चारण करते हुए बगलामुखी देवी को पीले रंग की मिठाई का भोग लगाएं।

अब इस प्रकार प्रार्थना करें

जिह्वाग्रमादाय करणे देवीं, वामेन शत्रून परिपीडयन्ताम्।

गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।।

बगला उपासना मे उपयोगी कुल्कुलादि साधना

"बगला उपासना व दश महाविद्याओं में मंत्र जाग्रति हेतु शापोद्धार मंत्र, सेतु, महासेतु, कुल्कुलादि मंत्र का जप करना जरुरी है। अतः उनकी संक्षिप्त जानकारी व अन्य विषय साधकों के लिये आवश्यक है।

नाम बगलामुखी, पीताम्बरा, ब्रह्मास्त्र विद्या।

आम्नाय मुख आम्नाय दक्षिणाम्नाय हैं इसके उत्तर, ऊर्ध्व व उभयाम्नाय मंत्र भी हैं।

आचार इस विद्या का वामाचार क्रम मुख्य है, दक्षिणाचार भी है।

कुल यह श्रीकुल की अंग-विद्या है।

शिव इस विद्या के त्र्यंबक शिव हैं।

भैरव आनन्द भैरव हैं। कई विद्वान आनन्द भैरव को प्रमुख शिव व त्र्यंबक को भैरव बताते हं।

गणेश इस विद्या के हरिद्रा-गणपति मुख्य गणेश हैं। स्वर्णाकर्षण भैरव का प्रयोग भी उपयुक्त है।

यक्षिणी विडालिका यक्षिणी का मेरु-तंत्र में विधान है। प्रयोग हेतु अंग-विद्यायें -मृत्युञ्जय, बटुक, आग्नेयास्त्र, वारुणास्त्र, पार्जन्यास्त्र, संमोहनास्त्र, पाशुपतास्त्र, कुल्लुका, तारा स्वप्नेश्वरी, वाराही मंत्र की उपासना करनी चाहिये।

कुल्लुका "ऊँ क्ष्रौं" अथवा "ऊँ हूँ क्षौं" शिर में 10 बार जप करना।

सेतु कण्ठ में 10 बार "ह्रीं" मंत्र का जप करें।

महासेतु "स्त्रीं" इसका हृदय में 10 बार जप करें।

निर्वाण हूं, ह्रीं श्रीं से संपुटित करे एवं मंत्र जप करें। दीपन पुरश्चरण आदि में "ईं" से सम्पुटित मंत्र का जप करें।

जीवन मूल मंत्र के अंत में " ह्रीं ओं स्वाहा" 10 बार जपे। नित्य आवश्यक नहीं है।

मुख-शोधन "हं ह्रीं ऐं" मुख में 10 बार मंत्र जप करें।

शापोद्धार "ऊँ ह्लीं बगले रुद्रशायं विमोचय विमोचय ऊँ ह्लीं स्वाहा" 10 बार जपे।

उत्कीलन "ऊँ ह्लीं स्वाहा" मंत्र के आदि में 10 बार जपे।...

बगलामुखी एकाक्षरी मंत्र

~~।। ऊँ ह्लीं ऊँ।।

'' ह्लीं '' को स्थिर माया कहते हैं। यह मंत्र दक्षिण आम्नाय का है। दक्षिणाम्नाय में बगलामुखी के दो भुजायें हैं। अन्य बीज "ह्लीं" का उल्लेख भी बगलामुखी के मंत्रों में आता है, इसे "भुवन-माया" भी कहते हैं। चतुर्भुज रुप में यह विद्या विपरीत गायत्री (ब्रह्मास्त्र विद्या) बन जाती है। ह्लीं बीज-युक्त अथवा चतुर्भुज ध्यान में बगलामुखी उत्तराम्नाय या उर्ध्वाम्नायात्मिका होती है। ह्लरीं बीज का उल्लेख 36 अक्षर मंत्र में होता है।

(सांख्यायन तन्त्र)

विनियोग ऊँ अस्य एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, बगलामुखी देवता, लं बीजं, ह्लीं शक्तिः ईं कीलकं, सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, बगलामुखी देवतायै नमः हृदि, लं बीजाय नमः गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयो, ईं कीलकाय नमः नाभौ, सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

षडङ्ग-न्यास कर-न्यास अंग-न्यास

ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः हृदयाय नमः

ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः शिरसे स्वाहा

ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः शिखायै वषट्

ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः कवचाय हुं

ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः नेत्र-त्र्याय वौषट्

ह्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः अस्त्राय फट्

ध्यानः हाथ में पीले फूल, पीले अक्षत और जल लेकर 'ध्यान' करे -

वादीभूकति रंकति क्षिति-पतिः वैश्वानरः शीतति,

क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।

गर्वी खर्वति सर्व-विच्च जड़ति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः,

श्रीनित्ये ! बगलामुखि ! प्रतिदिनं कल्याणि ! तुभ्यं नमः।।

एक लाख जप कर, पीत-पुष्पों से हवन करे, गुड़ोदक से दशांश तर्पण करे।

विशेष:- "श्रीबगलामुखी-रहस्यं" में शक्ति 'हूं' बतलाई गई है तथा ध्यान में पाठन्तर है – 'शान्तति' के स्थान पर 'शाम्यति'।

श्री बगलामुखी माता की आरती

जय पीताम्बरधारिणी जय सुखदे वरदे, देवी जय सुखदे वरदे।

भक्तजनानां क्लेशं भक्तजनानां क्लेशं सततं दूर करें।।

ऊँ जय बगलामुखी माता....

असुरैः पीड़ितदेवास्तव शरणं प्राप्ताः, देवीस्तव शरणं प्राप्ताः।

धृत्वा कौर्मशरीरं धृत्वा कौर्मशरीरं दूरीकृतदुःखम्।।

ऊँ जय बगलामुखी माता....

मुनिजनवन्दितचरणे जय विमले बगले, देवी जय विमले बगले।

संसारार्णवभीतिं संसारार्णवभीतिं नित्यं शान्तकरे।।

ऊँ जय बगलामुखी माता....

नारदसनकमुनीन्द्रै ध्यातं पदकमलं देवीध्यातं पदकमलं।

हरिहरद्रुहिणसुरेन्द्रैः हरिहरदुरुहिणसुरेन्द्रैः सेवितपदयुगलम्।। ऊँ जय बगलामुखी माता....

कांचनपीठनिविष्टे मुद्गरपाशयुते, देवी मुद्गरपाशयुते।

जिव्हावज्रसुशोभित जिव्हावज्रसुशोभित पीतांशुकलसिते।।

ऊँ जय बगलामुखी माता....

बिन्दु त्रिकोण षडस्त्रै अष्टदलोपरिते, देवी अष्टदलोपरिते।

षोडशदलगतपीठं षोडशदलगतपीठं भूपुरवृŸयुतम्।।

ऊँ जय बगलामुखी माता....

इत्थं साधकवृन्दं चिन्तयते रूपं देवी चिन्तयते रूपं।

शत्रुविनाशकबीजं शत्रुविनाशकबीजं धृत्वा हृत्कमले।।

ऊँ जय बगलामुखी माता....

अणिमादिकबहसिद्धिं लभते सौख्ययुतां, देवी लभते सौख्ययुतां।

अब क्षमा प्रार्थना करें

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।

यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।

अंत में माता बगलामुखी से ज्ञात-अज्ञात शत्रुओं से मुक्ति की प्रार्थना करें।

बगलामुखी साधना की सावधानियां

~~ मंत्र महोदधि में बगलामुखी साधना के बारे में विस्तार से दिया हुआ है। साधना में सावधानियां बगलामुखी तंत्र के विषय में बतलाया गया है – बगलासर्वसिद्धिदा सर्वाकामना वाप्नुयात'

अर्थात बगलामुखी देवी का स्तवन पूजा करने वालों की सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं। 'सत्ये काली च अर्थात बगला शक्ति को त्रिशक्तिरूपिणी माना गया है। वस्तुतः बगलामुखी की साधना में साधक भय से मुक्त हो जाता है। किंतु बगलामुखी की साधना में कुछ विशेष सावधानियां बरतना अनिवार्य है जो इस प्रकार हैं। पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। साधना क्रम में स्त्री का स्पर्श या चर्चा नहीं करनी चाहिए। साधना डरपोक या बच्चों को नहीं करनी चाहिए।

बगलामुखी देवी अपने साधक को कभी-कभी भयभीत भी करती हैं। अतः दृढ़ इच्छा और संकल्प शक्ति वाले साधक ही साधना करें। साधना आरंभ करने से पूर्व गुरु का ध्यान और पूजा अनिवार्य है। बगलामुखी के भैरव मृत्युंजय हैं। अतः साधना से पूर्व महामृत्यंजय का कम से कम एक माला जप अवश्य करें। वस्त्र, आसन आदि पीले होने चाहिए। साधना उत्तर की ओर मुंह कर के ही करें। मंत्र जप हल्दी की माला से करें। जप के बाद माला गले में धारण करें। ध्यान रखें, साधना कक्ष में कोई अन्य व्यक्ति प्रवेश न करे, न ही कोई माला का स्पर्श करे। साधना रात्रि के 8.00 से भोर 3.00 बजे के बीच ही करें। मंत्र जप की संख्या अपनी क्षमतानुसार निश्चित करें, फिर उससे न तो कम न ही अधिक जप करें। मंत्र जप 16 दिन में पूरा हो जाना चाहिए। मंत्र जप के लिए शुक्ल पक्ष या नवरात्रि सर्वश्रेष्ठ समय है। मंत्र जप से पहले संकल्प हेतु जल हाथ में लेकर अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से बोल कर व्यक्त करें। साधना काल में इसकी चर्चा किसी से न करें। साधना काल में अपने बायीं ओर तेल का तथा अपने दायीं ओर घी का अखंड दीपक जलाएं।

उपासना विधि :- किसी भी शुभ मुहूर्त में सोने, चांदी, या तांबे के पत्र पर मां बगलामुखी के यंत्र की रचना करें। यंत्र यथासंभव उभरे हुए रेखांकन में हो। इस यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा कर नियमित रूप से पूजा करें। इस यंत्र को रविपुष्य या गुरुपुष्य योग में मां बगलामुखी के चित्र के साथ स्थापित करें। फिर सब से पहले बगला माता का ध्यान कर विनियोग करें गणेशजी का पूजन, संकल्प, गुरुजी का पूजन, पंचदेवता पूजन, भैरव पूजन, भूतशुद्धि, कलशस्थापन प्राणप्रतिस्ठा, पीठमातृका न्यास, पीठपूजन करें।

1. बगलामुखी साधना के दौरान पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना अत्यधिक आवश्यक है।

2. इस क्रम में स्त्री का स्पर्श, उसके साथ किसी भी प्रकार की चर्चा या सपने में भी उसका आना पूर्णतः निषेध है। अगर आप ऐसा करते हैं तो आपकी साधना खण्डित हो जाती है।

3. किसी डरपोक व्यक्ति या बच्चे के साथ यह साधना नहीं करनी चाहिए। बगलामुखी साधना के दौरान साधक को डराती भी है। साधना के समय विचित्र आवाजें और खौफनाक आभास भी हो सकते हैं इसीलिए जिन्हें काले अंधेरों और पारलौकिक ताकतों से डर लगता है, उन्हें यह साधना नहीं करनी चाहिए।

4. साधना से पहले आपको अपने गुरू का ध्यान जरूर करना चाहिए।

5. मंत्रों का जाप शुक्ल पक्ष में ही करें। बगलामुखी साधना के लिए नवरात्रि सबसे उपयुक्त है।

6. उत्तर की ओर देखते हुए ही साधना आरंभ करें।

7. मंत्र जाप करते समय अगर आपकी आवाज अपने आप तेज हो जाए तो चिंता ना करें।

8. जब तक आप साधना कर रहे हैं तब तक इस बात की चर्चा किसी से भी ना करें।

9. साधना करते समय अपने आसपास घी और तेल के दिये जलाएं।

10. साधना करते समय आपके वस्त्र और आसन पीले रंग का होना चाहिए।

11. मन्त्र ज्ञात ब्राह्मण सज्जन देवी के पूजन में वैदिक मंत्रों का ही प्रयोग करें।

यह विद्या शत्रु का नाश करने में अद्भुत है, वहीं कोर्ट, कचहरी में, वाद-विवाद में भी विजय दिलाने में सक्षम है। इसकी साधना करने वाला साधक सर्वशक्ति सम्पन्न हो जाता है। उसके मुख का तेज इतना हो जाता है कि उससे आँखें मिलाने में भी व्यक्ति घबराता है। सामनेवाले विरोधियों को शांत करने में इस विद्या का अनेक राजनेता अपने ढंग से इस्तेमाल करते हैं। यदि इस विद्या का सदुपयोग किया जाए तो देशहित होगा।

मंत्र शक्ति का चमत्कार हजारों साल से होता आ रहा है। कोई भी मंत्र आबध या किलित नहीं है यानी बँधे हुए नहीं हैं। सभी मंत्र अपना कार्य करने में सक्षम हैं। मंत्र का सही विधि द्वारा जाप किया जाए तो वह मंत्र निश्चित रूप से सफलता दिलाने में सक्षम होता है।

ब्रह्मांड की सबसे कठिन परीक्षा: जब भक्त ने भगवान की छाती पर प्रहार किया

पिंकी कुंडू

यह केवल एक कथा नहीं, बल्कि सहनशीलता, क्षमा और प्रेम की वह पराकाष्ठा है जिसने तिरुमला के भगवान वेंकटेश्वर की लीला की नींव रखी।

1. ऋषियों का महा-सम्मेलन और एक प्रश्नः सरस्वती नदी के पवित्र तट पर एक विशाल यज्ञ का आयोजन हो रहा था। महान तपस्वी, ज्ञानी और ऋषि-मुनि एकत्रित थे। यज्ञ की पूर्णाहूति के समय एक धर्मसंकट आ खड़ा हुआ —"₹इस महायज्ञ का प्रधान फल किसे अर्पित किया जाए ?"

सृष्टि में तीन महाशक्तियां हैं—

* ब्रह्मा (सृजनकर्ता)
* शिव (संहारक)
* विष्णु (पालनहार)

प्रश्न था कि इन तीनों में 'त्रिगुणातीत' (तीनों गुणों से परे) और 'परम सात्विक' कौन है?

जो क्रोध और अहंकार से मुक्त हो, वही इस यज्ञ का फल पाने का अधिकारी होगा।

निर्णय लेने का भार महर्षि भृगु को सौंपा गया। वे स्वयं ब्रह्माजी के मानस पुत्र थे, परम ज्ञानी थे, किन्तु क्रोधी स्वभाव के भी थे। भृगु जी ने स्वीकार किया—₹मैं तीनों लोकों में जाकर उनकी परीक्षा लूँगा।₹

महर्षि भृगु सबसे पहले अपने पिता ब्रह्मा जी के पास सत्यलोक पहुँचे।

वहाँ ब्रह्मा जी दरबार में बैठे थे। भृगु ने जानबूझकर न उन्हें प्रणाम किया, न उनकी स्तुति की और न ही कोई सम्मान दिया। वे चुपचाप जाकर एक आसन पर बैठ गए।

पुत्र की ऐसी धृष्टता देख ब्रह्मा जी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उन्होंने सोचा, ₹मैं इसका पिता हूँ, जगत का रचयिता हूँ, और यह मेरा अपमान कर रहा है?"

यद्यपि उन्होंने वाणी से कुछ नहीं कहा, परन्तु उनके मन में 'रजोगुण' (अहंकार और क्रोध) का ज्वार उठ खड़ा हुआ। भृगु ऋषि ने अपने तपोबल से उनके मन के भाव पढ़ लिए।

भृगु ने सोचा— ₹यहाँ मान-सम्मान की अपेक्षा है। जहाँ रजोगुण है, वहाँ परम शांति नहीं हो सकती।₹ वे बिना कुछ बोले वहाँ से चल दिए।

इसके बाद भृगु ऋषि बर्फीले कैलाश पर्वत पहुँचे।

वहाँ भगवान शिव अपने गणों और माता पार्वती के साथ बैठे थे। जैसे ही शिव जी ने अपने भाई (भृगु भी ब्रह्मा के पुत्र होने के नाते शिव के भाई तुल्य थे) को आते देखा, वे प्रसन्नता से उन्हें गले लगाने के लिए आगे बढ़े।

किंतु भृगु ने पीछे हटते हुए अपमानजनक शब्द कहे— ₹ठहरिये महादेव! आप शमशान वासी हैं, भस्म रमाते हैं, आप वेद-मर्यादा से बाहर हैं। मुझे स्पर्श मत कीजिये।"

भगवान शिव का प्रेम क्षण भर में प्रलयंकारी क्रोध में बदल गया। उनका तीसरा नेत्र खुलने को हुआ, हाथ में त्रिशूल चमक उठा। वे भृगु को भस्म करने ही वाले थे कि माता पार्वती ने उनके चरण पकड़ लिए और उन्हें शांत किया।

भृगु ने जान लिया— ₹यहाँ 'तमोगुण' (शीघ्र क्रोध) का वास है। जो इतनी जल्दी क्रोधित हो जाए, वह सृष्टि का सर्वोच्च पालक नहीं हो सकता।"

अंत में, महर्षि भृगु वैकुंठ धाम पहुँचे। यहाँ का वातावरण अद्भुत था।

भगवान नारायण शेषनाग की शैया पर योगनिद्रा में लीन थे। माता लक्ष्मी अत्यंत प्रेम से उनके चरण दबा रही थीं। भृगु ऋषि को लगा कि भगवान उन्हें देखकर भी अनदेखा कर रहे हैं (जबकि वे सो रहे थे)।

ऋषि का क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया। उन्होंने सोचा— "मैं एक ब्राह्मण द्वार पर खड़ा हूँ और यह सोने का नाटक कर रहे हैं? मुझे इनका अहंकार तोड़ना होगा।"

तभी वह अकल्पनीय घटना घटी जिसने तीनों लोकों को कम्पित कर दिया।

महर्षि भृगु ने आव देखा न ताव, दौड़कर भगवान विष्णु की वज्र समान कठोर छाती पर एक जोरदार लात मारी।

लात लगते ही भगवान नारायण हड़बड़ाकर जाग उठे।

सामने भृगु ऋषि को क्रोध में खड़ा देख, भगवान को न क्रोध आया, न ही उन्होंने दंड दिया। इसके विपरीत, वे जल्दी से शैया से उतरे और भृगु ऋषि के चरणों में गिर पड़े।

नारायण ने भृगु के पैर अपने हाथों में ले लिए और बड़े प्यार से सहलाते हुए बोलेः

> "हे ब्रह्मर्षि! क्षमा करें। मुझे आपके आगमन का पता नहीं चला। मेरी छाती तो वज्र की तरह कठोर है और आपके चरण कमल की पंखुड़ी की तरह कोमल हैं। कहीं मेरे कठोर वक्षस्थल से आपके कोमल चरणों में चोट तो नहीं आई?"

> भगवान नारायण धीरे-धीरे उनके पैर दबाने लगे।

यह दृश्य देखकर भृगु ऋषि सन्न रह गए। उनका सारा क्रोध, सारा अहंकार पानी की तरह बह गया। उनकी आँखों से पश्चाताप के आँसू बहने लगे। वे समझ गए कि जो अपमान करने वाले के प्रति भी इतनी दया रखे, वही वास्तव में 'सर्वोत्तम' है।

जहाँ भृगु ऋषि नतमस्तक थे, वहीं माता लक्ष्मी का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था।

उन्होंने भगवान विष्णु से कहा —"स्वामी! यह कैसी उदारता?

इसने आपके वक्षस्थल पर प्रहार किया है। और हृदय तो पत्नी का निवास स्थान होता है। इस ऋषि ने आपकी छाती पर नहीं, मेरे घर पर लात मारी है, मेरे सौभाग्य का अपमान किया है। और आप उसे दंड देने के बजाय उसके चरण दबा रहे हैं?"

विष्णु जी ने मुस्कुराकर कहा — "देवी, ऋषियों का क्रोध भी आशीर्वाद होता है। क्षमा ही मेरा धर्म है।"

किंतु देवी लक्ष्मी का स्वाभिमान आहत हो चुका था। उन्होंने कहा — "जहाँ मेरे स्वामी का अपमान हो और उसे सहन कर लिया जाए, मैं उस स्थान पर एक क्षण भी नहीं रह सकती।"

उसी क्षण, माता लक्ष्मी वैकुंठ त्यागकर पृथ्वी लोक पर चली गईं। (यही वह घटना थी जिसके कारण भगवान विष्णु को लक्ष्मी जी को ढूँढने के लिए 'श्रीनिवास' बनकर पृथ्वी पर आना पड़ा और तिरुपति बालाजी की कथा का आरंभ हुआ।)

भृगु ऋषि ने लौटकर ऋषियों की सभा में घोषणा की:

>"मैंने तीनों लोकों को देखा है। ब्रह्मा जी मान चाहते हैं, शिव जी अपमान नहीं सह सकते, किन्तु नारायण ही ऐसे हैं जिन्होंने अपमान का बदला करुणा और प्रेम से दिया। अतः वही सर्वश्रेष्ठ हैं, वही सत्त्वगुणी हैं।"

>बड़प्पन शक्ति दिखाने में नहीं, बल्कि सहन करने और क्षमा करने में है। जो झुकता है, वही पूरी दुनिया को झुकाने की ताकत रखता है।

।।ॐ नमो नारायण।।

8वां वेतन आयोग लागू, केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनरों की सैलरी व पेंशन बढ़ी

संगिनी घोष विशेष संवाददाता परिवहन विशेष

आज से 8वां वेतन आयोग लागू हो गया है, जिससे देश भर के केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों और पेंशनरों को राहत मिली है। इसके लागू होने से सैलरी, पेंशन, महंगाई भत्ता और अन्य सुविधाओं में बढ़ोतरी हुई है। इससे लाखों कर्मचारियों और रिटायर्ड लोगों को बढ़ती महंगाई से निपटने में मदद मिलेगी।

नए वेतन आयोग के तहत कर्मचारियों का बेसिक वेतन और दूसरी सुविधाओं में भी बदलाव किया गया है ताकि आज के खर्चों के अनुसार फायदा मिल सके। पेंशनरों की पेंशन और महंगाई राहत भी बढ़ाई गई है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

8वें वेतन आयोग को लागू करने से पहले सरकार ने कर्मचारी संगठनों और विशेषज्ञों से बातचीत की थी। सरकार का मकसद कर्मचारियों को सही वेतन देना और साथ ही देश के बजट का ध्यान रखना है। खास तौर पर छोटे और मध्यम स्तर के कर्मचारियों पर ध्यान दिया गया है, ताकि वेतन का अंतर कम हो और संतोष बढ़े।

सैलरी और पेंशन बढ़ने से लोगों के पास खर्च करने के लिए ज्यादा पैसा होगा, जिससे घर, सामान और सेवाओं पर खर्च बढ़ सकता है। इससे देश की अर्थव्यवस्था को भी फायदा होने की उम्मीद है। हालांकि, सरकार पर खर्च का बोझ भी बढ़ेगा, इसलिए सही योजना बनाना जरूरी होगा। सरकार ने कहा है कि जो भी बकाया राशि है, उसे तय समय पर दिया जाएगा और सभी विभागों को सही तरीके से लागू करने के निर्देश दे दिए गए हैं। ज्यादातर कर्मचारी और पेंशनर इस फैसले से खुश हैं, हालांकि कुछ छोटे मुद्दों पर आगे चर्चा हो सकती है।

कुल मिलाकर, 8वें वेतन आयोग का लागू होना एक अहम कदम है, जिससे सरकारी कर्मचारियों और पेंशनरों की आय बढ़ेगी और वेतन व्यवस्था को आज के समय के अनुसार बेहतर बनाया गया है।

नववर्ष : आत्ममंथन, आत्मनिर्माण से विजयध्वज तक

नव वर्ष दस्तक देता है चुपचाप,
न कोई शोर, न कोई दावा,
बस पूछता है हमसे इतना—
क्या बदलेगा हम में वक़्त का नज़रिया?
बीते कल को दोष न दें,
वह शिक्षक था, शत्रु नहीं,
हर ठोकर ने गढ़ा हमें,
हर हार बनी नई कहानी।
नया साल कहता है—
तेज़ नहीं, मजबूती सह चलो,
ऊँचा नहीं, सार्थक बनो,
जीतो नहीं, योगदान दो।
जहाँ शब्द नहीं, आचरण बोले,
जहाँ सत्ता नहीं, निश्छल सेवाभाव हो,
जहाँ भीड़ नहीं, विवेक चले,
और हर निर्णय में मानवता की मिसाल हो।
नववर्ष यह भी सिखलाए—
सफलता केवल अर्जित में नहीं,
अर्पण करने में भी होती है,
अहंकार, लालच और भय को।
चलो ऐसे समाज की स्वतः नींव रखें—
जहाँ भूख शर्मिंदा हो जाए,

व न्याय प्रतीक्षा न करे – स्वतः मिले,
और सच को सुरक्षा मिल जाए।
नया वर्ष कोई परिकल्पना नहीं,
यह हमसे ही आकार लेता है,
हम जैसे सोचते, बोलते, करते हैं,
वही तो आने वाला कल स्वयं बनता है।

इस नववर्ष संकल्प लें—
कम बोलें, अधिक करें,
कम चाहें, अधिक दें,
और जो हैं, उसमें ही संतोष रखें।
नववर्ष आपके जीवन में समृद्धि, ऐश्वर्य, प्रेम,
मानवता, स्पष्टता, साहस और विजय पताका
की रोशनी लेकर आए

सीएम नायब सैनी की कैबिनेट के फैसलों पर प्रेस कॉन्फ्रेंस

पिंकी कुंडू

सीएम ने प्रदेशवासियों को नए साल की बधाई एवं शुभकामनाएं दी

नया साल सुख सम्रद्धि लेकर आने की कामना करता हूँ

कैबिनेट में आज 6 एजेंडे थे सभी को मंजूरी दी गई

पंचकूला में गऊशाला के लिए भूमि पट्टे को मंजूरी कैबिनेट ने दी है

बरवाला के रतेवाली गांव में कामधेनु गौ सेवा समिति को 4 एकड़ जमीन देने की मंजूरी दी है

परिवहन विभाग में 2002 में कॉन्ट्रेक्ट पर जो ड्राइवर थे उन्हें तमाम वित्तिय लाभ देने का फैसला कैबिनेट ने किया है

इन ड्राइवर को शुरुआती तारीख से नियमित मानकर सभी लाभ दिया जाएगा--सीएम

सीएम ने कहा स्वर्गीय संदीप ASI की पत्नी संतोष को सरकारी नौकरी देने पर मंत्री मंडल ने फैसला किया है

संतोष को पीजीटी एमडीयू के कैम्पस स्कूल में नियमो के मुताबिक दी गई है--सीएम

कच्ची कॉलोनी में की जमीन ट्रांसफर करके गलत तरीके से जो रजिस्ट्री करवाई जा रही थी वो अब नही होगी-- सीएम

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण को आगे बढ़ाया गया है विशेष योजना शुरू की गई है--सीएम

सीएम ने कहा इसी को आगे बढ़ाते हुए हरियाणा में आज बेटियों के लिए शुरू की गई योजना का विस्तार किया गया है

आज इस योजना में कुछ नई श्रेणियों को जोड़ने की मंजूरी दी है

इस लाडो लक्ष्मी योजना का लाभ उन महिलाओं को मिलेगा जिनके बच्चों के 10 वी और 12 वीं में 80 प्रतिशत से अधिक नम्बर है

ऐसी महिलाओं को भी 2100 रुपये की राशि मिलेगी-- सीएम

कुपोषण और एनीमिया से ग्रसित बच्चों को जिन माताओं ने बहार निकाला है उनको भी लाडो लक्ष्मी योजना का 2100 रुपये का लाभ मिलेगा

महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की पहल की गई है

1100 रुपए सीधे महिलाओं को मिलेगी 1000 हजार राशि सरकार डिपॉजिट करेगी जो ब्याज सहित मिलेगा--सीएम

लाभार्थी की असामयिक मृत्यु पर डिपॉजिट राशि नोमनी को तुरंत जारी की जाएगी-- सीएम

दीन दयाल लाडो लक्ष्मी योजना के तहत 10 लाख 255 महिलाओं ने आवेदन किया है

प्रदेश में 8 लाख को सहायता राशि मिल रही है बाकी की वेरिफिकेशन चल रही है

250 करोड़ की सहायता दो किस्तों में अब तक दी गई है-- सीएम

2014 से पहले लिंगानुपात चिंताजनक था

इसके बाद प्रधानमंत्री ने पानीपत में 2015 से बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की शुरुआत की

2025 में अब हरियाणा का लिंगानुपात 923 तक पहुंच गया है--सीएम

सीएम ने कहा PNDT एक्ट के तहत सरकार ने कड़ी कार्रवाई की है।

मंगल गान के मध्य धूमधाम से प्रारंभ हुआ प्रियावल्लभ लाल जू महाराज का त्रिदिवसीय 212 वां पाटोत्सव

महोत्सव के अंतर्गत फोगला में चल रही श्रीमद्भागवत कथा में श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च ने प्रथम दिन श्रवण कराई महात्म्य की कथा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन।छीपी गली स्थित श्रीप्रिया वल्लभ कुंज में श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) के द्वारा अठारहवीं शताब्दी के रस सिद्ध संत, प्रख्यात वाणीकार श्रीहित परमानंद दास महाराज एवं उनकी शिष्या महारानी बखत कुंवरि (प्रिया सखी) जू के सेव्य ठाकुरश्री विजय राधावल्लभ लाल व ठाकुरश्री प्रियावल्लभ लाल जू महाराज का त्रिदिवसीय 212 वां पाटोत्सव विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ प्रारम्भ हो गया है।महोत्सव का शुभारंभ मंगल गान के मध्य श्रीराधा वल्लभीय सांप्रदायचार्य गोस्वामी श्रीहित गोविंद लाल महाराज, आचार्य सुकृत लाल गोस्वामी महाराज एवं रसिक संत श्यामसुंदर दास के कर-कमलों द्वारा श्रीहित हरिवंश नामांकित ध्वजा पूजन एवं अखंड श्रीहरिनाम संकीर्तन के साथ हुआ।

मंदिर सेवायत आचार्य विष्णुमोहन नागार्च, प्रख्यात भागवताचार्य श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च एवं आचार्य रसिक वल्लभ नागार्च ने वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य महाराजश्री के चरण कमलों की पूजा अर्चना की।इसके साथ ही श्रीराधा सुधा निधि, हित चतुरासी, हित सेवक वाणी आदि के मूल पाठ भी प्रारंभ हो गए हैं।

महोत्सव के अंतर्गत फोगला आश्रम में 170 श्रीमद्भागवत के मूलपाठ के साथ दिव्य श्रीमद्भागवत कथा प्रारंभ हुई।जिसका शुभारंभ श्रीराधावल्लभीय संप्रदायाचार्य टिकैत अधिकारी गोस्वामी मोहित मराल महाराज ने दीप प्रज्वलन करके किया। तत्पश्चात व्यास पीठ पर आसीन श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च ने अपनी रसमयी वाणी के द्वारा देश-विदेश से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को व्यासजी महाराज द्वारा रचित श्रीमद्भागवत महापुराण के महात्म्य की कथा का रसास्वादन कराया।इससे पूर्व श्रीप्रियावल्लभ कुंज से फोगला आश्रम तक गाजे-बाजे के मध्य श्रीमद्भागवतजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी।जिसमें सैकड़ों महिलाएं पीत वस्त्र पहने व सिर पर मंगल कलश धारण किए साथ चल रही थी।साथ ही असंख्य भक्त-श्रद्धालु श्रीहरिनाम संकीर्तन करते हुए शामिल हुए।

रात्रि को प्रख्यात भजन गायक मुकुल द्विवेदी के द्वारा संगीतमय श्रीराधा नाम संकीर्तन की भावमयी प्रस्तुति दी गई।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी, संत प्रवर रामदास महाराज (अयोध्या), भाजपा नेत्री श्रीमती पिंकी द्विवेदी, महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीमती सिंधु-मुकेश गोयल (रायपुर, छत्तीसगढ़), श्रीमती अनिता-कमल अग्रवाल, श्रीमती कौशल-अमिताभ अग्रवाल, श्रीमती मिताली-दीपक अग्रवाल, श्रीमती कृष्णा-कैलाश अग्रवाल, श्रीमती निशा-अंकित अग्रवाल, तरुण मिश्रा, भरत शर्मा, हितवल्लभ नागार्च आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

आधुनिक डिजिटल युग में संवैधानिक, लोकतांत्रिक नागरिकता व युवा भारत के दृष्टिकोण में, मनमुख, गुरमुख व सनमुख स्वभाव-एक समग्र अंतरराष्ट्रीय विश्लेषण

लोकतांत्रिक देश में ज़ब नागरिक मनमुख स्वभाव से संचालित होते हैं,तो लोकतंत्र अधिकारों की भीड़ बन जाता है ;परंतु जब वे गुरमुख व सनमुख होते हैं, तो लोकतंत्र लोक-कल्याण का जीवंत तंत्र बनता है- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर मनुष्य का जीवन केवल उसकी शिक्षा, धन या पद से नहीं, बल्कि उसके स्वभाव से संचालित होता है।इतिहास गवाह है कि जिन व्यक्तियों, समाजों और राष्ट्रों ने अपने स्वभाव को अनुशासन, नैतिकता और उच्च मूल्यों से जोड़ा, वे दीर्घकालीन सफलता के प्रतीक बने।भारतीय दर्शन में मानव स्वभाव को समझाने के लिए मनमुख,गुरमुख और सनमुख जैसे गहन और सार्वकालिक सिद्धांत दिए गए हैं। ये अवधारणाएँ केवल धार्मिक नहीं, बल्कि वैश्विक मानव व्यवहार विज्ञान की भी कसौटी पर खरी उतरती हैं। आज जब विश्व नेतृत्व संकट, नैतिक पतन, मानसिक तनाव और मूल्य- संक्रमण से गुजर रहा है, तब इन स्वभावों का विश्लेषण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और भी प्रासंगिक हो जाता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ क़ि किसी भी लोकतंत्र की सफ़लता केवल उसके संविधान की सुंदर भाषा या संस्थाओं की मजबूती से तय नहीं होती, बल्कि इस बात से तय होती है कि उसके नागरिकों का स्वभाव कैसा है। संविधान नागरिकों को अधिकार देता है, परंतु यह अपेक्षा भी करता है कि नागरिक विवेकशील,उत्तरदायी और नैतिक होंगे। जब नागरिक मनमुख स्वभाव से संचालित होते हैं, तो लोकतंत्र अधिकारों की भीड़ बन जाता है; और जब वे गुरमुख व सनमुख होते हैं, तो लोकतंत्र लोक-कल्याण का जीवंत तंत्र बनता है।

साथियों बात अगर हम मनमुख से गुरमुख सनमुख की यात्रा क़ो संविधान, लोकतंत्र और नागरिकता के संदर्भ में समझने की करें तो (1) मनमुख स्वभाव और लोकतंत्र का क्षरण-मनमुख नागरिक वह है जो संविधान को केवल अपने हित के औज़ार की तरह देखता है। उसे अधिकार याद रहते हैं,कर्तव्य नहीं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो लोकतंत्रों में बढ़ता ध्रुवीकरण, हिंसक असहमति, टैक्स चोरी, सार्वजनिक संपत्ति का दुरुपयोग, ये सभी मनमुख नागरिकता के लक्षण हैं।जब,₹मैं₹ राष्ट्र से ऊपर हो जाता है, तब संविधान की आत्मा कमजोर पड़ती है।(2) गुरमुख नागरिकताः- संवैधानिक विवेक की नींव गुरमुख नागरिक संविधान को अपना नैतिक गुरु मानता है। वह कानून के शब्दों के साथ-साथ उसके उद्देश्य को भी समझता है,न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व। ऐसा नागरिक मतदान को केवल अधिकार नहीं, बल्कि जिम्मेदारी मानता है। विश्व के सफल लोकतंत्रों में नागरिकों का यही गुरमुख स्वभाव संस्थाओं को मजबूत बनाता है।(3) सनमुख लोकतंत्रःअधिकार से आगे मानवता सनमुख नागरिकता लोकतंत्र को केवल राष्ट्र तक सीमित नहीं रखती,बल्कि उसे वैश्विक मानवता से जोड़ती है। पर्यावरण संरक्षण, अल्पसंख्यक अधिकार,शरणार्थी संवेदनशीलता ये सब सनमुख दृष्टि के बिना संभव नहीं। यही दृष्टि संविधान को मानव गरिमा का वैश्विक दस्तावेज़ बनाती है।इसलिए हम कर सकते हैं क़ियदि नागरिक मनमुख रहेंगे, तो संविधान केवल किताब बनेगा; यदि नागरिक गुरमुख बनेंगे, तो संविधान व्यवस्था बनेगा;और यदि नागरिक सनमुख बनेंगे, तो संविधान मानवता का पथप्रदर्शक बनेगा।

साथियों बात अगर हम,मनमुख से गुरमुख, सनमुख की यात्रा क़ो भारत के भविष्य युवाओं से जोड़कर समझने की करें तो, युवा ही राष्ट्र का स्वभाव हैं।आज का युवा केवल कल का नागरिक नहीं, बल्कि आज का निर्णायक है। उसका स्वभाव तय करेगा कि भविष्य में राष्ट्र कैसा होगा। यदि युवा मनमुख है, तो तकनीक भी विनाश का औज़ार बनेगी;और यदि युवा गुरमुख-सनमुख है, तो वही तकनीक मानवता की सेवा करेगी। (1) मनमुख युवाः तात्कालिक सफलता का भ्रम-आज का युवा यदि केवल त्वरित प्रसिद्धि, आसान पैसा और सोशल मीडिया की वाहवाही के पीछे भागता है, तो वह मनमुखता की ओर बढ़ रहा है।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानसिक तनाव,अवसाद और उद्देश्यहीनता इसी का परिणाम हैं। मनमुख युवा प्रतियोगिता तो जीतना चाहता है, पर धैर्य नहीं रखना चाहता।(2) गुरमुख युवाः कौशल के साथ संस्कार-गुरमुख युवा वह है जो सीखने को गुरु मानता है,शिक्षक,अनुभव, असफलता और अनुशासन को।वह जानता है कि वास्तविक सफलता रातों-रात नहीं आती। विश्व के नवाचार, स्टार्ट-अप और शोध नेतृत्व इसी स्वभाव से निकले हैं। (3) सनमुख युवाः करियर से आगे योगदान- सनमुख युवा अपने करियर को समाज से जोड़ता है। वह पूछता है-मैं क्या बनूँ? के साथ-साथ मैं किसके काम आऊँ? यही युवा जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता और शांति प्रयासों में नेतृत्व करता है।

साथियों बात अगर हम,मनमुख से गुरमुख, सनमुख की यात्रा क़ो प्रशासनिक, आध्यात्मिक समन्वित स्थिति सुशासन का बाहरी अनुशासन और आत्मशासन की आंतरिक शक्ति इस रूप में समझने की करें तो, शासन की गुणवत्ता शासक के स्वभाव से ही अधिक सफल होने की संभावना रखती है,प्रशासन केवल नियमों से नहीं, बल्कि प्रशासक के स्वभाव से चलता है। इतिहास बताता है कि जब प्रशासक मनमुख होता है, तो नियम भी भ्रष्ट हो जाते हैं; और जब वह गुरमुख-सनमुख होता है, तो सीमित संसाधनों में भी सुशासन संभव हो जाता है।(1) मनमुख प्रशासनः-सत्ता का अहंकार -मनमुख प्रशासक पद को अधिकार समझता है, सेवा नहीं। इससे लालफीताशाही, भ्रष्टाचार और जन-अविश्वास जन्म लेता है। वैश्विक स्तर पर प्रशासनिक विफलताओं का मूल कारण यही स्वभाव है।(2) गुरमुख प्रशासनः-नियम +विवेक गुरमुख प्रशासक नियमों को गुरु मानता है, पर विवेक से काम लेता है। वह संविधान, कानून और नीति को आत्मसात करता है। ऐसे प्रशासन से नागरिकों का विश्वास बढ़ता है और संस्थाएँ सशक्त होती हैं। (3) सनमुख नेतृत्वः- सत्ता से सेवा तक- सनमुख प्रशासक सत्ता को साधना मानता है। वह निर्णय लेते समय सबसे कमजोर व्यक्ति को ध्यान में रखता है। यही आध्यात्मिक चेतना प्रशासन को मानवीय बनाती है, जहाँ फाइलों के पीछे चेहरे दिखते हैं।

साथियों बात हम मनमुख,गुरमुख और सनमुख स्वभाव को समझने की करें तो, (1) मनमुख स्वभाव का तात्पर्य है ऐसा व्यक्ति जो केवल अपने मन, इच्छा, वासना, अहंकार और तात्कालिक लाभ के अनुसार निर्णय लेता है। वह न तो विवेक को महत्व देता है, न ही गुरु, समाज, शास्त्र या नैतिक मूल्यों को। आधुनिक वैश्विक संस्कृति में यह स्वभाव उपभोक्तावाद भोगवाद और अति-व्यक्तिवाद के रूप में व्यापक रूप से दिखाई देता है।राजनीति और शासन में मनमुख प्रवृत्ति के दुष्परिणाम व त्रासदी भयंकर प्रमाण में होती है।अंतरराष्ट्रीय राजनीति में जब शासक मनमुख स्वभाव से निर्णय लेते हैं, तो सत्ता अहंकार, भ्रष्टाचार और युद्ध को जन्म देती है। इतिहास में कई साम्राज्य केवल इसलिए गिरे क्योंकि उनके नेतृत्व ने जनकल्याण की बजाय व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा को चुना। यह स्वभाव राष्ट्रों को भी अस्थिर कर देता है। (2) गुरमुख स्वभाव का अर्थ है,गुरु,विवेक,ज्ञान और नैतिक मार्गदर्शन के अनुसार जीवन जीना। यहाँ 'गुरु' केवल व्यक्ति विशेष नहीं, बल्कि सत्य, अनुभव, संविधान, नैतिकता और सामूहिक विवेक का प्रतीक है। गुरमुख व्यक्ति अपने मन को अनुशासित करता है, न कि उसका दास बनता है।जब शासन गुरमुख स्वभाव से चलता है, तो नीति-निर्माण में पारदर्शिता, जवाबदेहीऔर न्याय प्राथमिकता बनते हैं। संविधान भी एक प्रकार का 'गुरु' है, जो सत्ता को मर्यादा में रखता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुशासन के सफल मॉडल इसी सिद्धांत पर आधारित हैं।(3) सनमुख स्वभाव का अर्थ है,सत्य, सद्गुण, सेवा और सार्वभौमिक मानव मूल्यों की ओर उन्मुख होना। यह स्वभाव गुरमुख से भी आगे जाकर व्यक्ति को स्वार्थ से परमार्थ की यात्रा पर ले जाता है। यहाँ व्यक्ति केवल अपने या अपने समाज के बारे में नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण के बारे में सोचता है।आज़ जब जलवायु परिवर्तन, युद्ध, शरणार्थी संकट और असमानता जैसी वैश्विक समस्याएँ सामने हैं, तब सनमुख स्वभाव की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। यह स्वभाव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को व्यवहार में उतारता है।अंतरराष्ट्रीय मानवतावादी संगठनों चिकित्सकों शिक्षकों और स्वयंसेवकों में यह स्वभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यही स्वभाव विश्व को अधिक मानवीय बनाता है।सनमुख स्वभाव किसी एक धर्म या परंपरा तक सीमित नहीं है। यह एक सार्वभौमिक नैतिक चेतना है, जो आधुनिक विज्ञान, तकनीक और विकास के साथ भी सामंजस्य बिठा सकती है। यह व्यक्ति को भीतर से मजबूत और बाहर से उपयोगी बनाता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि सुशासन यानें बाहरी अनुशासन (कानून) आंतरिक अनुशासन यानें स्वभाव, मनमुख से सत्ता बिगड़ती है, गुरमुख से व्यवस्था चलती है, और सनमुख से इतिहास बनता है।आओ, मनमुख स्वभाव छोड़ें।गुरमुख बनकर विवेक अपनाएँ।सनमुख बनकर मानवता को प्राथमिकता दें। यही व्यक्तिगत सफलता, सुशासन और विश्व-कल्याण का साझा मार्ग है।

संवेदनशीलता, साफगोई और ईमानदार इंसान होना ही बड़ा कवि होने की शर्त है : विनोद कुमार शुक्ल, नासिर अहमद सिकंदर और रज़ा हैदरी को श्रद्धांजलि

(रिपोर्ट : पूर्णचंद्र रथ)

रायपुर। वर्ष 2025 ने जाते-जाते छत्तीसगढ़ के साहित्य जगत की ऐसी तीन कद्दावर हस्तियों को छीन लिया, जिनका स्थान हमेशा रिक्त रहेगा। 30 दिसम्बर को विनोद कुमार शुक्ल, नासिर अहमद सिकंदर और रज़ा हैदरी को राजधानी रायपुर के साहित्यकारों ने शिद्दत से याद किया। कार्यक्रम का आयोजन जनवादी लेखक संघ, जन संस्कृति मंच और इप्टा ने मिल-जुलकर किया था।

श्रद्धांजलि सभा की शुरुआत जन संस्कृति मंच के राष्ट्रीय सचिव राजकुमार सोनी के वक्तव्य से हुई। उन्होंने तीनों साहित्यकारों के योगदान को रेखांकित किया और कहा कि ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित विनोद कुमार शुक्ल अपनी रचनाओं से विगत 6 दशकों से देश के साहित्य की मुख्यधारा में छत्तीसगढ़ का लगातार प्रतिनिधित्व कर रहे थे, तो जनवादी तेवर की कविताएं रचने वाले नासिर की बदौलत छत्तीसगढ़ के दर्जनों कवियों को राष्ट्रीय स्तर पर चिन्हांकित किया जा सका। रज़ा हैदरी भी अपने जाने के बाद प्रदेश की मिट्टी में खाद बन कर अच्छे रचनाकारों को प्रोत्साहित करते रहेंगे।

प्रगतिशील लेखक संघ के जिला अध्यक्ष अरुणकांत शुक्ला ने विनोद कुमार शुक्ल को मनुष्यता के कवि और नासिर को जनवादी चेतना के कवि के रूप में याद किया। जनवादी लेखक संघ के प्रदेश अध्यक्ष परदेशी राम वर्मा ने नासिर अहमद के सांप्रदायिकता के खिलाफ मजबूती से खड़े होने को याद किया। उन्होंने कहा कि देश में सांप्रदायिक मनोभाव के विकास से वे काफी व्यथित थे। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और सांप्रदायिकता के खिलाफ लेखकों को एकजुट करने के काम में लगे रहे। साहित्य में प्रचलित 'कला, कला के लिए' सिद्धांत का विरोध करते हुए उन्होंने कला को जीवन की राजनीति से जोड़ने की पहलकदमी की। इस प्रकार, उनका पूरा साहित्य कलावाद की उलटबासियों और सांप्रदायिकता के खिलाफ युद्ध का घोषणापत्र है, जो साहित्य को प्रगतिशील-जनवादी राजनीति और मानवीय सरोकारों के साथ जोड़ने का काम करता है। उनके देहावसान पूरे संगठन और साहित्यिक सरकारों के लिए अपूरणीय क्षति है।

वरिष्ठ शायर मीर अली मीर साहब ने तीनों साहित्यकारों को खुशबू की उपमा देते हुए कहा कि दिसंबर में एक सप्ताह के भीतर तीन-तीन विभूतियों का जाना देश के साहित्य जगत के लिए भी बड़ी क्षति है, जिससे उबरने में बहुत वक्त लगेगा। सुखनवर हुसैन सुखनवर ने रज़ा हैदरी के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि अपनी नज़्मों और ग़ज़लों से हैदरी साहब ने छत्तीसगढ़ के उर्दू साहित्य में विशिष्ट पहचान बनाई थी। वे रायपुर में मरकज-ए-अदम के संस्थापक थे, आजीवन अध्यक्ष थे और श्लोक पत्रिका के संपादक-प्रकाशक थे।

जलेस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ. नंदन ने 2003 से विनोद कुमार शुक्ल के साथ अपने संबंधों का जिक्र करते हुए जनवादी कवि-आलोचक नासिर अहमद सिकंदर से अपने नागार्जुन साहित्य पर शोध के दौरान बढ़ी निकटता को बताया। प्रलेसं के नंद कुमार कंसारी ने विनोद कुमार शुक्ल से हर बार मिलने को अदभुत मुलाकात बताया, तो डॉ. आलोक वर्मा ने उनके संपूर्ण साहित्य को पढ़ कर ही उनके बारे में कोई राय बनाने का आग्रह किया। विविध भारती के उद्घोषक रहे कमल शर्मा ने शुक्ल से जुड़े अपने अनुभवों का जिक्र किया।

स्थानीय दैनिक नवभारत की साहित्य संपादक आफताब बेगम ने भी विनोद कुमार शुक्ल तथा नासिर अहमद सिकंदर के रचनात्मक योगदान का जिक्र किया।

सभा का संयोजन तथा संचालन कर रहे जलेसं के राज्य सचिव पूर्णचंद्र रथ ने तीनों विभूतियों के निष्काम योगदान और उनके सृजन की ईमानदारी का जिक्र किया। नासिर की संक्षिप्त, लेकिन प्रभावी कविताओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि साक्षात्कारों पर केन्द्रित श्रृंखला 'आमने सामने' के संपादन के लिए भी वे काफी चर्चित हुए थे। हाल ही में कवि संतोष चतुर्वेदी के ब्लाग 'पहली बार' में युवा कवियों की कविताओं पर उनकी नियमित टिप्पणी भी उल्लेखनीय है। उन्होंने साहित्यिक पत्रिका 'समकालीन हस्ताक्षर' के केदारनाथ अग्रवाल तथा चन्द्रकांत देवताले पर केन्द्रित दो अंकों का संपादन भी किया था। इन अंकों के कारण पूरे देश के साहित्य जगत का ध्यान उनके संपादकीय कौशल पर गया। वे न केवल उत्कृष्ट साहित्यकार थे, बल्कि कुशल संगठनकर्ता भी थे।

श्रद्धांजलि सभा को संस्कृति कर्मी निसार अली, मिनहाज असद, फ़ज़ले अब्बास सैफी, सनियारा ख़ान ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में पत्रकार-कवि समीर दीवान, रूपा सेनगुप्ता, रेणु नंदी, सैयद सलमा, सुधा बाघ, आफताब बेगम, मो. शमीम, डॉ. बिप्लव बंद्योपाध्याय, अजीज साधीर, इंद्र राठौर, हरीश कोटक एवं अन्य कई रचनाकार-संस्कृति कर्मी शामिल थे।

सभी आयोजक संगठनों की ओर से जलेस के शायर शिज्जू शकूर ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अब तो दिसंबर के महीने से ही डर बढ़ जाता है। संवेदनशीलता, साफगोई और ईमानदार इंसान होना ही बड़ा कवि होने की शर्त है और विनोद कुमार शुक्ल, नासिर अहमद सिकंदर

आरएसएस नेटवर्क का खुलासा

(आलेख : सवेरा, अनुवाद : संजय पराते)

पहली बार, शोधकर्ताओं ने आरएसएस से जुड़े संगठनों के रहस्यमयी नेटवर्क की तस्वीर सामने लाने के लिए सबूत इकट्ठा किए हैं -- और नतीजा परेशान करने वाला है। उन्होंने उन 2500 संगठनों के एक नेटवर्क का पता लगाया है, जिन्हें संघ से वैचारिक, संगठनात्मक और अक्सर आर्थिक मदद मिलती है। इन 2500 संगठनों में से 2240 भारत में हैं, जबकि बाकी 39 देशों में फैले हुए हैं। उन्होंने यह भी मानचित्र बनाया है कि ये संगठन एक-दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं, जिससे मातृ संगठन आरएसएस से उनके बहुस्तरीय संबंध सामने आए हैं। सामाजिक सेवा या धार्मिक-सांस्कृतिक संगठनों के इस विशाल नेटवर्क के ज़रिए ही आरएसएस अपनी हिंदुत्व की जहरीली विचारधारा फैलाता है।

इस तस्वीर को एक साथ जोड़ने में छह साल लंबा समय लगा। यह काम पेरिस के एकेडमिक संस्थान सेरी-साइंसेज पो और दिल्ली की मैगज़ीन द कारवां के शोधकर्ताओं ने किया। नेटवर्क में हर संगठन के स्थान और अन्य विवरण दिखाने वाला एक परस्पर संवादात्मक मानचित्र कारवां की वेबसाइट पर उपलब्ध है। इसमें एक नेटवर्क प्रतिचित्रण (मैपिंग) भी है, जो इन संगठनों के एक-दूसरे के साथ संबंध दिखाती है। कार्यप्रणाली का विवरण और मुख्य लेखक फेलिक्स पाल का एक लेख भी ऑनलाइन उपलब्ध है।

मानचित्र में भारत पर ज़ूम करने पर पता चलता है कि किन-किन राज्यों में आरएसएस से जुड़े ऐसे कितने संगठन हैं। ऐसे संगठनों वाले कुछ बड़े राज्य हैं : उत्तर प्रदेश – 280 ; महाराष्ट्र – 259 ; कर्नाटक - 174 ; गुजरात - 136 ; केरल – 212 ; मध्य प्रदेश – 73 ; पश्चिम बंगाल – 75 ; तमिलनाडु – 76। जम्मू-कश्मीर में ऐसे 55 संगठन हैं, जबकि उत्तर-पूर्व के आठ राज्यों में कुल 75 संगठन हैं, जिनमें से अकेले असम में 44 हैं। ये संख्याएँ शायद ऐतिहासिक विरासत को दिखाती हैं – जैसे उत्तरप्रदेश या महाराष्ट्र या उत्तर-पूर्व में, जहाँ आरएसएस दशकों से सक्रिय है, या फिर ये पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में हाल की प्राथमिकताओं को दिखाती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, मोटे तौर पर कहें तो, आरएसएस का नेटवर्क पुराने और नए, दोनों तरह के प्रवासी भारतीयों के बीच फैला हुआ है। द कारवां की शोध के अनुसार, उदाहरण के लिए, कैरिबियन या मॉरीशस या फिजी, या दक्षिण-पूर्व एशिया जैसे ऐतिहासिक प्रवासी हिंदू आबादी वाले ज़्यादातर छोटे देशों में हिंदू समुदायों में आरएसएस के मोर्चे सक्रिय हैं, हालांकि इन आंकड़ों से उनके पैमाने या प्रभाव का अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। लेकिन आरएसएस से जुड़े संगठनों का सबसे बड़ा जमावड़ा अमेरिका (107) में पाया जाता है, उसके बाद ऑस्ट्रेलिया (34) और यूनाइटेड किंगडम (26) का नंबर आता है। नेटवर्क मानचित्रण से यह संकेत मिलता है कि आरएसएस से जुड़े ये विदेश-आधारित संगठन अक्सर भारत-आधारित संगठनों के लिए वित्त पोषण (फंडिंग) का स्रोत होते हैं। उदाहरण के लिए, इंडिया डेवलपमेंट एंड रिलीफ फंड (आईडीआरएफ) अमेरिका में मैरीलैंड-स्थित एक कर-छूट प्राप्त, गैर-लाभकारी संगठन है। यह भारत में आरएसएस के कई संगठनों के लिए वित्त पोषण का एक मुख्य स्रोत है। श्रृंखला मानचित्रण से पता चलता है कि यह कम से कम 200 संगठनों से जुड़ा हुआ है, जिसमें सेवा भारती, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी), वनवासी कल्याण आश्रम (वीकेए) जैसे बड़े संगठन शामिल हैं, लेकिन साथ ही देश भर में फैले छोटे एनजीओ-प्रकार के संगठनों का एक समूह भी है। इसी तरह, सपोर्ट ए चाइल्ड, यूएसए एक और संगठन है, जो संभावित रूप से भारत में आरएसएस-समर्थित संगठनों का वित्त पोषण करता है। यह सीधे विश्व हिंदू परिषद, यूएसए से जुड़ा हुआ है। कुछ अंतर्राष्ट्रीय संगठन कई देशों में काम कर रहे हैं। उनमें से एक ओवरसीज फ्रेंड्स ऑफ बीजेपी है, जिसकी कई प्रमुख देशों में शाखाएँ हैं। इसी तरह, विश्व हिंदू परिषद की विभिन्न देशों में सीधी सहायक संस्थाएं हैं। आरएसएस का खुद का एक विदेशी मोर्चा है, जिसे हिंदू स्वयंसेवक संघ कहा जाता है। इसकी अधिकांश देशों में शाखाएँ हैं, जहाँ सहयोगी संगठन काम कर रहे हैं।

आरएसएस से जुड़े विदेश-आधारित ज़्यादातर संगठन सामुदायिक संगठनों के रूप में काम करते हैं, धार्मिक त्योहार मनाते हैं, कुछ सामुदायिक सेवाएं चलाते हैं और भारत से आने वाले नेताओं की मेज़बानी करते हैं। इनमें से कुछ, जैसा कि पहले बताया गया है, मुख्य रूप से जिस देश में वे हैं, वहाँ दानदाताओं से फंड इकट्ठा करते हैं और उसे भारत में अलग-अलग संगठनों को भेजते हैं।

ये भारत-आधारित संगठन क्या काम करते हैं?

ये संगठन कई तरह के मुद्दे उठाते हैं और उन पर काम करते हैं, जैसे : सेवाएं देना, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, आर्थिक, रक्षा/सुरक्षा, धार्मिक गतिविधियाँ, श्रम, मीडिया, अंतर्राष्ट्रीय मामले, वगैरह। फिर, कई संगठन ऐसे हैं, जो व्यवसाय पर आधारित हैं – व्यापारी, डॉक्टर, वकील, पूर्व सैनिक, शिक्षक, वगैरह। ये छोटे एनजीओ से लेकर धार्मिक और धर्मार्थ ट्रस्ट, सहकारिताएं, सामाजिक संस्थाएं या सिर्फ़ व्यक्तियों के संगठन हैं, जिनका कोई पंजीयन नहीं हैं। ये संगठन अपनी सामान्य गतिविधियों के ज़रिए ज़रूरतमंद लोगों को आरएसएस की ओर आकर्षित करते हैं।

आरएसएस सार्वजनिक तौर पर सिर्फ़ 32 सहयोगी संगठनों को मान्यता देता है, या जैसा कि वे कहते हैं, ये 'संघ से प्रेरित' संगठन हैं। इनमें भाजपा, विश्व हिंदू परिषद, वनवासी कल्याण आश्रम, विद्या भारती, सेवा भारती, एबीवीपी आदि जैसे सभी बड़े संगठन शामिल हैं। इनके साथ नियमित रूप से समन्वय बैठकें होती हैं, और इनके पदाधिकारी आरएसएस की सर्वोच्च सलाह देने वाली संस्था, अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा (प्रतिनिधियों के अखिल भारतीय सम्मेलन) के सदस्य होते हैं।

लेकिन बाकी 2000 से ज़्यादा संगठनों का आधिकारिक तौर पर शायद ही कभी ज़िक्र किया जाता है, सिवाय आम शब्दों में, जैसे 'समान सोच वाले संगठन' या 'सज्जन समाज'। मातृ संगठन से इनका संबंध या लिंक आरएसएस सदस्यों (स्वयंसेवकों) या प्रचारकों (आरएसएस के पूरा-वक्ती कार्यकर्ताओं) के ज़रिए होता है। इन संगठनों का मुख्य मकसद आरएसएस के मुख्य वैचारिक संदेशों को उन लोगों तक पहुँचाना है, जिन पर उनका असर होता है। इन मुख्य विचारों में शामिल हैं : हिंदू समाज को जगाना और उसके ₹शानदार अतीत₹ के बारे में बताकर उसकी श्रेष्ठता को स्थापित करना ; सनातन धर्म से निकली अलग-अलग रस्मों, रीति-रिवाजों, परंपराओं और मौकों को अपनाना और उनका पालन करना ; हिंदू समाज के सामने आने वाले ₹खतरों और जोखिमों₹ के बारे में जागरूकता पैदा करना ; और आखिरकार, हिंदू राष्ट्र की स्थापना की दिशा में काम करना।

ज़ाहिर है, इन मुख्य संदेशों को हर संगठन जिस लक्षित आबादी के साथ काम कर रहा है, उसके हिसाब से ढालना और समझाना ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, विद्या भारती 15,000 से ज़्यादा औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त स्कूल, आदिवासी इलाकों में लगभग 4000 एकल शिक्षा केंद्र (अनौपचारिक एकल शिक्षक केंद्र), गरीब शहरी इलाकों में लगभग 5000 संस्कार केंद्र और 60 कॉलेज चलाती है। इन सभी में, 'नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा' एक मुख्य हिस्सा है -- जिसे हिंदुत्व विचारधारा की जगह नाम दिया गया है। संयोग से, इन स्कूलों को द कारवां ने आरएसएस नेटवर्क में नहीं गिना है। एकल शिक्षा केंद्र आदिवासी इलाकों में काम करता है। यह आरएसएस से प्रेरित एक अन्य बड़े संगठन, वनवासी कल्याण आश्रम (वीकेए) की गतिविधियों के साथ ओवरलैप करता हैं। वनवासी कल्याण आश्रम के खुद दर्जनों सहयोगी संगठन हैं, जो स्थानीय परिस्थितियों के हिसाब से काम करते हैं -- उदाहरण के लिए, इसके उत्तर-पूर्वी राज्यों में से हर एक में अलग-अलग मोर्चे हैं, और मध्य भारतीय आदिवासी इलाकों में अलग हैं। इन मोर्चों द्वारा आदिवासियों के बीच बेहतर स्वीकार्यता बनाने के लिए स्थानीय मान्यताओं और रीति-रिवाजों को अपनाया जाता है। पेशागत संगठन भी इसी तरह का तरीका अपनाते हैं। अपने सदस्यों के हितों के लिए लॉबिंग करते हुए वे आरएसएस और भाजपा की वैचारिक लाइनों के साथ विभिन्न मुद्दों पर तालमेल बिठाते हैं।

काम करने की ओवरलैपिंग और फेडरेटिंग (पारस्परिक व्याप्ति और एक संस्था में केंद्रीभूत) शैली एक साफ़ खासियत है, जो ज़्यादातर लोगों की नज़र से ओझल रहती है। इस शोध के मुख्य लेखक फेलिक्स पाल ने मानचित्र और आंकड़ों के साथ अपने निबंध में बताया है कि आरएसएस के 46 'प्रांतों' (राज्यों) में से हर एक में ₹संघ से जुड़े मुख्य संगठनों के अपने-अपने रूप हैं : विद्या भारती पंजाब में सर्वहितकारी शिक्षा समिति बन जाती है ; सेवा भारती कर्नाटक में हिंदू सेवा प्रतिष्ठान बन जाती है ; और वनवासी कल्याण आश्रम झारखंड में वनवासी कल्याण केंद्र बन जाता है।₹

फेलिक्स पाल ने जम्मू में 20 संगठनों का उदाहरण दिया है, जो सभी वेद मंदिर में स्थित एक ही परिसर से चलाए जाते हैं। यह ज़मीन 1916 में डोगरा शासक ने एक व्यक्ति को वैदिक मंदिर बनाने के लिए दी थी। 1964 में वेद मंदिर कमेटी रजिस्टर हुई। पाल लिखते हैं कि बाद में इसे आरएसएस ने अपने कब्ज़े में ले लिया। वहाँ से चलने वाले संगठनों में शामिल हैं – बुज़ुर्गों और कमज़ोर लोगों के लिए एक आवास, एक गौशाला, एक पूजा स्थल, बीमारियों के प्राकृतिक इलाज का एक केंद्र, कारगिल युद्ध के पूर्व सैनिकों के लिए एक एनजीओ, कटरा में एक छात्रावास, लड़के और लड़कियों के लिए अनाथालय, एक स्कूल, एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र, एक होम्योपैथिक डिस्पेंसरी, एक अस्पताल, तीर्थयात्रियों के लिए एक लॉज, वेदों की पढ़ाई के लिए एक स्कूल और आरएसएस से जुड़े आधे दर्जन संगठनों के दफ्तर। वेद मंदिर बाल निकेतन के सभी चार पदाधिकारी आरएसएस के लोग हैं, और वे इस क्षेत्र के कई अन्य आरएसएस से जुड़े संगठनों के नेता भी हैं। असल में, अध्यक्ष आरएसएस के जम्मू प्रांत के संघचालक (प्रमुख) हैं। मंदिर परिसर से काम करने वाली कुछ संस्थाओं को अमेरिका और कनाडा में स्थित आईडीआरएफ और सेवा इंटरनेशनल से फंड मिलता है। जम्मू मंदिर परिसर पूरे आरएसएस नेटवर्क का एक छोटा-सा रूप है। इतना ज़्यादा छोटा कि जब भी आरएसएस सरसंघचालक (सुप्रीम) इस क्षेत्र में आते हैं, तो वे हमेशा वहीं रुकते हैं।

यह तो बस शुरुआत है

शोधकर्ताओं का मानना है कि यह आरएसएस के नेटवर्क की पूरी तस्वीर नहीं है। उनका ज़्यादातर काम ऑनलाइन शोध पर आधारित है और ज़ाहिर है, ऐसे बहुत सारे संगठन हैं, जो अपनी जानकारी ऑनलाइन नहीं देते हैं। इसके अलावा, शोध में जानबूझकर कुछ पहलुओं को छोड़ दिया गया है, जैसे कि उनसे जुड़े स्कूल, जिनकी संख्या इतनी ज़्यादा है कि वे दूसरे संगठनों को 'पीछे छोड़' सकते हैं। इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि स्कूल, बालवाड़ी और सांस्कृतिक केंद्र आदि आरएसएस के लिए कम ज़रूरी हैं। असल में, लोगों को अपनी पिछड़ी सोच में ढालने की आरएसएस की कोशिशों में ये शायद सबसे 'सफल' हैं।

मोदी के ग्यारह साल के शासन में, आरएसएस की अलग-अलग गतिविधियों जैसे चरित्र निर्माण के लिए कार्यशाला, सांस्कृतिक जागरूकता या प्राचीन विज्ञान के लिए सेमिनार और सम्मेलन वगैरह के लिए सरकारी मदद – इसे वित्त पोषण पढ़ें – बड़े पैमाने पर बढ़ी है। इस प्रक्रिया में, कई संगठन सामने आए हैं या मौजूदा संगठनों को अपनी गतिविधियों के लिए बढ़ावा मिला है। यह प्रक्रिया अभी भी जारी है और हो सकता है कि यह डेटाबेस में दिखाई न दे। दूसरे तरह के संगठन, जिन्हें मोदी के ज़माने में बढ़ावा मिला है, वे हैं अलग-अलग हिंदुत्व उग्रवादी संगठन, जो 'गौ-रक्षा' गतिविधियां कर रहे हैं या त्योहारों और दूसरी ऐसी ही गतिविधियों का आयोजन कर रहे हैं। हो सकता है कि इनका कोई पक्का सांगठनिक ढांचा न हो और समय के साथ ये कुछ ज़्यादा स्थायी रूप ले लें। ये भी ज़्यादातर डेटाबेस में शामिल नहीं हैं।

संगठनों की एक और श्रेणी नए मीडिया-आधारित नेटवर्क हैं – यू-ट्यूब चैनल, व्हाट्सएप ग्रुप और चैनल, आदि। संगठनात्मक नज़रिए से यह एक ग्रे एरिया है, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि ऐसे हज़ारों नेटवर्क हैं, जो सक्रिय रूप से संघ की विचारधारा फैला रहे हैं और संघ के सदस्यों द्वारा प्रबंधित किए जा रहे हैं। ये भी इस डेटाबेस में शायद ही शामिल हैं।

और, आखिर में, जैसा कि शोधकर्ता खुद ज़ोर देते हैं, ये आंकड़े सिर्फ़ आरएसएस नेटवर्क का है, न कि हिंदुत्व से जुड़े सभी संगठनों का। यह संभव है कि आरएसएस प्रचारक की अगुवाई वाली सरकार होने की वजह से, आरएसएस से जुड़े संगठन एक जैसी विचारधारा वाले, लेकिन अलग-अलग संगठनात्मक मूल वाले, दूसरे सभी संगठनों पर हावी रहेंगे। लेकिन अभी तक, ऐसे कई संगठन डेटाबेस में शामिल नहीं होंगे।

लड़ाई जारी है

यह ज़ोर देकर कहना ज़रूरी है कि इस विशाल नेटवर्क के बावजूद – जो फैला हुआ है और एक-दूसरे से जुड़ा हुआ भी है – आरएसएस की विचारधारा और इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण इसकी संगठनात्मक पकड़, पूरे देश में असमान रूप से फैली हुई है। इसके बड़े हिस्से ऐसे हैं, जहाँ यह सिर्फ़ ऊपरी तौर पर ही पहुँचा है। आरएसएस के प्रभाव का अंदाज़ा न तो उसके बनाए संगठनों की संख्या से लगाया जा सकता है और न ही भाजपा की वोटों में हिस्सेदारी से। इन संगठनों से जुड़े लोग कई वजहों से इसकी तरफ आकर्षित हो सकते हैं और उन्हें आरएसएस का अनुयायी नहीं माना जा सकता। संगठनों का एक-दूसरे से जुड़ा होना भी उनके प्रभाव के एक-दूसरे से जुड़े आधारों को दिखाता है। इसी तरह, भाजपा को मिलने वाले वोट अलग-अलग इलाकों और क्षेत्रों में, और यहाँ तक कि एक चुनाव से दूसरे चुनाव में भी बहुत अलग-अलग होते हैं। आरएसएस अपने मोर्चा संगठनों – खासकर मौजूदा दौर में भाजपा – का सहारा लेकर वह हासिल करना चाहता है, जो वह एक सदी में भी नहीं कर पाया। वह कितना सफल होगा, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक ताकतें उसे कितनी चुनौती देती हैं। ये ताकतें अभी भी भारत की ज़्यादातर आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

2026 : हिंदू राष्ट्र की धमक !

(आलेख : राजेंद्र शर्मा)

आरएसएस के सौ साल पूरे होने के मौके पर देश के अलग-अलग हिस्सों में आयोजित की जा रही व्याख्यान श्रृंखला में उसके सर-संघचालक, मोहन भागवत 2025 के आखिरी पखवाड़े में कोलकाता में बोल रहे थे। यहां बोलते हुए भागवत ने कुछ ऐसा कहा, जो पहली नजर में बहुतों को आरएसएस की जानी-पहचानी लफ्फाजी का दोहराव लग सकता है, लेकिन थोड़ा गौर से देखते ही उसकी खतरनाक अर्थ-ध्वनियां सुनाई देने लगती हैं। प्रकटतः तो भागवत आरएसएस का जाना-पहचाना दावा ही दुहरा रहे थे कि भारत एक हिंदू राष्ट्र था, है और रहेगा ! ₹जब तक इस देश में एक व्यक्ति भी भारतीय पूर्वजों की गौरवाशाली विरासत में विश्वास करता है, तब तक भारत एक हिंदू राष्ट्र है₹, आदि। लेकिन, इस व्याख्यान में आरएसएस के मुखिया संभवतः पहली बार, भारत के हिंदू राष्ट्र होने के अपने दावे को, उस भारतीय संविधान के ही सामने खड़ा कर देते हैं, जो स्पष्ट रूप से भारत के एक धर्मनिरपेक्ष, बहुलतावादी राष्ट्र होने की संकल्पना पर आधारित है।

बेशक, भागवत हिंदू राष्ट्र के अपने दावे को, उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवादी संघर्ष की कोख से निकले और आंबेडकर की कलम के माध्यम से, सामाजिक बराबरी और भाईचारे की रौशनाई से लिखे गए, संविधान के साथ सीधे टकराने से बचाकर निकालने की कोशिश करने की चतुराई भी बरतते हैं और प्रकटतः यह दावा करने पर खुद को रोक भी लेते हैं कि इसके लिए संविधान की मंजूरी की जरूरत नहीं है कि ₹हिंदुस्तान एक हिंदू राष्ट्र है₹। फिर भी वह संविधान की मंजूरी होने या न होने से फर्क ही नहीं पड़ने की इस झूठी मुद्रा पर ही नहीं रुके रहते हैं। वह खुलेआम राजनीति के मैदान में उतरते हुए, इसकी अनिष्टकर संभावना की ओर भी इशारा करते हैं कि "अगर संसद कभी संविधान में संशोधन कर वह शब्द जोड़ने का फैसला करती है..."; वह शब्द यानी हिंदू राष्ट्र। यह दूसरी बात है कि इस संभावना के जिक्र के साथ भी वह यह जोड़ना नहीं भूलते हैं कि संसद अगर ऐसा "न भी करे, तो हमें उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हमें उस शब्द की परवाह नहीं है, क्योंकि हम हिंदू हैं और हमारा राष्ट्र हिंदू राष्ट्र है। यही सच्चाई है।"

सीधी-सरल भाषा में इस पूरी शाब्दिक कसरत का अर्थ यही है कि मोहन भागवत का संगठन, यह जानते-समझते हुए भी कि यह भारत के वर्तमान संविधान के खिलाफ है, भारत को हिंदू राष्ट्र मानता है और सबसे मनवाने के लिए यानी हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए, काम कर रहा है और करता रहेगा। इसके लिए वह संविधान के ही बदले जाने के भरोसे बैठा तो नहीं रहेगा। हां ! संविधान भी अगर उसकी भाषा बोलने लगे तब तो कहना ही क्या ? मोदी-शाह की भाजपा के लिए संघ की सौवीं सालगिरह पर भागवत ने अगला टास्क तय कर दिया है — संविधान बदलकर कर उसमें वह शब्द (हिंदू राष्ट्र) जुड़वाना !

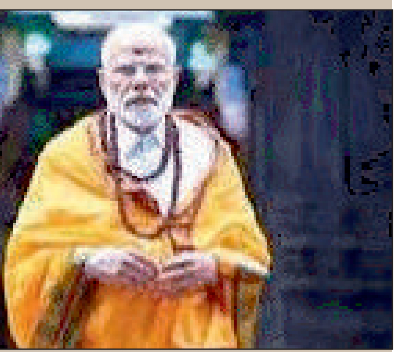

और साल के उसी अंतिम पखवाड़े में मोदी-शाह की हुकूमत क्या कर रही थी ? देश की आबादी का कुल 2.3 फीसदी हिस्सा बनाने वाले ईसाइयों के सबसे बड़े धार्मिक त्यौहार पर, जो वैसे भी सबसे प्रेम तथा सौहार्द्र व मेल-जोल के संदेश के लिए ही जाना जाता रहा है, मोदी-शाह की भाजपा समेत, समूचे आरएसएस विचार परिवार के सरासर अकारण हमलों को, सामान्य बनाने की कोशिश की जा रही थी। भागवत के उपदेश की तरह, इस मामले में मोदी-शाह की हुकूमत दुहरी चाल चल रही थी। एक ओर संघ विचार परिवार के हिस्से के तौर पर, सिर्फ बजरंग दल, विहिप आदि जैसे कथित रूप से हाशिए के संगठन ही नहीं, केंद्र में मोदीशाही से लेकर, उत्तर प्रदेश में योगीशाही तक, धर्मनिरपेक्ष संविधान के अंतर्गत चुनी गयी भाजपायी सरकारें तक, एक त्यौहार के रूप में क्रिसमस को ही नकारने में लगी हुई थीं। केंद्र ने 25 दिसंबर को क्रिसमस की जगह तथाकथित सुशासन दिवस मनाने से जो शुरूआत की थी, उसे इस बार उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड जैसे भाजपा-शासित राज्यों में क्रिसमस की छुट्टी ही रद्द करने तक पहुंचा दिया। वहां इस मौके पर व्यापक स्तर पर अटलबिहारी वाजपेयी का जन्म दिन मनाया गया, जिसके लिए बच्चों को खासतौर पर स्कूलों में बुलाया गया। इस मौके पर स्वयं प्रधानमंत्री ने लखनऊ में एक विशाल कार्यक्रम में 230 करोड़ रु. की लागत से बने "राष्ट्रीय प्रेरणा स्थल" और हार्मनी पार्क का उदघाटन किया।

अपने "हिंदू राज" की, वाजपेयी के जन्म दिन से क्रिसमस को प्रतिस्थापित करने की इस तरह की कोशिशों से प्रेरणा पाकर, भाजपा समेत संघ परिवार के विभिन्न संगठनों ने देश के विभिन्न हिस्सों में, जाहिर है कि ज्यादातर भाजपा-शासित राज्यों में, क्रिसमस के आयोजनों को अभूतपूर्व हमलों और तोड़-फोड़ का निशाना बनाया। असम, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, दिल्ली, ओडिशा, राजस्थान, उत्तराखंड तथा कुछ अन्य राज्यों में, क्रिसमस की पूर्व-संध्या से लेकर क्रिसमस के दिन तक, हमले की ऐसी घटनाएं घट ही रही थीं। शापिंग मॉल, बाजार आदि, सार्वजनिक स्थलों पर क्रिसमस की सजावट पर तोड़-फोड़ के जरिए विशेष रूप से यह व्यापक संदेश देने की कोशिश की गयी कि हिंदू राज में, गैर-हिंदू अपने धार्मिक त्यौहार मनाते, रीति-रिवाजों का पालन करते, कर्म-कांड करते, सार्वजनिक रूप से दिखाई नहीं देने चाहिए। अल्पसंख्यक हों भी तो अदृश्य होकर रहें, दिखाई सिर्फ हिंदू देने चाहिए। आरएसएस के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतकार माने जाने वाले, गोलवालकर ने हिंदू राष्ट्र में रहने वाले अल्पसंख्यकों के लिए, ठीक यही "मर्यादा" तय की है।

बेशक, क्रिसमस पर हमले की ऐसी घटनाएं पहली बार नहीं हो रही थीं। पहले कभी-कभार, स्थानीय कारणों से होने वाली इस तरह की घटनाएं, शासन से एक प्रकार से खुली छूटी, बल्कि आशीर्वाद हासिल होने के कारण, मोदीशाही में लगातार और तेजी से बढ़ती गयी हैं। इस क्रिसमस पर इन घटनाओं में करीब छः गुनी बढ़ोतरी होने की खबर है। संघ परिवार की दोहरी चाल के अनुरूप, खुद प्रधानमंत्री, उत्तर प्रदेश में औपचारिक रूप से क्रिसमस की जगह वाजपेयी के जन्म दिन को बैठाने के कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए रवाना होने से पहले, राजधानी दिल्ली में बड़े भक्तिभाव से एक गिरजे में जाकर क्रिसमस की विशेष प्रार्थना में शामिल हुए। उन्होंने अपने क्रिसमस के इस आयोजन में शामिल होने का वीडियो भी सोशल मीडिया पर डाला और प्रेम व सद्भाव को क्रिसमस का मूल संदेश बताते हुए, सार्वजनिक रूप से क्रिसमस की शुभकामनाएं भी दीं। दूसरी ओर, अपने संघ परिवारियों के हमलों से क्रिसमस और ईसाइयों को बचाने के लिए खुद उन्होंने और उनके राज ने, कुछ भी नहीं किया। यहां तक कि न तो प्रधानमंत्री को इसकी अपील तक करना गवारा हुआ कि ऐसे हमले नहीं होने चाहिए और न उनके नंबर दो, गृहमंत्री को ऐसी गुंडागर्दी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की धमकी तक देना गवारा हुआ। हैरानी की बात नहीं है कि इन हमलों के लिए, भाजपा-शासित राज्य में पुलिस ने शायद ही किसी पर कोई कार्रवाई की है ! जब लक्ष्य हिंदू राज में अल्पसंख्यकों को ही अदृश्य करना है, उन पर हमलों को कैसे दर्ज होने दिया जा सकता है। गोलवालकर की कल्पना के हिंदू राष्ट्र की स्थापना का अभ्यास जारी है।

और जैसे हिंदू राष्ट्र के लाए जाने के इसी अभ्यास के आर्थिक-सामाजिक घटक के रूप में, दिसंबर के उसी आखिरी पखवाड़े में, ग्रामीण गरीबों के लिए न्यूनतम शारीरिक मजदूरी की गारंटी करने वाले मनरेगा कानून को खत्म करने और उसकी जगह पर कथित वीबी-जी राम जी योजना को बैठाए जाने पर, संसद से और फिर राष्ट्रपति से ताबड़तोड़ मोहर लगवायी गयी। कई अर्थों में यह संसदीय बहुमत की तानाशाही के सहारे, किसानों के हितों पर चोट करने वाले और मौजूदा हिंदुत्ववादी निजाम को सहारा देने वाले कारपोरेटों के स्वार्थ साधने वाले, तीन कृषि कानूनों के मामले में जो किया गया था, उसी की पुनरावृत्ति है। इस बार प्रत्यक्ष रूप से स्वार्थ साधे जा रहे हैं, बड़े भूस्वामियों के, जो ग्रामीण क्षेत्र में मौजूदा निजाम के समर्थन की रीढ़ हैं और जिनके लिए यह बदलाव, सस्ते मजदूर मुहैया कराने का साधन बनेगा। इससे पहले, श्रम कानूनों को एक प्रकार से ध्वस्त ही करने वाली चार श्रम संहिताओं को अधिसूचित करने के जरिए, कारपोरेटों के स्वार्थ साधने का रास्ता खोला ही जा चुका था। प्रधानमंत्री खुद इसी को नयी पीढ़ी के तथाकथित "सुधारों की एक्सप्रेस" बताकर, खुद अपनी पीठ ठोक रहे हैं !

इस तरह, 2025 के आखिर तक, न सिर्फ हिंदू राज के अमल को आगे बढ़ाने का रास्ता बनाया जा चुका है,ए बल्कि उसकी सेनाओं को रसद-पानी मुहैया कराते रहने के लिए, बड़े धनपतियों की तिजोरियों तक पहुंच का भी पुख्ता इंतजाम किया जा चुका है। रही-सही कसर, चुनाव आयोग से लेकर, उपरली अदालतों तक, उन सभी संस्थाओं पर मौजूदा निजाम के कब्जे ने पूरी कर दी है, जिन पर देश के निजाम का संविधान और कानून के हिसाब से चलना सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी थी। जब ईमानदारी से चुनाव होने तक का भरोसा नहीं रहे, तो संविधान भी कब तक "वह शब्द" जोड़े जाने से बचा रह पाएगा। वैसे भागवत कह ही चुके हैं कि उनका हिंदू राष्ट्र स्थापित करना, संविधान में "वह शब्द" जोड़े जाने के आसरे नहीं है। प्रधानमंत्री के पद को मुख्य पुजारी के पद में और प्रधानमंत्री कार्यालय परिसर को, सेवा तीर्थ में बदला ही जा चुका है। हिंदू राष्ट्र का निर्माण, चालू आहे !

तो क्या, 2026 के हिस्से में सिर्फ नंगई से सामने आते हिंदू राष्ट्र की चकाचोंध अंधेरा है ? हर्गिज नहीं। हरेक नंगई, असलियत को पहचानना आसान भी तो बनाती है। मजदूर, किसान, खेत मजदूर, दलित, पिछड़े, महिलाएं, नौजवान, अल्पसंख्यक ; विशाल कतारें हैं जो दुश्मन की बेहतर पहचान के साथ अपने हक-हुकूक के लिए खड़ी होंगी। जब दरिया झूम के उट्ठेंगे, 'हिंदू खतरे में हैं' के पर्दों से न रोके जाएंगे !

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और साप्ताहिक पत्रिका 'लोकलहर' के संपादक

कहानी में एक मोड़: क्या वैज्ञानिक डार्क एनर्जी के बारे में गलत हैं?

विजय गर्ग

देश भर में हजारों युवा महिलाओं के पास डिग्री है लेकिन वे बेरोजगार हैं। यह एक गहन संरचनात्मक मुद्दे को दर्शाता है: साक्षरता और शैक्षणिक योग्यताएं, यद्यपि आवश्यक हैं, लेकिन स्वतः ही रोजगार में परिवर्तित नहीं होतीं। कई स्नातकों में समकालीन उद्योगों द्वारा अपेक्षित व्यावहारिक, डिजिटल और कार्यस्थल कौशल का अभाव होता है।

दो दशकों से अधिक समय से, डार्क एनर्जी ब्रह्माण्ड विज्ञान में सबसे रहस्यमय और आधारभूत अवधारणाओं में से एक रही है। यह समझाने के लिए पेश किया गया कि ब्रह्मांड का विस्तार क्यों तेजी से बढ़ रहा है, डार्क एनर्जी अब ब्रह्मांडीय विकास के आधुनिक सिद्धांतों पर हावी है। लेकिन हाल के शोध और वैकल्पिक विचार इस ब्रह्मांडीय पहेली के पीछे की कुछ धारणाओं को चुनौती दे रहे हैं — अग्रणी वैज्ञानिक पूछते हैं: क्या हम डार्क एनर्जी को गलत समझ रहे हैं? डार्क एनर्जी क्या है?

डार्क एनर्जी ऊर्जा का एक सैद्धांतिक रूप है जो अंतरिक्ष को भर देता है और ब्रह्मांड के तेजी से विस्तार को चलाता है। अवलोकनों के अनुसार, ब्रह्माण्ड की ऊर्जा सामग्री का लगभग 70% इस रूप में हो सकता है, तथा शेष भाग डार्क मैटर और साधारण पदार्थ ही हैं। इसका अनुमान पहली बार 1990 के दशक के अंत में दूर से फट रहे तारों (टाइप इआ सुपरनोवा) के अवलोकन से लगाया गया था, जो अपेक्षा से अधिक मंद दिखाई दिए थे, जिससे यह संकेत मिलता है कि ब्रह्मांड समय के साथ तेजी से विस्तार कर रहा था।

मानक ब्रह्मांडीय मॉडल (एलसीडीएम) में, डार्क एनर्जी को एक कॉस्मोलॉजिकल कॉन्स्टेंट द्वारा दर्शाया जाता है — एक स्थिर ऊर्जा घनत्व जो अंतरिक्ष में समान रूप से व्याप्त होता है। यह सरल मॉडल कई अवलोकनों पर खरा उतरता है, लेकिन यह नहीं बताता कि डार्क एनर्जी क्या है।

कुछ वैज्ञानिक इस पर पुनर्विचार क्यों कर रहे हैं

1। अवलोकन संबंधी संकेत डार्क एनर्जी समय के साथ बदल सकती है

डार्क एनर्जी स्पेक्ट्रोस्कोपिक इंस्ट्रूमेंट (डीईएसआई) जैसे बड़े अवलोकन कार्यक्रमों ने लाखों आकाशगंगाओं के विस्तृत 3D मानचित्र तैयार किए हैं, जिससे वैज्ञानिकों को यह अध्ययन करने का अवसर मिला है कि अरबों वर्षों में ब्रह्मांडीय विस्तार किस

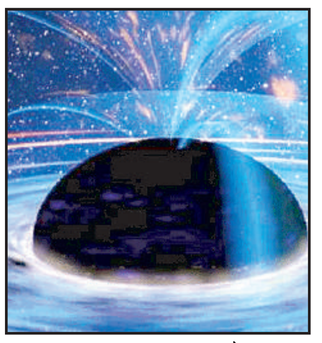

प्रकार विकसित हुआ है। कुछ डीईएसआई परिणाम संकेत देते हैं कि डार्क एनर्जी का प्रभाव स्थिर नहीं हो सकता है — यह अतीत में अधिक मजबूत और आज कमजोर हो सकता है। ये विकसित होते संकेत एक सरल ब्रह्मांडीय स्थिरांक के विचार को चुनौती देते हैं और सुझाव देते हैं कि अधिक गतिशील घटना सामने आ सकती है।

यदि समय के साथ डार्क एनर्जी कमजोर हो जाती है, तो ब्रह्मांड का दीर्घकालिक भविष्य अंतहीन त्वरण की पारंपरिक तस्वीर से बहुत अलग हो सकता है - संभावित रूप से एक ब्रह्मांडीय ₹बिग क्रंच₹ की ओर भी विपरीत दिशा में 2। वैकल्पिक मॉडल जिसमें कोई डार्क एनर्जी नहीं है

कुछ शोधकर्ताओं का तर्क है कि डार्क एनर्जी की बिल्कुल भी जरूरत नहीं पड़ सकती। इसके बजाय, देखा गया त्वरण निम्नलिखित के कारण उत्पन्न भ्रम हो सकता है

चिकने ब्रह्मांड के बजाय गांठदार वास्तविक ब्रह्मांड में असमान विस्तार। इस दृष्टिकोण में, ब्रह्मांडीय विस्तार और गुरुत्वाकर्षण प्रभावों में भिन्नताएं उस चीज की नकल कर सकती हैं जिसे हम डार्क एनर्जी के रूप में व्याख्या करते हैं। मौलिक बलों को बदलना: हाल ही में 2025 के एक सैद्धांतिक अध्ययन ने प्रस्ताव दिया कि मौलिक बल (जैसे गुरुत्वाकर्षण) समय के साथ धीरे-धीरे कमजोर हो सकते हैं। यह परिवर्तन ब्रह्माण्ड को ऐसा दिखा सकता है कि वह गति बढ़ा रहा है — बिना किसी अलग डार्क एनर्जी घटक की आवश्यकता के। विभिन्न ब्रह्मांडीय मॉडल जैसे कि टाइमस्केप परिकल्पना, जो सुझाव देती है कि सुपरनोवा चमक में अंतर वास्तविक त्वरण के बजाय ब्रह्माण्डीय शून्यों और संरचनाओं में समय-माप अंतर को दर्शाता है। इन वैकल्पिक दृष्टिकोणों पर अभी भी बहस हो रही है और व्यापक रूप से स्वीकार नहीं किया गया है, लेकिन वे दर्शाते हैं कि डार्क एनर्जी की भूमिका उतनी स्थिर नहीं है जितनी एक बार सोचा जाता था। 3। गतिशील डार्क एनर्जी — एक स्थिरांक नहीं

भौतिकविदों ने गतिशील डार्क एनर्जी मॉडल — का प्रस्ताव रखा है जहां समय के साथ डार्क एनर्जी घनत्व बदलता रहता है — जैसे:

क्विंटेसेंस (एक समय-भिन्न क्षेत्र जो पांचवीं शक्ति की तरह कार्य करता है)

क्विंटम परिदृश्य, जहां डार्क एनर्जी ब्रह्मांडीय इतिहास पर व्यवहार को बदल सकती है ये सरल ब्रह्मांडीय स्थिरांक विचार को विस्तारित करते हैं और कुछ विकसित हो रहे अवलोकन संबंधी आंकड़ों के साथ बेहतर ढंग से मेल खा सकते हैं।

ब्रह्माण्ड विज्ञान के लिए इसका क्या अर्थ है

चुनौतियों के बावजूद, डार्क एनर्जी ब्रह्मांडीय त्वरण के लिए सबसे अधिक समर्थित स्पष्टीकरणों में से एक बनी हुई है — लेकिन महत्वपूर्ण चेतावनियों के साथ:

त्वरण के साक्ष्य मजबूत हैं, लेकिन उस त्वरण की व्याख्या सक्रिय जांच के अधीन है।

कई अवलोकन परिणाम संकेत देते हैं कि डार्क एनर्जी स्थिर रहने के बजाय समय के साथ विकसित हो सकती है।

वैकल्पिक मॉडल बिना डार्क एनर्जी के कुछ प्रमुख ब्रह्मांडीय विशेषताओं को पुनः उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन अब तक कोई भी सभी अवलोकनों को विश्वसनीय रूप से नहीं समझाता है।

विज्ञान में, किसी मॉडल को शायद ही कभी इसलिए खारिज किया जाता है क्योंकि वह अच्छी तरह से काम करता है - इसे कुछ समान रूप से सफल लेकिन अधिक व्याख्यात्मक द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। अब तक, डार्क एनर्जी सबसे अच्छा कार्यशील ढांचा बना हुआ है, लेकिन ब्रह्मांडविज्ञानी मानते हैं कि हमारी समझ अधूरी है।

आगे का रास्ता

नए अंतरिक्ष दूरबीनों, अगली पीढ़ी के आकाशगंगा सर्वेक्षणों और ब्रह्मांडीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि विकिरण — के गहन अध्ययन सहित भविष्य के प्रयोग परीक्षण करेंगे कि क्या:

डार्क एनर्जी एक स्थिरांक, गतिशील क्षेत्र या गहन भौतिकी की गलत व्याख्या है।

ब्रह्मांड हमेशा के लिए विस्तारित होगा, धीमा हो जाएगा, या यहां तक कि पतन में बदल जाएगा।

अगला दशक अंधकारमय ऊर्जा की खोज के बाद से ब्रह्मांड के बारे में हमारी समझ में सबसे बड़ी क्रांति ला सकता है संक्षेप में: डार्क एनर्जी दशकों से ब्रह्माण्ड विज्ञान के लिए केंद्रीय रही है, लेकिन नए शोध से पता चलता है कि कहानी मानक मॉडल की भविष्यवाणी से अधिक जटिल और संभावित रूप से बहुत अलग हो सकती है

डार्क एनर्जी दशकों से ब्रह्माण्ड विज्ञान के लिए केंद्रीय रही है, लेकिन नए शोध से पता चलता है कि कहानी मानक मॉडल की भविष्यवाणी से अधिक जटिल और संभावित रूप से बहुत अलग हो सकती है। वैज्ञानिक अभी तक यह निष्कर्ष नहीं निकाल पा रहे हैं कि डार्क एनर्जी गलत है, लेकिन वे विकल्पों का सख्ती से परीक्षण कर रहे हैं और अपने मॉडलों को परिष्कृत कर रहे हैं, जिससे ब्रह्मांड और उसके अंतिम भाग्य की गहरी समझ का द्वार खुल रहा है।

गर्ग रिटायर्ड प्रिंसिपल
एजुकेशनल स्तंभकार प्रख्यात
शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद
एमएचआर मलोट पंजाब

नई योजना और रोजगार की चुनौतियां

डॉ विजय गर्ग

भारत तरक्की कर रहा है, आंकड़ों से अर्शशास्त्री यही बताते हैं। निस्संदेह भारत दुनिया की बड़ी आर्थिक महाशक्ति है। उम्मीद जताई जा रही है कि आने वाले समय में देश तीसरी आर्थिक महाशक्ति बन जाएगा और 2047 में जब आजादी का शताब्दी वर्ष मनाएंगे, तब हम पूरी तरह से एक विकसित राष्ट्र होंगे। उस समय हर आदमी यथोचित रोजगार के साथ अच्छा भोजन करेगा, अच्छा पहनेगा और खुशहाली के शिखर होगा। यह है सपना। ऐसा अगर लोग लोग स्वाधीनता का अमृत महोत्सव के बाद भी सोचते हैं, हैं, तो कारणों की तलाश करनी पड़ेगी। पिछले दिनों कहा गया हम देश से बेरोजगारी मिटा देंगे। बेरोजगारी की भूख अनुकंपा के सस्ते राशन से मिटा दी जाएगी। मगर युवा पीढ़ी जो इस देश की आधी आबादी है, वह काम चाहती है। यह कड़वी सच्चाई है कि बड़ी बड़ी संख्या में युवा आज आज भी बेरोजगार हैं। नए सर्वेक्षणों ने बताया है कि इस कृषि प्रधान देश में ग्रामीण बेरोजगारी की दर बढ़ने लगी है। ग्रामीण इलाकों में आज भी बेरोजगारी बहुत का बदला रूप 'बीबी जी राम जी' इस चुनौती का मुकाबला कर पाएगा, यह कहना मुश्किल है, क्योंकि गांवों में योजना का नया कलेवर नहीं, काम चाहिए।

बड़ी समस्या है। क्या | क्या मनरेगा का

अब जरूरत है कि देश में नागरिकों को काम के उचित अवसर मिलें। यूपीए सरकार के समय सबसे अच्छी योजना मनरेगा को ही बताया जाता था। यह फरवरी 2006 में लागू हुई थी। इसमें आवेदन करने पर पंद्रह दिन के अंदर रोजगार देना अनिवार्य होता था। आंकड़े बताते हैं कि इस पर अब तक 11.74 लाख व करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं। वर्ष 2014 से राजग सरकार के कार्यकाल में भी इस पर 7.8 लाख करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। हालांकि इसमें केवल सौ दिन का काम दिया जाता है। कई बार तो मजदूरों को औसत पचास दिन ही काम मिला। फिर भी मनरेगा वर्ष 2014 से अब तक आठ करोड़ लोगों को ही लोगों को ही रोजगार दे पाई।।

अब केंद्र सरकार ने संसद में नया ग्रामीण रोजगार विधेयक पारित किया है। है। ग्रामीणों को रोजगार के के लिए 20 साल के बाद योजना को एक नया कलेवर दिया गया है। इसकी शुरुआत नाम बदलने से हुई। इस योजना का नया नाम है- है विकसित भारत जी राम जी जबकि इससे पहले इसे महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना कहा जाता था। कुल जमा ये कि नई योजना ने रूप बदला है। पहले सौ दिन काम मिलता था, लेकिन अब 125 दिन काम मिलेगा, लेकिन दिहाड़ी वही रहेगी। पहले इस योजना पर

फीसद पैसा केंद्र सरकार खर्च करती थी। अब इसमें 60 फीसद योगदान केंद्र देगा। जबकि 40 फीसद राज्य सरकारें देंगी। पहले इस योजना में आवेदन करने पर 15 दिन के भीतर काम मिलता था। मगर अब काम न मिलने पर राज्य सरकार बेरोजगारी भत्ता देगी। मनरेगा ग्रामीण गरीबी दूर करने के लिए था। फिलहाल 'बीबी जी राम जी' को विकसित भारत का हिस्सा बना कर देखा जा रहा है। नई योजना की डिजिटल निगरानी होगी। ग्रामीण रोजगार गारंटी परिषद् बनेंगीं। संचालन समितियां बनेंगी। ग्राम पंचायत स्तर पर बनने वाली योजनाओं को 'पीएम विकास गतिशक्ति' से जोड़ देंगे। अब सवाल

है कि इस परिवर्तन की जरूरत क्यों पड़ी? संसद में विधेयक पारित भी हो गया है। इससे पहले इस पर सत्तापक्ष और विपक्ष की जम कर बहस हुई। सत्तापक्ष का कहना था कि मनरेगा दिशाहीन था और इसमें ऐसा था कि पहले गड्ढे खोदो, फिर उन्हें भर दो। मुख्य उद्देश्य था गरीब परिवार के एक सदस्य को सौ दिन काम देकर मेहनताना देना। अब यह नई योजना दिशाहीन नहीं रहेगी, क्योंकि सरकार का मत है कि गांवों में परिवर्तन आ गया है। भुखमरी कम हो गई है, ग्रामीण बेरोजगारी इतनी बड़ी चुनौती नहीं रही। मगर सच से कैसे इनकार किया जा सकता है? चुनौती तो अब भी है। सरकार का यह भी कहना है कि ग्रामीण भारत की सामाजिक और आर्थिक संरचना बदल रही है। वहां डिजिटल भुगतान पहुंच गया है। बैंक पहुंच गए हैं। बेहतर संपर्क है, लेकिन मनरेगा में फर्जीवाड़ा हो रहा था। योजना की राशि। दुरुपयोग हो रहा था। यह भी कहा जा रहा है कि पंजाब जैसे राज्यों में इतनी कम दिहाड़ी पर मजदूर काम करने के लिए राजी नहीं। इसलिए वहां फर्जी आंकड़ों से हो रहे हैं। -25 में 1 से भुगतान।

विशेषज्ञ कहते हैं कि वर्ष 2024-25 में इस योजना में 194 करोड़ रुपए का घपला हुआ और केवल 7.6 फीसद ग्रामीण परिवार ही सौ दिन का रोजगार सके, लेकिन अब माहौल बदल जाएगा। फर्जीवाड़ा रुकेगा। अब यह चुस्त-दुरुस्त और नए कलेवर वाली योजना बनेगी, जिस पर बाकायदा काम होगा। श्रम बल को राष्ट्र निर्माण से जोड़ा जाएगा। यह यथार्थवादी योजना होगी। जब गांवों में फसल बिजाई और फसल कटाई का भरपूर आशिक योगदान मिलने की परिस्थितियां पैदा हो हैं, तो यह योजना समांतर रोजगार देना स्थगित कर देगी। बाद में लक्ष्यबद्ध तरीके से कार्यबल का इस्तेमाल किया जाएगा जो ग्रामीण जीवन का कायाकल्प कर देगा। दूसरी ओर विपक्ष के अपने तर्क हैं कि क्या यहाँ नया कलेवर मनरेगा को नहीं दिया जा सकता था? क्या उसे निश्चित उद्देश्यों के साथ लक्ष्यबद्ध नहीं किया जा सकता था। फिर जरूरी महंगाई दर देखते हुए कार्यबल के पारिश्रमिक में वृद्धि कर दी जाती। वृद्धि तो की नहीं, केवल काम 25 दिन बढ़ा दिए। राज्य सरकारें तो पहले ही अपने खाली खजाने का रोना रो रही हैं। उनका यह कहना है कि ग्रामीण विकास कोष से लेकर जीएसटी तक में से उन्हें उनका उचित भुगतान नहीं मिलता। मुआवजा नहीं मिलता। अब उन पर इस इस योजना के योगदान का 40 फीसद भार भी डाल दिया गया है। राज्य सरकारें तो अधिक आर्थिक सहायता की उम्मीद केंद्र से कर रही। थी. . लेकिन यहां एक एक और दायित्व उन पर आ गया कि अगर ग्रामीण विकास को तेजी देनी है, तो आगे बढ़ो और केंद्र सरकार के साथ योगदान करो। यह भी कहा गया कि पंजाब ही नहीं, बल्कि बंगाल इस कोष का भारी दुरुपयोग हुआ। इसलिए नया विधेयक लाया गया

सब कुछ, यह योजना क्या काम करेगी, इसे स्पष्ट किया गया है। यह मूलभूत बुनियादी ढांचा बनाएगी। आजीविका के लिए पूंजी का निर्माण I करेगी और प्रदूषण से निपटने का कार्य करेगी। यह निराशाजनक है कि इस पर गंभीर चर्चा नहीं हुई। इसका नाम बदलने पर ही बहस होती रही। शेक्सपियर ने कहा था कि नाम में क्या रखा है! मगर अब तो लगता है कि नाम रखा है। मगर अब तो लगता है कि नाम में ही रखा है। सच तो यही है है। सच तो यही है कि साम, दाम, दंड, भेद के साथ अपना नाम रौशन करने की यह जिद है। बड़ी-बड़ी घोषणाएं कर इसे उत्सव की तरह मनाया जाता है। सत्ता की यह नई संस्कृति बनती जा रही। जा रही है। ग्रामीण रोजगार संबंधी इस योजना को सार्थक बनाना है, तो उसके लिए आर्थिक आबंटन भी बढ़ना चाहिए। नई योजना में केंद्र सरकार ने आर्थिक आबंटन तो बढ़ाया नहीं, अलबत्ता राज्य सरकारों पर बोझ जरूर डाल दिया गया है। अब जिस प्रकार संवादहीनता गैर-भाजपा सरकारों और केंद्र के बीच चलती है, या जहां 'डबल इंजन सरकारें नहीं हैं, वहां इस नई योजना का भविष्य क्या होगा, यह विचारणीय है। क्या योजना का नाम बदलने भर से सार्थकता साबित होगी?

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

जब कक्षाएं असफल हो जाएं तो पहले स्टाफरूम को देखें

डॉ विजय गर्ग

जैसे-जैसे शैक्षणिक वर्ष समाप्त होता जा रहा है, देश भर के स्कूल अपनी पढ़ाई पूरी करने की एक परिचित अनुष्ठान में लग जाते हैं। वार्षिक रिपोर्ट तैयार की जाती है, उपलब्धियों को सूचीबद्ध किया जाता है, तस्वीरें चुनी जाती हैं और प्रगति की कहानियां सावधानी से संकलित की जाती हैं। वर्ष के अंत में आयोजित इस अभ्यास का उद्देश्य चिंतन और जवाबदेही को दर्शाना है, फिर भी जो चीज अक्सर गायब रहती है, वह है स्टाफरूम संस्कृति की गंभीर जांच, भले ही इसका शिक्षण गुणवत्ता, स्टाफ मनोबल और कक्षाओं की स्थिरता पर सीधा प्रभाव पड़ता हो।

स्टाफरूम को कभी-कभी एक अनौपचारिक स्थान के रूप में माना जाता है, लेकिन व्यवहार में यह स्कूल के भावनात्मक और पेशेवर केंद्र के रूप में कार्य करता है, जो दैनिक बातचीत को आकार देता है और शिक्षण के तरीके को प्रभावित करता है।

जब कक्षाओं में संघर्ष शुरू होता है, तो स्पष्टीकरण आमतौर पर संस्थान के बाहर ही दिया जाता है। कहा जाता है कि छात्र विचलित हो जाते हैं, माता-पिता को मांग करने वाला बताया जाता है, ध्यान अवधि कम करने के लिए प्रौद्योगिकी को दोषी ठहराया जाता है, तथा पाठ्यक्रमों को अत्यधिक बताया जाता है। जिसे शायद ही कभी स्वीकार किया जाता है, वह यह है कि शिक्षण कोई तटस्थ या यांत्रिक गतिविधि नहीं है: यह गहराई से भावनात्मक और संबंधपरक होती है, जो शिक्षकों के काम करने की परिस्थितियों से आकार लेती है। समय के साथ, स्टाफरूम एक अदृश्य पाठ्यक्रम बन जाता है, जो पदानुक्रम, सहनशक्ति और किसे महत्व दिया

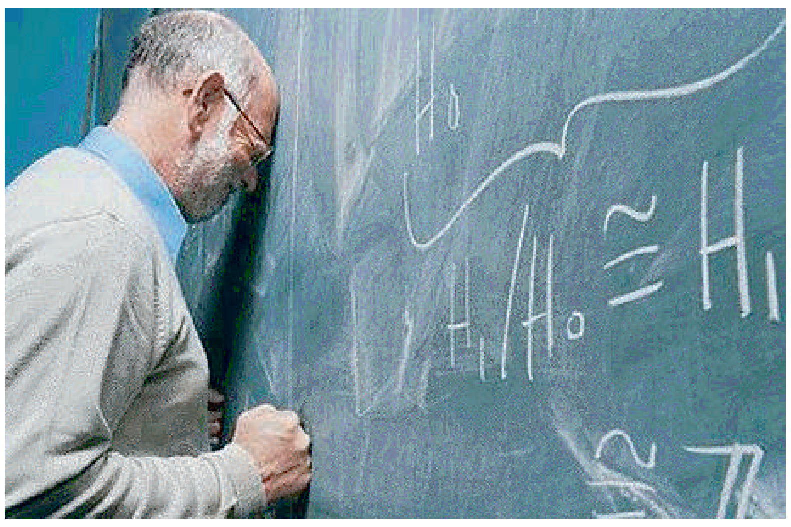

जाता है, इस बारे में अनकहे नियम पारित करता है। जब यह स्थान चयनात्मक मान्यता, प्रदर्शनकारी अनुपालन, दबी हुई असहमति और थकान की शांत स्वीकृति से चिह्नित होता है, तो समस्याएं अचानक प्रकट नहीं होतीं; वे एकत्रित हो जाती हैं। अंतिम सत्र तक, कई शिक्षक न केवल थके हुए होते हैं बल्कि भावनात्मक रूप से भी थक जाते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में शिक्षण सूक्ष्म तरीकों से बदल जाता है। धैर्य कम हो जाता है, प्रयोग जोखिम भरा लगता है, और पाठ संलग्नता के बजाय नियमित रूप से पूरा करने की ओर बढ़ जाते हैं। विद्यार्थियों को जवाब देने के बजाय पाठ्यक्रम पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। युवा लोग वयस्कों के बीच असंगति को शीघ्रता से महसूस करते हैं। उनकी प्रतिक्रिया उदासीनता, वापसी या निष्क्रिय प्रतिरोध हो सकती है। जिसे कक्षा विकार कहा जाता है, वह अक्सर पेशेवर वातावरण का परिणाम होता है, जिसने पहले ही शिक्षकों को सुरक्षा और उद्देश्य की भावना से कमजोर कर दिया है।

इन संस्कृतियों को बनाए रखने या चुनौती देने में नेतृत्व की निर्णायक भूमिका होती है। यह शायद ही कभी नाटकीय होता है। अक्सर यह असहमति के प्रति असहिष्णुता, अस्पष्ट निर्णय लेने, असमान जवाबदेही और मान्यता के रूप में प्रकट होता है जो पदार्थ की अपेक्षा दृश्यता को प्राथमिकता देता है। नियंत्रण को अधिकार के साथ भ्रमित किया जाता है, गति को प्रभावशीलता समझ लिया जाता है। बैठकें समझौते के अनुष्ठान बन जाती हैं, और शिक्षक सीखते हैं कि अनुपालन में निर्णय से कम जोखिम होता है। भय धीरे-धीरे संगठनात्मक सिद्धांत बन जाता है, भले ही यह विश्वास और पहल को कम कर देता है। इसके साथ ही सहकर्मी सहभागिता भी है: स्टाफ रूम ऐसे स्थानों में बदल सकते हैं जहां गपशप समर्थन की जगह लेती है, सामंजस्य के नाम पर औसत प्रदर्शन का बचाव किया जाता है, और नाजुक संतुलन को बिगाड़ने के लिए मजबूत काम से नाराजगी जताई जाती है।

यदि वर्ष के अंत में चिंतन करना महत्वपूर्ण है, तो उसे इन वास्तविकताओं पर ध्यान देना होगा। चेतावनी संकेतों की पहचान करने के लिए ईमानदारी और साहस की आवश्यकता होती है। सतही कल्याण कार्यक्रम या छात्र-केंद्रित पहल, शिक्षकों को थका देने वाले वातावरण की भरपाई नहीं कर सकती। जब स्टाफरूम की संस्कृति में सुधार होता है, तो अन्य परिवर्तन भी होते हैं। शिक्षकों को पुनः आत्मविश्वास मिलता है, सहयोग मजबूत होता है, तथा कक्षाएं अधिक स्थिर हो जाती हैं। अनुशासन प्रतिक्रियात्मक के बजाय निवारक रूप से बढ़ता है, नवाचार साझा महसूस होता है, और सीखने की दिशा पुनः प्राप्त होती है, क्योंकि शिक्षक अब आने वाले वर्ष में स्कूल समुदाय में विद्यार्थियों, शिक्षकों और परिवारों के लिए उत्तरजीविता मोड में काम नहीं कर रहे हैं।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार
प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद
एमएचआर मलोट पंजाब

स्कूल के बाहर खड़ी आधी आबादी : जब बेटियाँ बीच रास्ते लौट आती हैं

नववर्ष : आत्ममंथन, आत्मनिर्माण से विजयध्वज तक

नव वर्ष दस्तक देता है चुपचाप,
न कोई शोर, न कोई दावा,
बस पूछता है हमसे इतना—
क्या बदलेगा हम में वक़्त का नज़रिया?
बीते कल को दोष न दें,
वह शिक्षक था, शत्रु नहीं,
हर ठोकर ने गढ़ा हमें,
हर हार बनी नई कहानी।
नया साल कहता है—
तेज़ नहीं, मजबूती सह चलो,
ऊँचा नहीं, सार्थक बनो,
जीतो नहीं, योगदान दो।
जहाँ शब्द नहीं, आचरण बोले,
जहाँ सत्ता नहीं, निश्छल सेवाभाव हो,
जहाँ भीड़ नहीं, विवेक चले,
और हर निर्णय में मानवता की मिसाल हो।
नववर्ष यह भी सिखलाए—
सफलता केवल अर्जित में नहीं,
अर्पण करने में भी होती है,
अहंकार, लालच और भय को।
चलो ऐसे समाज की स्वतः नींव रखें—
जहाँ भूख शर्मिंदा हो जाए,
व न्याय प्रतीक्षा न करे - स्वतः मिले,
और सच को सुरक्षा मिल जाए।
नया वर्ष कोई परिकल्पना नहीं,
यह हमसे ही आकार लेता है,
हम जैसे सोचते, बोलते, करते हैं,
वही तो आने वाला कल स्वयं बनता है।

इस नववर्ष संकल्प लें—
कम बोलें, अधिक करें,
कम चाहें, अधिक दें,
और जो हैं, उसमें ही संतोष रखें।
नववर्ष आपके जीवन में समृद्धि, ऐश्वर्य, प्रेम, मानवता, स्पष्टता, साहस और विजय पताका की रोशनी लेकर आए

प्रिय दिसम्बर तुम जा रहे हो..

प्रिय दिसम्बर तुम जा रहे हो..
जाने से पहले, झोली भरकर
सौगातें देकर जाना..
रोशन हो सबका जीवन
अंधियारे लेकर जाना.,,,. !

ग़म न रहें जीवन में किसी के
सौभाग्य, उपहार में दे जाना
दुःख की रातें दूर रहें,
सुख के दिन बरसा जाना.,, !!

रिश्तों के मोती बिखरें न
धागा अटूट बांध जाना
स्वस्थ रहें, सुख चैन रहे,
आशीष दुआएं दे जाना..,, !

हम साल के अंतिम माह मे है
हमने महसूस किया कि हमें
उन सभी लोगों का शुक्रिया
करना है, जिन्होंने हमे मुस्कुराने
कि वजह दी है..
₹आप उनमे से एक हैं₹... !

विदा ले रहे साल के अंतिम दिन
हमारा नमन स्वीकार हों,
हमे क्षमा कीजिये अगर आपके
सम्मान मे जाने अनजाने मे हुई
हमारी भूल को, मन,वचन,कर्म

और वाणी से यदि ठेस पहुंची
हो तो हम ह्रदय से ₹क्षमा₹
चाहते है..,,, !!

आपका दिन शुभ हो

आत्मसम्मान की रोशनी

डॉ विजय गर्ग

जीवन के हर मोड़ पर व्यक्ति अनेक भूमिकाएं निभाता है- पुत्र, मित्र, शिक्षक, कर्मचारी, नागरिक। इन सभी पहचानों के बीच एक पहचान ऐसी है जो सबसे स्थायी है- स्वयं की। आत्मसम्मान उसी पहचान का मूल है। यह वह मौन शक्ति है जो व्यक्ति को परिस्थितियों के आगे झुकने नहीं देती, बल्कि उन्हें आकार देने की प्रेरणा देती है। आत्मसम्मान वह अदृश्य दीपक है, जो भीतर जलता है और अंधकार के समय दिशा दिखाता है। इसक अर्थ है स्वयं को स्वीकारना, अपनी क्षमताओं को पहचानना और जीवन के प्रति गरिमा का भाव बनाए रखना। यह अहंकार नहीं, बल्कि आत्म- स्वीकार की परिपक्वता है। अहंकार दूसरों को नीचा दिखाकर खुद को ऊंचा महसूस करता है, जबकि आत्मसम्मान स्वयं को गरिमा से ऊंचा उठाता है। यह उस व्यक्ति की पहचान है जो कहता है कि 'मैं जैसा हूं, वैसा ही पर्याप्त हूं।' कभी-कभी जीवन में ऐसे लोग मिलते हैं, जो बार - बार हमें चोट पहुंचाते हैं, अपमानित करते हैं, और फिर एक साधारण 'सारी' या 'माफी' कहकर अपनी जिम्मेदारी से बच जाते हैं। वे वही गलती दोहराते रहते हैं और उम्मीद करते हैं कि हम हमेशा की तरह माफ करते रहेंगे। पर हर 'सारी' रिश्ते को नहीं जोड़ती। क्षमा तभी अर्थपूर्ण होती है, जब सामने वाला अपनी गलती की गहराई सच में समझे। आत्मसम्मान का अर्थ कठोर होना नहीं है, बल्कि यह जानना है कि क्षमा वहीं तक उचित है, जहां हमारी गरिमा सुरक्षित रहे। जब किसी की गलती इतनी गहरी हो कि उसे भूलना खुद के साथ अन्याय लगे, तब दूरी बनाना गुस्सा नहीं, अपनी मानसिक शांति और स्वाभिमान की रक्षा करना होता है। दूसरों को माफ करना अच्छा है, पर खुद को भूल जाना कभी नहीं। इसी तरह, जब कार्यस्थल पर हमारी मेहनत को बार- बार नजरअंदाज किया जाता है, हमारी योग्यता को महत्व नहीं दिया जाता या हमारा योगदान किसी और के नाम कर दिया जाता है, तो चुप रहकर सब लंबे समय तक सहना विनम्रता नहीं, बल्कि अपने मूल्य को कम आंकना है। वहां अपनी काबिलियत के लिए शांत, पर दृढ़ आवाज उठाना ही सच का पक्ष और स्वाभिमान की रक्षा बन जाता है। रिश्तों में भी कई बार हम अनजाने में ऐसी आदत पाल लेते हैं कि हर बहस के बाद 'माफी' हम ही बोलते हैं, चाहे गलती सामने वाले की हो। हम सोचते हैं कि इससे रिश्ता बचेगा, पर धीरे-धीरे हम खुद को खोने लगते हैं। इस चक्र को रोकना, अपनी बात, अपने दर्द और सम्मान को तवज्जो देना दरअसल अपनी कद्र करना है। कुछ स्थितियों में गलत व्यवहार इतना गहरा होता है कि शब्द बेअसर हो जाते हैं। वहां चुप्पी ही सबसे मजबूत जवाब बन जाती है।

जब कोई व्यक्ति हमें सिर्फ तब याद करे, जब उसे हमारी जरूरत हो, काम निकालना हो, सहानुभूति चाहिए हो, या अकेलापन बांटना हो, पर हमारी जरूरत के समय वह हमेशा गायब मिले, तो ऐसे रिश्तों से दूरी बनाना भी स्वाभिमान का ही हिस्सा है। खुद को हर समय उपलब्ध न कराना, अपनी ऊर्जा और भावनाओं की रक्षा करना, और यह समझना कि हर कोई हमारे दिल तक पहुंचने का अधिकार नहीं रखता, यही आत्मसम्मान की असली शुरुआत है। सच तो यही है कि स्वाभिमान वहीं बचता है, जहां हम खुद को खोने से पहले रुकना और अपनी गरिमा को प्राथमिकता देना सीखते हैं।

आत्मसम्मान केवल दूसरों से व्यवहार का विषय नहीं, बल्कि स्वयं के प्रति दृष्टिकोण का विषय है। जब कोई व्यक्ति गलती करता है और बिना बहाने के 'हां, मुझसे भूल हुई' कहने की हिम्मत रखता है, वह आत्मसम्मानित होता है। जब कोई अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करता, चाहे सामने लाभ ही क्यों न हो, वह आत्मसम्मान जी रहा होता है। हम अक्सर सोचते हैं कि आत्मसम्मान केवल बड़े निर्णयों में दिखता है, पर सच्चाई यह है कि यह हमारी रोजमर्रा की आदतों में बसता है। जब कोई विद्यार्थी नकल से इनकार करता है, कोई महिला अपने अधिकार के लिए बोलती है, या कोई व्यक्ति अपमानित होकर भी शांत और संयमित रहता है, तो ये सभी आत्मसम्मान के जीवंत उदाहरण हैं। आज सोशल मीडिया और तुलना की दुनिया में लोग अपनी कीमत 'लाइक' और 'फालोअर्स' से मापने लगे हैं। पर आत्मसम्मान हमें सिखाता है कि पहचान भीतर से आती है, बाहर से नहीं। जो व्यक्ति खुद पर भरोसा रखता है, वही दूसरों को प्रेरणा दे सकता है।

आत्मसम्मान हमें मानसिक रूप से सशक्त बनाता है। यह चिंता, असुरक्षा और आत्मसंदेह से बचाता है। जब हम खुद को स्वीकारते हैं, तब हम दुनिया की अपेक्षाओं में उलझते नहीं, बल्कि अपने जीवन की दिशा खुद तय करते हैं। यह एक ऐसा मौन कवच है, जो हमें हर असमानता, उपेक्षा और अपमान से बचाता है। जीवन का सबसे बड़ा संतोष यह नहीं कि दुनिया हमें कितना सम्मान देती है, बल्कि यह है कि हम स्वयं को कितना सम्मान देते हैं। आत्मसम्मान कोई पदक नहीं है, जिसे कोई और दे। यह आत्म-निर्णय है कि चाहे परिस्थिति कैसी भी हो, मैं अपनी गरिमा से समझौता नहीं करूंगा। कभी-कभी जीवन हमें ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा करता है, जहां चुप रहना आसान होता है, पर स्वयं का सम्मान बचाना कठिन। ऐसे क्षणों में याद रखना चाहिए कि दुनिया की नजरों में हार जाना भी स्वीकार्य है, अगर अपने भीतर हम विजेता हैं। आत्मसम्मान वही रोशनी है जो हमें हर अंधेरे से पार ले जाती है। जब हम खुद का सम्मान करना सीख लेते हैं, तब हमें किसी और से स्वीकृति मांगने की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि जो अपने भीतर की गरिमा को पहचान लेता है, वही सच्चे अर्थों में जीवन जीता है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

2026 की दहलीज पर: भारत की आर्थिक कहानी और वैश्विक भविष्य की तस्वीर

-सुनील कुमार महला

साल 2025 से 2026 में कदम रखना केवल कैलेंडर का पन्ना पलटना भर नहीं है, बल्कि यह आत्ममूल्यांकन और नव-आरंभ का अवसर है। वास्तव में सच तो यह है कि यह समय उन सपनों और लक्ष्यों को फिर से साधने का है, जो बीते वर्ष परिस्थितियों, सीमाओं या संकोच के कारण अधूरे रह गए। साथ ही, यह आने वाली चुनौतियों को पहचानकर उनके लिए स्वयं को मानसिक, बौद्धिक और व्यवहारिक रूप से तैयार करने की प्रेरणा देता है। नया वर्ष हमें अतीत से सीख लेकर भविष्य की ओर आशा, संकल्प और सकारात्मक दृष्टि के साथ आगे बढ़ने का संदेश देता है। कोई भी साल पूरी तरह आदर्श नहीं होता, और 2025 भी इसका अपवाद नहीं रहा। हालांकि, उससे मिली सीख नए वर्ष में दिशा दिखा सकती है। बीता साल आर्थिक लिहाज़ से भारी उतार-चढ़ाव से भरा रहा ।लंबी तेजी के बाद शेयर बाजार में सुस्ती आई, वहीं अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प के दोबारा सत्ता में आने के साथ टैरिफ को लेकर सख्त रुख अपनाया गया। इन चुनौतियों के बीच भारत ने संतुलन और दृढ़ता का परिचय दिया। ट्रंप के दबाव के बावजूद रूस के साथ संबंधों को प्राथमिकता देकर भारत ने स्पष्ट किया कि उसकी विदेश नीति स्वतंत्र है। इसी अवधि में रूस, न्यूज़ीलैंड और ओमान के साथ महत्वपूर्ण समझौते भी हुए, जो भारत की कूटनीतिक सक्रियता और आत्मनिर्भर सोच को दर्शाते हैं।

जीएसटी सुधार और भारतीय अर्थव्यवस्था:-

जैसा कि पाठक जानते होंगे कि पिछले साल देश के भीतर जीएसटी 2.0 जैसे बड़े सुधार लागू किए गए, जिससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था को अच्छी खासी मजबूती मिली। इसका असर यह रहा कि दूसरी तिमाही में भारत की आर्थिक वृद्धि 8.2% रही ।साल के अंत तक भारत के जापान को पीछे छोड़कर लगभग 4.18 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के साथ दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान उसकी तेज़ और निरंतर आर्थिक वृद्धि पर आधारित है। कहना ग़लत नहीं होगा कि मजबूत घरेलू मांग, बढ़ता मध्यम वर्ग, सरकारी पूंजीगत खर्च, बुनियादी ढांचे में निवेश और जीएसटी जैसे संरचनात्मक सुधारों ने आर्थिक गतिविधियों को गति दी है। साथ ही, वैश्विक सप्लाई चेन में बदलाव और भारत को वैकल्पिक उत्पादन केंद्र के रूप में मिल रहा भरोसा निवेश और निर्यात को बढ़ावा दे रहा है। इसके विपरीत, जापान की अर्थव्यवस्था धीमी वृद्धि, घटती आबादी और सीमित घरेलू मांग से जूझ रही है। इन सभी कारणों के चलते भारत की जीडीपी तेजी से बढ़ रही है और मौजूदा अनुमानों के अनुसार वह वर्ष के अंत तक जापान को पीछे छोड़कर वैश्विक आर्थिक रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंच सकता है ।इसके अलावा, अन्य देशों के साथ हुई व्यापार संधियाँ और अमेरिका के साथ होने वाला समझौता पूरा होने से आगे चलकर अर्थव्यवस्था की रफ्तार और तेज होने की उम्मीद है। दूसरे शब्दों में कहें तो वैश्विक स्तर पर आर्थिक चुनौतियों और अनिश्चितताओं के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था के मजबूत बने रहने की संभावना है। इसका मुख्य कारण देश के भीतर मजबूत मांग, महंगाई का नियंत्रण में रहना और सरकार तथा भारतीय रिज़र्व बैंक की संतुलित आर्थिक नीतियां हैं।

अर्थव्यवस्था के मामले में 2030 तक जर्मनी को पछाड़ देगा भारत:-

अनुमान है कि भारत 2030 तक जर्मनी को भी पछाड़कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति बन जाएगा। सरकार ने भरोसा जताया है कि मजबूत आर्थिक नींव के साथ, भारत की जीडीपी 2030 तक 7.3 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगी ।आरबीआई की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के अनुसार, देश के अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक अच्छी स्थिति में हैं, उनके पास पर्याप्त पूंजी और नकदी भंडार है, खराब कर्ज में कमी आई है और उनका मुनाफा भी मजबूत बना हुआ है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि केंद्रीय बैंक के दबाव परीक्षण से यह भी स्पष्ट हुआ है कि प्रतिकूल हालात में भी बैंक संभावित नुकसान सहन कर सकते हैं और उनकी पूंजी नियामकीय न्यूनतम स्तर से काफी ऊपर रहेगी। इसके अलावा म्यूचुअल फंड, समाशोधन निगम, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां और बीमा क्षेत्र भी मजबूत स्थिति में हैं, जिनकी पूंजी पर्याप्त है और बहीखाते संतुलित हैं। हालांकि, निकट भविष्य में भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक व्यापार में अनिश्चितता से कुछ जोखिम बने हुए हैं, फिर भी कुल मिलाकर भारत की वित्तीय प्रणाली स्थिर और सुरक्षित बनी हुई है। हाल फिलहाल कहना चाहूंगा कि देश की अर्थव्यवस्था की तरह ही हमारे देश ने पिछले साल यानी कि वर्ष 2025 में सीमा से जुड़ी चुनौतियों का भी मजबूती से सामना किया। पाकिस्तान में मौजूद आतंकी ठिकानों के खिलाफ किया गया 'ऑपरेशन सिंदूर' इस बात का उदाहरण था कि भारत जरूरत पड़ने पर कड़ा कदम भी उठा सकता है और साथ ही संयम भी बरतता है। इससे भारत की सैन्य क्षमता और जिम्मेदार रवैये दोनों का संदेश गया। पड़ोसी देशों से रिश्तों की बात करें तो चीन के साथ लंबे समय से चला आ रहा तनाव कुछ हद तक कम हुआ। करीब पाँच साल बाद दोनों देशों के बीच सीधी उड़ानें शुरू हुईं और प्रधानमंत्री मोदी शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक में शामिल होने चीन गए। वहीं बांग्लादेश के हालात चिंता का कारण बने रहे। उम्मीद है कि फरवरी में होने वाले चुनावों के बाद वहां बनने वाली नई सरकार भारत के साथ अच्छे और स्थिर रिश्तों की अहमियत को समझेगी। साल भर देश में असहिष्णुता और धर्म-जाति के आधार पर भेदभाव से जुड़ी कई घटनाएँ सामने आईं। साल के अंत में क्रिसमस के दौरान कुछ जगहों पर हुई तोड़फोड़ की तस्वीरों ने देश की छवि को नुकसान पहुँचाया। इसके साथ ही भारी बारिश, भूस्खलन, वायु प्रदूषण और अरावली से जुड़े मामलों के कारण पर्यावरण पूरे साल एक बड़ा मुद्दा बना रहा। एसआइआर को लेकर भी राजनीतिक विवाद देखने को मिला। राहत की बात यह रही कि इन सभी विषयों पर जनता पहले से ज्यादा जागरूक और सजग नजर आई।

इस साल भारत से बड़ी उम्मीदें जुड़ी हैं:-

अंत में यही कहूंगा कि नये साल में यानी कि वर्ष 2026 में भारत से कई बड़ी उम्मीदें जुड़ी हैं। सबसे बड़ी आशा यह है कि देश तेज़ और स्थिर आर्थिक वृद्धि के साथ दुनिया की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में अपनी स्थिति और मजबूत करेगा, जिससे रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और आम लोगों की आय में सुधार आएगा। बुनियादी ढांचे, मैन्युफैक्चरिंग, स्टार्टअप और डिजिटल अर्थव्यवस्था में निरंतर निवेश से विकास को गति मिलने की उम्मीद है। साथ ही, शिक्षा, कौशल विकास और तकनीक-विशेषकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) के क्षेत्र में भारत वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान और मजबूत कर सकता है। सामाजिक मोर्चे पर उम्मीद है कि समावेशी विकास, सामाजिक सौहार्द और सुशासन पर ध्यान बढ़ेगा, जबकि पर्यावरण संरक्षण और जलवायु संतुलन के प्रयास भी मजबूत होंगे। कुल मिलाकर, 2026 से अपेक्षा है कि भारत विकास और स्थिरता के बीच संतुलन बनाते हुए नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में ठोस कदम बढ़ाएगा।

सुनील महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

टाटा स्टील का स्ट्रेट बार मिल 31 दिसंबर को अचानक हुआ बंद , 700 लोग हुए बेरोजगार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर , झारखंड के सरायकेला जिला अन्तर्गत महत्वपूर्ण क्षेत्र आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र स्थित टाटा स्टील की इकाई स्ट्रेट बार मिल (पूर्व में उषा मार्टिन) बुधवार 31 दिसंबर से अचानक बंद कर दी गयी। इसके साथ ही करीब 700 कामगार बेरोजगार हो गए। इसकी खबर मिलते ही कामगार आक्रोशित हो गये और मिल गेट पर प्रदर्शन किया।

बुधवार सुबह ड्यूटी पर कामगार पहुंचे तो कंपनी बंद की सूचना से भड़क गये। गेट पर हंगामा के साथ प्रदर्शन शुरू कर दिया। कर्मचारियों ने प्रबंधन पर बिना पूर्व सूचना के बंद करने का आरोप लगाया। बताया कि वर्ष 1999 से कई कामगार यहां कार्यरत हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन लगा दिया। अब इस उम्र में उन्हें कहां नौकरी मिलेगी। कंपनी बंद करने से पूर्व उनका बकाया वेतन समेत अन्य सुविधाओं का भी भुगतान नहीं किया गया है। टाटा स्टील की ओर से जब उषा मार्टिन के इस प्लांट का अधिग्रहण किया था, तब यह भरोसा दिया गया था कि प्लांट का संचालन जारी रहेगा। साथ ही किसी की नौकरी नहीं जाएगी। वर्तमान में यह प्लांट वेंडर कंपनी आरके एंटरप्राइजेज के माध्यम से संचालित हो रही थी, जिसके तहत 165 श्रमिक कार्यरत थे। वहीं, अन्य ठेकेदारों के अधीन कार्यरत कामगारों को मिलाकर करीब 6 सौ से अधिक बेरोजगार हो गए हैं।

सफदरजंग अस्पताल में सीएसआर सहयोग से डायग्नोस्टिक सेवाओं को मिली मजबूती, सीटी स्कैन

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। वीएमएमसी एवं सफदरजंग अस्पताल में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) के अंतर्गत नई सीटी स्कैन मशीन का उद्घाटन किया गया। यह पहल पीटीसी इंडिया लिमिटेड, पीटीसी फाउंडेशन तथा डॉक्टर्स फॉर यू (DFY) के सहयोग से साकार हुई है, जिससे अस्पताल की डायग्नोस्टिक क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और रोगियों को समय पर सटीक जांच सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी ।इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मनोज कुमार झावर, चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, पीटीसी इंडिया लिमिटेड, सुश्री रश्मि शर्मा, चेयरपर्सन, सीएसआर समिति, पीटीसी इंडिया लिमिटेड तथा श्री पंकज गोयल, एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर, पीटीसी इंडिया लिमिटेड उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. संदीप बंसल, निदेशक, वीएमएमसी एवं सफदरजंग अस्पताल ने की, जो एक प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ होने के साथ-साथ अपने करुणामय एवं रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण के लिए व्यापक रूप से सम्मानित हैं।

सीटी स्कैन मशीन का उद्घाटन डॉ. रजत जैन, अध्यक्ष, डॉक्टर्स फॉर यू (DFY) — जो इस परियोजना की क्रियान्वयन एजेंसी है — तथा डॉ. चारु बंबा, चिकित्सा अधीक्षक की उपस्थिति में संपन्न हुआ ।इस अवसर पर संबोधित करते हुए डॉ. संदीप बंसल ने पीटीसी इंडिया लिमिटेड का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि नई सीटी स्कैन मशीन के स्थापित होने से अस्पताल की जांच क्षमता में अत्यधिक वृद्धि होगी। इससे न केवल जांच की प्रतीक्षा अवधि कम होगी, बल्कि हजारों रोगियों को समय पर एवं सटीक निदान उपलब्ध हो सकेगा, जो उपचार की गुणवत्ता में भी सुधार लाएगा ।डॉ. मनोज कुमार झावर, चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, पीटीसी इंडिया लिमिटेड ने अपने संबोधन में कहा कि पीटीसी अपने सीएसआर कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में स्थायी और सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवा पीटीसी के प्रमुख सीएसआर फोकस क्षेत्रों में से एक है और सफदरजंग अस्पताल में सीटी स्कैन मशीन की स्थापना आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को उन्नत जांच सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है ।वहीं सुश्री रश्मि शर्मा, चेयरपर्सन, सीएसआर समिति, पीटीसी इंडिया लिमिटेड ने कहा कि सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को सुदृढ़ करने में कॉर्पोरेट क्षेत्र की जिम्मेदार भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि जब सीएसआर पहलें संस्थागत आवश्यकताओं के अनुरूप होती हैं, तो उनका सीधा लाभ रोगियों के बेहतर उपचार और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के रूप में सामने आता है ।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. रजत जैन, अध्यक्ष, डॉक्टर्स फॉर यू (DFY) ने सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों, कॉर्पोरेट साझेदारों एवं क्रियान्वयन एजेंसियों के बीच मजबूत समन्वय की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार का सहयोग न केवल परियोजनाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन को सुनिश्चित करता है, बल्कि सरकारी अस्पतालों को बड़े पैमाने पर गुणवत्तापूर्ण डायग्नोस्टिक सेवाएं प्रदान करने में भी सक्षम बनाता है ।इस उद्घाटन समारोह में सहयोगी संस्थाओं की सीएसआर समितियों के सदस्य, डॉ. अमिता मलिक, विभागाध्यक्ष (रेडियोलॉजी), चिकित्सक, फैकल्टी सदस्य, नर्सिंग स्टाफ तथा छात्र-छात्राएं भी उपस्थित रहे ।वीएमएमसी एवं सफदरजंग अस्पताल ने इस अवसर पर सीएसआर सहयोग के प्रभावी एवं पारदर्शी उपयोग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि भविष्य में भी रोगी-केंद्रित सेवाओं के विस्तार और उन्नत चिकित्सा जांच सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए ऐसे प्रयास लगातार जारी रहेंगे।

हजारीबाग सेंट्रल जेल से बिजली सिक्यूरिटी फेंसिंग तोड़कर आधी रात तीन कैदी हुए फरार

लोकनायक जयप्रकाश नारायण पर नामित जेल ।जहां वे अंग्रेजों को चकमा देकर दीपावली के रात हुए थे फरार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड का उच्च सुरक्षा दायरे का जेल माना जाने वाला ऐतिहासिक जेल लोकनायक जयप्रकाश नारायण केंद्रीय कारा से तीन कैदी सुरक्षा घेरा को तोड़ते हुए फरार हो गए हैं. यह तीनों कैदी धनबाद के हैं. जिसकी पुष्टि जेल अधीक्षक चंद्रशेखर सुमन ने की है.

इस घटना ने पूरे प्रशासनिक तंत्र को शकते में ला दिया है. यह जेल हाई सिक्योरिटी के लिए जाना जाता है. जहां खूंखार कैदी और नक्सलियों को रखा जाता है. इसके साथ ही कई विचाराधीन हाई प्रोफाइल कैदी भी जेल में बंद हैं. ऐसे में तीन कैदी के लापता होने के बाद सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल उठना शुरू हो चुका है. हजारीबाग जेल की सुरक्षा व्यवस्था को हाल के दिनों में और भी अधिक दुरुस्त किया गया था. सुरक्षा के नजर जेल आईजी ने पिछले दिनों कार्रवाई करते हुए 12 सुरक्षा कर्मियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया था. उसके बाद से ही सुरक्षा व्यवस्था दुरुस्त कर दी गई थी. लेकिन इस घटना ने फिर एक बार हजारीबाग जेल प्रशासन पर सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सवालिया निशान खड़ा हो गया है . तीनों फरार कैदी चार नंबर गुमटी से एक रस्सी के सहारे फरार हुए हैं. जेल के पीछे साइड से एक रस्सी भी देखा गया, जो टेंट हाउस में उपयोग किए जाने वाला कपड़े के टुकड़े से बनाया गया. घटनास्थल को देखकर यह बताया जा सकता है कि रस्सी पहले अंदर से बाहर फेंका गया है. वह रस्सी किसी सामान से हाई सिक्योरिटी जेल के चारों तरफ बिजली के तार से फंसा है. जहां से यह तीनों कैदी फरार हुए हैं. प्राप्त सूचना के अनुसार यह घटना रात के करीब 1 बजे से 2 बजे के बीच की है. शौचालय जाने के बहाने तीनों कैदी बाहर निकले और शौचालय के खिड़की से फरार हुए हैं. जेल के बाहरी हिस्से में भी तार का फेंसिंग है, जो टूटा हुआ है. हालांकि लोगों का कहना है फेंसिंग पहले से ही टूटा हुआ था. जेल की सुरक्षा के मद्देनजर इसके चार दीवारी पर बिजली का तार भी लगाया गया है. जहां 24 घंटे बिजली प्रवाहित होती है. इसके बावजूद बिजली तार की सुरक्षा घेरे को तोड़कर कैदी फरार हो गए. घटना के बाद जेल के चारों तरफ सुरक्षा बढ़ा दी गई है. किसी को भी मुलाकात करने की इजाजत नहीं दी जा रही है. जितने भी कैदी हैं, उन्हें वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया है. जिले के वरीय पदाधिकारी जिसमें एसडीओ, एसडीपीओ समेत वरीय अधिकारी जेल के अंदर ही जांच कर रहे हैं. मामले में जेल अधीक्षक चंद्रशेखर सुमन ने फोन पर ईटीवी को जानकारी दी है कि जेल से 3 कैदी फरार हुए हैं. लेकिन अभी इसके बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं दी जा सकती है कि घटना कैसे घटी है. मामले की तफ्तीश की जा रही

नए CS के लिए CM का 15-पॉइंट टास्क: 'नाकाबिलों को हटाओ, खाली पद भरो'

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : CM के नए चीफ सेक्रेटरी को 15-पॉइंट के निर्देश। नए साल में एडमिनिस्ट्रेशन को और ज़्यादा रिस्पॉन्सिव बनाने के लिए CM का नया तरीका। मुख्यमंत्री ने एडमिनिस्ट्रेशन को और ज़्यादा एजाइल और पीपल-ओरिएंटेड बनाने के लिए राज्य की नई चीफ सेक्रेटरी अनु गर्ग को पंद्रह-पॉइंट का निर्देश जारी किया है ।मुख्यमंत्री ने अगले 2 साल के लिए ओडिशा विज़न डॉक्यूमेंट में सरकार द्वारा बताए गए लक्ष्यों को पाने के लिए प्राथमिकता के आधार पर काम करने का निर्देश दिया है। सरकार ने 2036 तक US$ 500 बिलियन की इकॉनमी के साथ एक समृद्ध ओडिशा बनाने और राज्य को 'मिक्स्ड इकॉनमी' की ओर ले जाकर इसे टॉप 5 विकसित राज्यों में लाने का लक्ष्य रखा है। इसलिए, मुख्यमंत्री के तौर पर, उन्होंने नॉलेज-ड्रिवन इंडस्ट्रीज़ और सर्विस सेक्टर्स को ज़्यादा महत्व देकर इसके तेज़ी से विकास के लिए काम करने का निर्देश दिया है। सभी डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर्स को राज्य में इंडस्ट्रियलाइज़ेशन के तेज़ी से विकास के लिए अलग-अलग प्रोसेस को फास्ट-ट्रैक करने के निर्देशों पर ज़ोर दिया गया है ।इसी तरह, उन्होंने अगले 2 साल के अंदर सभी खाली सरकारी पोस्ट भरने का आदेश दिया है। उन्होंने काबिल और ट्रेंड अधिकारियों की सर्विस पर ज़ोर दिया है और भ्रष्ट, नाकाबिल और गैर-ज़िम्मेदार अधिकारियों और कर्मचारियों की पहचान करके उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने को कहा है। उन्होंने कंपलसरी सर्विस बंद करने का भी आदेश दिया है। यह मुख्यमंत्री के एडमिनिस्ट्रेशन को ट्रांसपेरेंट, कुशल और मोबाइल बनाने के पक्के इरादे को दिखाता है।

इसके साथ ही, अलग-अलग प्रोजेक्ट्स को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए रेगुलर रिव्यू और इवैल्यूएशन पर ज़ोर दिया गया है। रिसर्च और इवैल्यूएशन पर ज़ोर देने के लिए, नवकृष्ण चौधरी डेवलपमेंट रिसर्च सेंटर को सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस के तौर पर डेवलप करने का आदेश दिया गया है।

मुख्यमंत्री ने सभी तरह के सरकारी काम, खासकर नोटिस, नोटिफिकेशन और चिट्ठियों का लेन-देन सिर्फ़ ओड़िया भाषा में करने का आदेश दिया है। सेक्रेटेरिएट से लेकर ब्लॉक लेवल तक के सभी अधिकारियों को इस निर्देश का सख्ती से पालन करने को कहा गया है। खिलाफ़कारों से इस बारे में माफ़ी मांगने को भी कहा गया है। इसलिए, मुख्यमंत्री ने ओड़िया को ऑफिशियल भाषा के तौर पर इस्तेमाल करने के कमिटमेंट का भी मैसेज दिया है।

नूतन वर्ष: नए सपने, नई उम्मीदें

डॉ सत्यवान सौरभ

नया वर्ष केवल कैलेंडर की तारीख बदलने का नाम नहीं है। यह हमारे जीवन में एक ठहराव की तरह आता है—जहाँ हम पीछे मुड़कर देखते हैं, वर्तमान को समझते हैं और भविष्य की दिशा तय करते हैं। हर नया साल अपने साथ नई उम्मीदें, नए संकल्प और नई संभावनाएँ लेकर आता है। यह वह क्षण होता है जब मनुष्य अपने भीतर झांकता है और स्वयं से यह प्रश्न करता है कि बीता वर्ष कैसा रहा, मैंने क्या सीखा, क्या खोया और आगे मुझे क्या बनना है।

आज की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी में हम अक्सर भागते रहते हैं—लक्ष्यों के पीछे, जिम्मेदारियों के बोझ तले और अपेक्षाओं की दौड़ में। ऐसे में नया वर्ष हमें यह अवसर देता है कि हम थोड़ी देर रुकें, सांस लें और अपने जीवन की दिशा पर पुनर्विचार करें। यह आत्ममंथन ही नए सपनों की नींव बनता है।

बीता वर्ष: सीखों की पाठशाला

हर बीता वर्ष हमारे लिए एक शिक्षक की तरह होता है। उसमें सुख भी होते हैं, दुःख भी; सफलता भी मिलती है और असफलताएँ भी। लेकिन असली प्रश्न यह नहीं कि हमारे साथ क्या हुआ, बल्कि यह है कि हमने उससे क्या सीखा। कई बार हम बीते साल को केवल घटनाओं के आधार पर आंकते हैं—किसे खोया, क्या पाया—पर सीखों को नजरअंदाज कर देते हैं।

बीते वर्ष ने हमें धैर्य सिखाया होगा, किसी ने हमें आत्मनिर्भर बनाया होगा, तो किसी ने रिश्तों की अहमियत समझाई होगी। कुछ अनुभवों ने हमें मजबूत बनाया, तो कुछ ने हमें विनम्र। नया वर्ष तभी सार्थक बनता है जब हम इन सीखों को साथ लेकर आगे बढ़ते हैं, न कि केवल पुराने दुखों या शिकायतों को ढोते हुए।

नए सपने: दिखावे नहीं, दिशा हो

नए साल की शुरुआत अक्सर बड़े-बड़े संकल्पों से होती है—यह करूंगा, वह बनूंगा, इतना हासिल करूंगा। लेकिन कुछ ही महीनों में ये संकल्प धुंधले पड़ने लगते हैं। इसका कारण यह है कि हमारे सपने कई बार दूसरों की अपेक्षाओं से प्रभावित होते हैं, न कि हमारे वास्तविक मन से निकले होते हैं।

सपने वही सार्थक होते हैं जो हमारे मूल्यों से जुड़े हों। जो हमें भीतर से उत्साहित करें, न कि थका दें। नया वर्ष हमें यह सोचने का मौका देता है कि हमारे सपने दिखावे के हैं या दिशा देने वाले। क्या हम वही बनना चाहते हैं जो समाज चाहता है, या वह जो हमारी आत्मा चाहती है?

सपने छोटे भी हो सकते हैं—जैसे खुद को स्वस्थ रखना, परिवार को समय देना, या खुद के लिए थोड़ा वक्त निकालना। हर सपना बड़ा मंच या बड़ी पहचान नहीं मांगता; कई बार सबसे बड़ा सपना होता है—संतुलित और शांत जीवन।

नई उम्मीदें: बाहरी नहीं, आंतरिक

उम्मीदें अक्सर हम दूसरों से जोड़ लेते हैं—कि कोई बदले, परिस्थितियाँ सुधरें, सिस्टम ठीक हो जाए। लेकिन नया वर्ष हमें यह याद दिलाता है कि सबसे मजबूत उम्मीद वह होती है जो अपने भीतर से जन्म लेती है। जब हमें खुद पर भरोसा होता है, तब हालात चाहे जैसे हों, हम रास्ता निकाल लेते हैं।

आंतरिक उम्मीद का अर्थ है—यह विश्वास कि मैं बदल सकता/सकती हूँ, मैं सीख सकता/सकती हूँ और मैं बेहतर बन सकता/सकती हूँ। यह उम्मीद हमें निराशा से बाहर निकालती है और असफलता के बाद भी खड़ा होने की ताकत देती है।

खुद से रिश्ता: नए साल की सबसे बड़ी शुरुआत

नए साल में सबसे पहला रिश्ता जिसे सुधारने की ज़रूरत होती है, वह है—खुद से रिश्ता। हम दूसरों की गलतियों को तो तुरंत देख लेते हैं, लेकिन अपनी कमियों से अक्सर बचते रहते हैं। नया वर्ष आत्मस्वीकृति और आत्मसुधार का संतुलन सिखाता है।

खुद से ईमानदारी का मतलब यह नहीं कि हम खुद को कठघरे में खड़ा करें, बल्कि यह कि हम अपनी सच्चाई को स्वीकार करें। अपनी सीमाओं को समझें, अपनी क्षमताओं को पहचानें और खुद के प्रति करुणा रखें। जब हम खुद को समझने लगते हैं, तब दुनिया से हमारी अपेक्षाएँ भी यथार्थवादी हो जाती हैं।

रिश्ते: मात्रा नहीं, गुणवत्ता

नया वर्ष रिश्तों पर भी पुनर्विचार का समय होता है। आज के समय में संपर्क बहुत हैं, लेकिन संबंध कम। सोशल मीडिया ने हमें जोड़ा तो है, लेकिन दिलों की दूरी भी बढ़ाई है। नया साल यह सोचने का अवसर देता है कि हमारे जीवन में कौन से रिश्ते हमें ऊर्जा देते हैं और कौन से हमें थका देते हैं।

हर रिश्ते को निभाना ज़रूरी नहीं, लेकिन हर रिश्ते को ईमानदारी से निभाना ज़रूरी है। कुछ रिश्तों को समय देना होता है, कुछ को सीमाएँ और कुछ को सम्मानपूर्वक विदा। नए साल में रिश्तों की सफाई भी उतनी ही ज़रूरी है जितनी अलमारी की।

सफलता की नई परिभाषा

समाज ने सफलता की एक तय परिभाषा बना दी है—पैसा, पद और प्रतिष्ठा। लेकिन नया वर्ष हमें यह सोचने का अवसर देता है कि क्या यही सफलता है? क्या वह व्यक्ति असफल है जो शांत है, संतुष्ट है और अपने मूल्यों पर खड़ा है?

सफलता की नई परिभाषा में मानसिक शांति, आत्मसम्मान, स्वास्थ्य और संतुलन भी शामिल होना चाहिए। अगर हम दिन के अंत में चैन से सो पाते हैं, खुद पर गर्व महसूस करते हैं और किसी के साथ अन्याय नहीं करते—तो यह भी सफलता ही है।

असफलता से दोस्ती

नए सपनों के साथ नई असफलताएँ भी आती हैं। लेकिन असफलता से डरना नहीं, उससे सीखना ज़रूरी है। हर असफलता हमें यह बताती है कि कौन सा रास्ता हमारे लिए नहीं है। नया वर्ष हमें यह साहस देता है कि हम फिर से कोशिश करें, बिना खुद को कमतर समझे।

जो लोग असफलता से डरते हैं, वे अक्सर प्रयास ही नहीं करते। और जो प्रयास नहीं करते, वे कभी आगे नहीं बढ़ते। नया साल जोखिम लेने और सीखते हुए आगे बढ़ने का नाम है।

समाज और जिम्मेदारी

नया वर्ष केवल व्यक्तिगत बदलाव का समय नहीं, सामाजिक जिम्मेदारी का भी समय है। हम जिस समाज में रहते हैं, उसकी समस्याओं से हम अछूते नहीं रह सकते। छोटे-छोटे प्रयास—जैसे ईमानदारी, संवेदनशीलता, पर्यावरण के प्रति जागरूकता—समाज को बेहतर बना सकते हैं।

अगर हर व्यक्ति नए साल में केवल एक अच्छी आदत अपना ले—तो बदलाव अपने आप दिखने लगेगा।

निष्कर्ष: नया साल, नया दृष्टिकोण

नया वर्ष कोई जादुई छड़ी नहीं है जो सब कुछ बदल दे। बदलाव तब आता है जब हम अपने सोचने का तरीका बदलते हैं। नए सपने, नई उम्मीदें तभी सार्थक हैं जब वे हमें बेहतर इंसान बनाएं—ज्यादा संवेदनशील, ज्यादा जिम्मेदार और ज्यादा सच्चा।

आइए, इस नए वर्ष में हम यह संकल्प लें कि हम परिपूर्ण नहीं, लेकिन ईमानदार बनने की कोशिश करेंगे। हम सबसे आगे नहीं, लेकिन सही दिशा में चलने का प्रयास करेंगे। और जब साल के अंत में पीछे मुड़कर देखें, तो गर्व से कह सकें—हाँ, मैंने खुद के साथ ईमानदारी की।

यही है नूतन वर्ष का असली अर्थ—नए सपने, नई उम्मीदें और एक बेहतर 'मैं'।

ओडिशा का समुद्री इतिहास 2026 में एक नया रूप लेगा

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पुराने कलिंग में साध्वियों ने समुद्री व्यापार कैसे किया ? वे नावों में सवार होकर विशाल समुद्र में कैसे गए ? ओडिशा की धरती से साध्वियों ने बिना किसी मशीनी सिस्टम की मदद के दक्षिण-पूर्व एशिया के अलग-अलग देशों में व्यापार करने के लिए कैसे यात्रा की ? अगर आज की पीढ़ी, जिसने किताबों में ये सारी कहानियाँ पढ़ी हैं, को अतीत के इस नज़ारे को अपनी आँखों से फिर से देखने का मौका मिले, तो यह एक सपने के सच होने जैसा लगेगा ।ऐसा ही होगा। 'INSV Kaundinya' कार्तिक पूर्णिमा 2026 पर एक बार फिर ओडिशा की समुद्री परंपरा के इतिहास को हमारे सामने लाएगा।

सिलाई के हुनर से पारंपरिक स्टाइल में बना यह जहाज 'INSV Kaundinya' कार्तिक पूर्णिमा पर ओडिशा से बाली जाएगा, ऐसा जहाज बनाने वाले और प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार समिति के सदस्य संजीव सान्याल ने कहा। संजीव के एक देश भर में मशहूर पॉडकास्ट पर यह राय देने के बाद ओडिशा में इस पर चर्चा शुरू हो गई है। हाल ही में, इस जहाज ने गुजरात के पोरबंदर से ओमान के मस्कट तक एक ऐतिहासिक यात्रा शुरू की। यह यात्रा भारतीय नाविकों द्वारा लिए गए सदियों पुराने समुद्री रास्ते को दोहराएगी, जिससे भारत और ओमान के बीच एक ऐतिहासिक समुद्री संबंध बनेगा। ओमान से लौटने के बाद, दूसरा प्लान ओडिशा के लिए है। INSV Kaundinya ओडिशा से दक्षिण-पूर्व एशिया के बाली जाएगा। ओडिशा का समुद्री इतिहास बहुत शानदार है। इस समुद्री व्यापार के सबूत 350 BC से मिलते हैं। यह बात तो सब जानते हैं कि कलिंग के व्यापारी (साध्वियां) बंगाल की खाड़ी से होते हुए बाली, जावा, सुमात्रा, कंबोडिया, वियतनाम, श्रीलंका, चीन और अफ्रीका जैसे साउथ-ईस्ट एशिया के देशों के साथ व्यापार करते थे।

यह सारी जानकारी ओडिशा के समुद्री इतिहास के पन्नों से मिलती है, लेकिन इसी सुनहरे इतिहास को याद रखने के लिए ऐतिहासिक बाली यात्रा का आयोजन किया जाता है। ओडिशा के साथ साउथ-ईस्ट एशिया समेत कई देशों के समुद्री रिश्तों को लेकर कई प्रोग्राम किए गए हैं। 2024 की बाली यात्रा में अलग-अलग देशों के राजदूतों को बाली यात्रा में बुलाया गया, जबकि 2025 की बाली यात्रा में इंडोनेशिया को 'नेशन पार्टनर' का सम्मान दिया गया। अब प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार समिति के सदस्य संजीव सान्याल की इस बात ने खूब चर्चा बटोरी है।

सीरवी समाज कोरेमुला बडेर मुख्य द्वार के शीला पुजा अर्चना किया इस अवसर पर उपस्थित संरक्षक प्रभुराम परिहारिया, अध्यक्ष कालुराम काग, सह सचिव राजाराम गेहलोत कोषाध्यक्ष पोकरराम पंवार, सलाहकार पुनाराम हाम्बड़ ,हुक्माराम सेपटा , पुजारी पोकरराम काग व अन्य।

निर्वाचन आयोग द्वारा जारी सूचना : आपकी एक छोटी सी गलती कही आपको वोट के अधिकार से वंचित ना कर दे, जाने

पिंकी कुंडू

दिल्ली में SIR (Special Intensive Revision) विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया प्रारंभ हो रही है, जिसमें सभी मतदाताओं को अपना परिगणना फॉर्म भरकर बीएलओ को जमा करवाना होगा। फॉर्म जमा नहीं करवाने पर आपका नाम मतदाता सूची में नहीं आएगा।

उद्देश्य

1. मृत व्यक्तियों के नाम हटाना।
2. स्थायी रूप से निवास बदलने वालों का नाम हटाना।
3. किसी मतदाता का दो स्थानों पर पंजीकरण हो उसे निरस्त करना।
4. फर्जी मतदाताओं का नाम हटाना।
5. शुद्ध, स्वच्छ व पारदर्शी मतदाता सूचियों का निर्माण करना।

पुनः पंजीकरण प्रक्रिया

* अपना फॉर्म भरने से पूर्व आप अपने 2 नवीनतम रंगीन पासपोर्ट साइज फ़ोटो जरूर खिंचवा लें, जिसका बैकग्राउंड सफेद होना चाहिए।

* आप सभी को BLO द्वारा परिगणना फॉर्म उपलब्ध करवाया जाएगा, जिसे निश्चित समय में भरकर BLO को जमा करवाना होगा।

फॉर्म के साथ आपको 11 दस्तावेजों की सूची में से कोई भी दस्तावेज अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा।

दस्तावेजों की सूची

1. केंद्र सरकार/ राज्य सरकार / PSU के नियमित कर्मचारियों को जारी पहचान पत्र या पेंशन कार्ड
2. भारत में 01/07/1987 से पूर्व सरकार/बैंक/LIC/डाकघर/PSU या स्थानीय प्राधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र/ दस्तावेज/ पहचान पत्र
3. जन्म प्रमाण पत्र
4. पासपोर्ट
5. मूल निवास प्रमाण पत्र
6. 10 वीं बोर्ड की अंक तालिका मय प्रमाण पत्र
7. वन अधिकार प्रमाण पत्र
8. अन्य पिछड़ा वर्ग/ अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति या अन्य जाति प्रमाण पत्र
9. राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (जहां लागू हो)
10. राज्य/ स्थानीय अधिकारियों द्वारा तैयार किया गया परिवार रजिस्टर
11. सरकार द्वारा जारी कोई भूमि/ गृह आवंटन प्रमाण पत्र

आप इन 11 दस्तावेजों में से अपने कम से कम कोई भी 2 दस्तावेज तैयार रखें, ताकि परिगणना फॉर्म भरने में आपको कोई परेशानी नहीं हो।

मतदाताओं के पंजीकरण की 3 श्रेणियां बनाई गई है, आप उनके अनुसार भी अपने दस्तावेज तैयार कर सकते हैं।

1. यदि आपका जन्म 01/07/1987 से पूर्व हुआ है, तो आपको स्वयं का कोई भी एक दस्तावेज जमा करवाना होगा, साथ में कोई अतिरिक्त दस्तावेज है तो भी काम आएगा, लेकिन कोई एक दस्तावेज होना अनिवार्य है।

2. यदि आपका जन्म 01/07/1987 से 02/12/2004 के मध्य हुआ है तो आपको एक दस्तावेज स्वयं का तथा एक दस्तावेज माता-पिता का होना अनिवार्य है। यानी कम से कम 2 दस्तावेज होने चाहिए।

3. यदि आपका जन्म 02/12/2004 के बाद हुआ है तो आपके पास 3 दस्तावेज होने चाहिए। एक स्वयं का, एक माता का व एक पिता का। कम से कम तीन दस्तावेज।

SIR प्रक्रिया शुरू होने वाली है, आप अपने परिवार व आसपास के लोगों तक इसकी सूचना पहुंचाएं। उन्हें भी दस्तावेज तैयार करने के लिए प्रेरित करें, जिससे पारदर्शी मतदाता सूचियों का निर्माण हो सके।

आपका वोट आपका अधिकार है। जागरूक मतदाता बनें व परिगणना फॉर्म भरकर अपने BLO को जमा करवाएं।

निर्वाचन आयोग

सावधान! नए साल की शुभ कामनाओं में छिपा है साइबर फ्रॉड

पिंकी कुंडू

"Happy New Year" के नाम से आने वाली
* APK / अनजान फाइल
* लिंक या अटैचमेंट
* वीडियो/फोटो फाइल
बिल्कुल न खोले

ऐसी फाइल खोलते ही
मोबाइल हैक हो सकता है
बैंक अकाउंट खाली हो सकता है
निजी फोटो, वीडियो और दस्तावेज
चोरी हो सकते हैं

सुरक्षा के लिए करें
* अनजान नंबर से आई फाइल न खोलें
* पहले भेजने वाले से कॉल कर पुष्टि करें
* मोबाइल में ऐप्स केवल Play Store से डाउनलोड करें

साइबर ठगी की स्थिति में तुरंत
1930 पर कॉल करें

इस संदेश को जरूर शेयर करें, ताकि आपके परिवार और दोस्त सुरक्षित रहें

परिवर्तन का एक दशक: भाजपा-नेतृत्व वाली सरकार के तहत भारत की बहु-क्षेत्रीय प्रगति

संगिनी घोष विशेष संवाददाता
परिवहन विशेष

2014 से भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकारों के कार्यकाल में भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखा है, जिसमें बुनियादी ढांचे के विकास, आर्थिक सुधार, सामाजिक कल्याण और वैश्विक स्तर पर सशक्त उपस्थिति पर विशेष जोर रहा है। राष्ट्रीय राजमार्गों, एक्सप्रेसवे, रेलवे, हवाई अड्डों और शहरी अवसंरचना में बड़े पैमाने पर निवेश से संपर्क व्यवस्था में सुधार हुआ है और आर्थिक गतिविधियों को गति मिली है। क्षेत्रीय हवाई संपर्क जैसी पहलों ने छोटे शहरों को भी राष्ट्रीय विमानन नेटवर्क से जोड़ा है। वहीं, सेमी-हाई-स्पीड ट्रेनों की शुरुआत सहित रेलवे आधुनिकीकरण का उद्देश्य यात्रियों की सुविधा और दक्षता बढ़ाना रहा है।

आर्थिक क्षेत्र में एकीकृत अप्रत्यक्ष कर प्रणाली जैसे संरचनात्मक सुधारों ने भारत की कर व्यवस्था को नया स्वरूप दिया है, जबकि डिजिटल पहलों ने वित्तीय समावेशन और पारदर्शिता को तेज किया है। डिजिटल भुगतान और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के तेजी से विस्तार ने कल्याणकारी योजनाओं के वितरण को अधिक प्रभावी बनाया है और लीकेज को कम किया है। इसके साथ ही, स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूती मिली है, जिससे भारत नवाचार और उद्यमिता के वैश्विक केंद्रों में शामिल हुआ है, जिसे कारोबार सुगमता बढ़ाने वाली नीतियों का समर्थन मिला है।

सामाजिक कल्याण सरकार की प्राथमिकताओं में प्रमुख रहा है, जिसमें आवास, स्वास्थ्य, स्वच्छता, स्वच्छ ईंधन और वंचित वर्गों के लिए वित्तीय पहुंच से जुड़ी योजनाएं शामिल हैं। व्यापक स्वास्थ्य बीमा कवरेज ने आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए चिकित्सा सुविधाओं तक पहुंच बढ़ाई है, जबकि आवास और स्वच्छता कार्यक्रमों ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में जीवन स्तर सुधारने का प्रयास किया है। विशेष रूप से स्वच्छ ऊर्जा और वित्तीय समावेशन से जुड़ी महिला-केंद्रित पहलों को सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में कदम के रूप में देखा गया है।

रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में स्वदेशी निर्माण और आधुनिकीकरण पर जोर दिया गया है, जिससे आयात पर निर्भरता कम करने और रणनीतिक आत्मनिर्भरता बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है। सैन्य नेतृत्व संरचना में सुधार और मजबूत सुरक्षा नीति को तैयारियों को सुदृढ़ करने के उपाय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी, विशेषकर अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की उपलब्धियों ने वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित किया है और अनुसंधान व नवाचार में देश की बढ़ती क्षमताओं को दर्शाया है।

वैश्विक मंच पर भारत की कूटनीतिक सक्रियता में वृद्धि हुई है, बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भागीदारी के साथ अंतरराष्ट्रीय निर्णय-प्रक्रियाओं में देश की आवाज और मजबूत हुई है। सांस्कृतिक और विरासत से जुड़ी पहलों के साथ-साथ योग के वैश्विक प्रचार को भारत की सॉफ्ट पावर का हिस्सा बताया गया है। वहीं, नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार और देशव्यापी स्वच्छता अभियानों जैसे पर्यावरण और सतत विकास से जुड़े प्रयासों को दीर्घकालिक विकास की दिशा में कदम माना गया है।

कुल मिलाकर, ये सभी विकासात्मक पहलें सुधार, बुनियादी ढांचा आधारित विकास, कल्याणकारी योजनाओं की प्रभावी पहुंच और वैश्विक सहभागिता पर केंद्रित शासन दृष्टिकोण को दर्शाती हैं, जिसने पिछले एक दशक में भारत की विकास यात्रा को आकार दिया है।

खरसावां गोलीकांड के शहिदों को श्रद्धांजलि देने मुख्यमंत्री हेमंत पहुंचे शहीद पार्क

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

खरसावां, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने गुरुवार को सरायकेला-खरसावां जिले के खरसावां गोलीकांड के शहीदों को श्रद्धांजलि खरसावां में दी। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा-अब सरकार ने यह निर्णय लिया है कि खरसावां के शहीदों के परिवार को हम ढूंढ़ेंगे और उन्हें सम्मान देंगे। उसके लिए एक कमेटी गठित करने का निर्णय लिया गया है।

1948 के गोलीकांड में शहीद हुए लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा, सांसद जोबा मांझी सहित कई विधायक और राजनीतिक-सामाजिक संगठनों के दिग्गज नेता पहुंचे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा-आज के खरसावां के इस शहीद स्थल पर इतना बड़ा जनसैलाब और यहां पर लोगों का जमावड़ा, किसी से छुपा नहीं है। आज का यह दिन खरसावां के शहीदों को नमन करने के लिए कोल्हान ही नहीं राज्य के कोने-कोने से लोग यहां आते हैं।

हमारे आदिवासी समुदाय के वीरों ने यहां के आदिवासियों, मूलवासियों के हक अधिकार। यहां के जल, जंगल, जमीन के लिए अपने को कुर्बान कर दिया। यह स्थल इतिहास के पन्नों का वह हिस्सा है, जो ना ही भूलने वाला है और ना कभी खत्म होने वाला है।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने खरसावां गोलीकांड के शहीदों को श्रद्धांजलि दी। - Dainik Bhaskarमुख्यमंत्री ने कहा-आज हमलोग हर साल की भांति इस साल भी शहीदों को याद करने के लिए, उनको नमन करने के लिए, उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए हैं। चूंकि अबुआ सरकार है और आप लोगों को याद होगा कि हमने किस प्रकार गुवा के शहीदों के परिवार को ढूंढ़ा था।

अब सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि खरसावां के शहीदों के परिवार को हम ढूंढ़ेंगे। इससे जुड़े आंदोलन से जुड़े लोगों को भी ढूंढ़ेंगे। उसके लिए एक कमेटी गठित करने का निर्णय लिया गया है। जो बहुत जल्द अपना काम शुरू करेगी।

उन्होंने कहा-जैसे गुवा शहीद के परिवार को सम्मान देने का काम किया है। उसी प्रकार खरसावां गोलीकांड के शहीदों के परिवार को सम्मान देंगे।

शहीद दिवस कार्यक्रम के दौरान विधि-व्यवस्था और सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए जगह-जगह जवानों की तैनाती की गई है। शहीद दिवस को ले कर खरसावां चांदनी चौक से सरायकेला, आमदा, कुचाई और हुड़गंदा मार्गों में विभिन्न जगह लोगों का जमावड़ा रहा।

टाटा स्टील का स्ट्रेट बार मिल 31 दिसंबर को अचानक हुआ बंद, 700 लोग हुए बेरोजगार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, झारखंड के सरायकेला जिला अन्तर्गत महत्वपूर्ण क्षेत्र आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र स्थित टाटा स्टील की इकाई स्ट्रेट बार मिल (पूर्व में उषा मार्टिन) बुधवार 31 दिसंबर से अचानक बंद कर दी गयी। इसके साथ ही करीब 700 कामगार बेरोजगार हो गए। इसकी खबर मिलते ही कामगार आक्रोशित हो गये और मिल गेट पर प्रदर्शन किया।

बुधवार सुबह ड्यूटी पर कामगार पहुंचे तो कंपनी बंद की सूचना से भड़क गये। गेट पर हंगामा के साथ प्रदर्शन शुरू कर दिया। कर्मचारियों ने प्रबंधन पर बिना पूर्व सूचना के बंद करने का आरोप लगाया। बताया कि वर्ष 1999 से कई कामगार यहां कार्यरत हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन लगा दिया। अब इस उम्र में उन्हें कहां नौकरी मिलेगी। कंपनी बंद करने से पूर्व उनका बकाया वेतन समेत अन्य सुविधाओं का भी भुगतान नहीं किया गया है। टाटा स्टील की ओर से जब उषा मार्टिन के इस प्लांट का अधिग्रहण किया था, तब यह भरोसा दिया गया था कि प्लांट का संचालन जारी रहेगा। साथ ही किसी की नौकरी नहीं जाएगी। वर्तमान में यह प्लांट वेंडर कंपनी आरके एंटरप्राइजेज के माध्यम से संचालित हो रही थी, जिसके तहत 165 श्रमिक कार्यरत थे। वहीं, अन्य ठेकेदारों के अधीन कार्यरत कामगारों को मिलाकर करीब 6 सौ से अधिक बेरोजगार हो गए हैं। कामगारों ने बताया कि उनकी तीन प्रमुख मांगों में कंपनी को चलाने, बंद करने की स्थिति में अन्य कंपनियों में वर्तमान पे स्केल में समायोजित करने एवं 31 दिसंबर तक के सभी कामगारों का वेतन, ग्रेच्युटी एवं अन्य सुविधाओं का अविलंब भुगतान शामिल हैं।

इस संदर्भ में वेंडर कंपनी आरके एंटरप्राइजेज के प्रोपराइटर राजेश कुमार ने बताया कि पिछले एक साल से उनके अधीन कार्यरत कामगारों की बकाया राशि का भुगतान करने को तैयार हैं। लेकिन, पूर्व से कार्यरत कामगारों की बकाया राशि के भुगतान के लिए वे जिम्मेवार नहीं हैं। उन्होंने कहा कि कंपनी बंद होने के साथ ही उनका वेंडर का कॉन्ट्रैक्ट भी 31 दिसंबर को समाप्त हो गया।

नया साल हमें सिखाता है कि हर अंत नई शुरुआत है

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़

हरदा मध्य प्रदेश

नया साल आया और पुराना साल चला गया। कैलेंडर के पन्ने पलटे, लेकिन मन में एक सवाल कौंध उठा, जीवन का एक वर्ष फ़िर कम हो गया। क्या यही ज़िंदगी है कि हम बस मृत्यु की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं? यह विचार उदासीनता की छाया डाल सकता है, पर सकारात्मक सोच इसे एक नई रोशनी में बदल देती है। जीवन को मृत्यु की ओर यात्रा मानने के बजाय, इसे एक अनमोल उपहार की तरह देखें, हर पल नई संभावनाओं से भरा। प्रायः लोग अपने जीवन के पलों को नकारात्मक चश्मे से देखते हैं। कल की चिंता, भविष्य का डर, और गुज़रे लम्हों का पछतावा, ये सब मिलकर वर्तमान को फ़ीका कर देते हैं। लेकिन सकारात्मक सोच कहती है: "जीवन एक यात्रा है, मंज़िल नहीं।" उम्र चाहे २० की हो या 80 की, हर पल को जीना सीखें। आयुर्वेद की दृष्टि से भी, जीवन को 'जीवन' ही कहते हैं—जियो, बढ़ो, फलो। योग और नेचुरोपैथी हमें सिखाते हैं कि श्वास के साथ हर क्षण को स्वीकार करो। हर पल को वर्तमान में जियो, अतीत को सबक मानो, भविष्य का सपना देखो। आज के पल को पूर्णता से अनुभव करो। सुबह की पहली चाय, शाम की सैर, या प्रियजनों की हंसी, इन्हें संजो लो। कृतज्ञता का अभ्यास करो, रोज़ तीन चीजें लिखो जिनके लिए आभारी हो। यह छोटी आदत दिमाग़ को सकारात्मक तरंगों से भर देगी। जैसे, नया साल हमें याद दिलाता है कि हम अभी भी सांस ले रहे हैं, यह अपने आप में आशीर्वाद है। छोटे लक्ष्य बनाओ, उम्र कोई बाधा नहीं। 50 में भी नई कविता लिखो, योग सीखो, या परिवार के साथ घूम आओ। हर दिन एक नया 'शेर' रचो, जैसे उर्दू शायरी में जीवन को 'बहार' कहते हैं। सकारात्मक संगति चुनो, ऐसे लोग साथ रखो जो प्रेरित करें। भारतीय संस्कृति में 'सत्संग' की परंपरा यही सिखाती है, सकारात्मक ऊर्जा जीवन को जीवंत बनाती है। स्वास्थ्य पर ध्यान दीजिए, आयुर्वेद बताता है, संतुलित आहार, प्राणायाम और ध्यान से हर उम्र में ताज़गी बनी रहती है। मृत्यु को डरना छोड़ो, जीवन को गले लगाओ। जीवन की यह यात्रा सीधी रेखा नहीं, बल्कि घुमावदार राह है। नया साल हमें सिखाता है कि हर अंत नई शुरुआत है। सकारात्मक सोच अपनाओ तो एक वर्ष कम होना नहीं, बल्कि अनुभवों का खज़ाना बढ़ना लगेगा। हर पल को जीयो, जैसे कोई ग़ज़ल, हर मिसरा नया रंग भरे। उम्र बस अंक है, ज़िंदादिली असली मापदंड। तो आज से संकल्प लो, हर सांस को उत्सव बनाओ। नया साल मुबारक नहीं, हर दिन नया साल हो!

2 जनवरी उनके शहादत दिवस पर विशेष

प्रतिरोध की अमर आवाज़ सफदर हाशमी

शम्भू शरण सत्यार्थी

सफदर हाशमी का जीवन भारतीय रंगमंच के इतिहास में एक ऐसे उज्ज्वल अध्याय की तरह दर्ज है, जहाँ कला, विचार और संघर्ष एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि एक-दूसरे में घुले हुए दिखाई देते हैं। वे केवल एक रंगकर्मी नहीं थे, बल्कि जनसंघर्षों की चेतना से लैस ऐसे सांस्कृतिक योद्धा थे, जिन्होंने यह सिद्ध किया कि जब कला जनता के पक्ष में खड़ी होती है, तो वह सत्ता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन जाती है। उनका जीवन और उनकी शहादत—दोनों इस बात के प्रमाण हैं कि सच्ची कला हमेशा असुविधाजनक होती है, क्योंकि वह प्रश्न पूछती है, चुप्पी तोड़ती है और अन्याय को बेनकाब करती है।

12 अप्रैल 1954 को दिल्ली में जन्मे सफदर हाशमी को विरासत में साहित्य और प्रगतिशील चेतना मिली। उनके पिता हामिद हाशमी उर्दू के जाने-माने प्रगतिशील कवि थे और माँ शमीम हाशमी शिक्षिका थीं। घर का वातावरण साहित्यिक बहसों, सामाजिक सरोकारों और वैचारिक प्रतिबद्धता से भरा हुआ था। यही कारण था कि सफदर बचपन से ही केवल अपने आसपास की दुनिया को देखने वाले नहीं, बल्कि उसे समझने और बदलने की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति बने। दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से अंग्रेज़ी साहित्य की पढ़ाई के दौरान उनके भीतर रंगमंच के प्रति गहरी रुचि विकसित हुई, लेकिन यह रुचि पारंपरिक मंचीय अभिनय तक सीमित नहीं थी।

सफदर ने बहुत जल्दी यह महसूस कर लिया कि सभागारों में सिमटा रंगमंच आम जनता से कटता जा रहा है। उन्हें लगने लगा कि जिस समाज में असमानता, शोषण और दमन रोज़मर्रा की सच्चाई हैं, वहाँ कला अगर केवल मनोरंजन बनकर रह जाए, तो वह अपनी सामाजिक भूमिका से विमुख हो जाती है। इसी सोच ने उन्हें जननाट्य की ओर मोड़ा। भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से जुड़ने के बाद 1973 में वे जन नाट्य मंच—जनम—का सक्रिय हिस्सा बने और धीरे-धीरे उसकी वैचारिक दिशा के प्रमुख सूत्रधार बन गए।

जनम के माध्यम से सफदर हाशमी ने नुक्कड़ नाटक को एक सशक्त राजनीतिक और सांस्कृतिक माध्यम के रूप में स्थापित किया। सड़क, चौराहा, फैक्ट्री गेट और बस्ती—यही उनका रंगमंच था। बिना मंच, बिना रोशनी और बिना परदे के खेले जाने वाले उनके नाटक सीधे जनता से संवाद करते थे। उनके लिए दर्शक कोई निष्क्रिय उपभोक्ता नहीं था, बल्कि एक सक्रिय सहभागी था, जो नाटक के सवालों से टकराता था। 'मशीन', 'हल्ला बोल', 'औरत', 'दस्तक', 'जनता पागल हो गई है' जैसे नाटकों ने श्रमिक शोषण, पूँजीवादी लूट, साम्प्रदायिकता, पितृसत्ता और राज्य के दमनकारी चरित्र को बेहद सहज लेकिन तीखे अंदाज़ में उजागर किया।

सफदर के नाटकों की भाषा सरल थी, पर उसमें गहरी वैचारिक धार थी। वे न तो जटिल प्रतीकों के बोझ तले दबे होते थे और न ही उपदेशात्मक। उनके व्यंग्य में करुणा थी और उनके प्रतिरोध में मानवीय संवेदना। वे मानते थे कि जननाट्य का उद्देश्य केवल गुस्सा पैदा करना नहीं, बल्कि चेतना जगाना है। यही कारण है कि उनके नाटक आज भी उतने ही प्रासंगिक लगते हैं, जितने अपने समय में थे।

सफदर हाशमी केवल रंगमंच तक सीमित नहीं थे। वे एक गंभीर लेखक और चिंतक भी थे। कला और संस्कृति पर उनके लेख यह स्पष्ट करते हैं कि वे तटस्थता को एक प्रकार की कायरता मानते थे। उनका प्रसिद्ध कथन—"संस्कृति कभी तटस्थ नहीं होती"—आज भी सांस्कृतिक विमर्श का केंद्रीय सूत्र है। उनके लिए कलाकार का दायित्व था कि वह अन्याय के विरुद्ध स्पष्ट पक्ष ले, चाहे उसकी कीमत कुछ भी हो। उनका निजी जीवन भी इसी सादगी और प्रतिबद्धता का विस्तार था। उनकी पत्नी मोलॉयश्री हाशमी स्वयं एक संवेदनशील लेखिका और सांस्कृतिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने सफदर के बाद जनम और सांस्कृतिक प्रतिरोध की परंपरा को आगे बढ़ाया।

1 जनवरी 1989 भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का एक दुखद और निर्णायक दिन बन गया। ग़ाज़ियाबाद के साहिबाबाद में जनम के कलाकार 'हल्ला बोल' नाटक का मंचन कर रहे थे, जो स्थानीय राजनीतिक हिंसा और गुंडागर्दी के खिलाफ था। सत्ता-संरक्षित अपराधियों ने नाटक के दौरान हमला कर दिया। सफदर हाशमी को लोहे की रॉड से बेरहमी से पीटा गया और अगले दिन, 2 जनवरी 1989 को, 34 वर्ष की उम्र में उन्होंने दम तोड़ दिया। यह केवल एक कलाकार की हत्या नहीं थी, बल्कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर सीधा हमला था।

सफदर की शहादत ने पूरे देश को झकझोर दिया। कलाकारों, लेखकों और आम नागरिकों ने महसूस किया कि अगर सड़क पर सच बोलने वाला कलाकार सुरक्षित नहीं है, तो लोकतंत्र भी सुरक्षित नहीं है। उनकी हत्या के ठीक बाद उसी जगह जनम ने फिर नाटक खेला—यह घोषणा करते हुए कि विचारों को लाठियों से कुचला नहीं जा सकता। यही क्षण सफदर हाशमी को एक व्यक्ति से प्रतीक में बदल देता है—प्रतिरोध के प्रतीक में।

आज सफदर हाशमी हमारे बीच शारीरिक रूप से नहीं हैं, लेकिन उनकी उपस्थिति हर उस नुक्कड़ पर महसूस की जा सकती है, जहाँ कोई कलाकार सत्ता से सवाल करता है। उनके नाम पर गठित 'सफदर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट' (सहमत) सांप्रदायिकता, फासीवादी प्रवृत्तियों और सांस्कृतिक दमन के विरुद्ध लगातार सक्रिय है। सफदर की विरासत यह सिखाती है कि कला का असली मूल्य उसकी बाज़ारू सफलता में नहीं, बल्कि उसकी जनपक्षधरता में है।

ऐसे समय में, जब कला को लाभ, टीआरपी और प्रायोजकों की शर्तों में बाँधने की कोशिशें तेज़ हैं, सफदर हाशमी और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। उनका जीवन हमें याद दिलाता है कि कलाकार होना केवल प्रतिभा का प्रश्न नहीं, बल्कि साहस, ईमानदारी और प्रतिबद्धता का प्रश्न भी है। सफदर हाशमी का जीवन भले ही छोटा रहा हो, लेकिन उसका प्रभाव असाधारण रूप से व्यापक है। वे आज भी हमें पुकारते हैं—अन्याय के विरुद्ध, चुप्पी के विरुद्ध और डर के विरुद्ध—

हल्ला बोल।

--शम्भूशरण सत्यार्थी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023